आजाद भारत में क्रिकेट

आजाद भारत में क्रिकेट

सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-3076-4

पहला संस्करण : 2000 *(शक 1921)*

AZAD BHARAT MEIN CRICKET *(Hindi)*

रु. 45.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

अनुक्रमणिका

अपनी बात

स्वतंत्रता के स्वर्णजयंती समारोह के परिप्रेक्ष्य में पिछले पचास वर्षों में भारतीय क्रिकेट की उपलब्धियों पर पुस्तक लिखने की बात सहज रूप में सामने आयी। मूर्धन्य पत्रकार प्रभाष जोशी अन्य विषयों पर लिखने के साथ-साथ क्रिकेट पर भी अधिकारपूर्वक लिखते हैं। वह क्रिकेट के दीवाने हैं। बरसों से मुझे उनसे क्रिकेट पर बतियाने का सौभाग्य मिलता रहा है। उन्हीं का सुझाव था कि मैं इस विषय पर लिखूं व जल्दी लिखूं। इस बारे में उनसे बातचीत भी की व उन्हीं की प्रेरणा से इसे लिख डाला। अतः उनके प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

मेरे जिन मित्रों, सहयोगियों एवं शुभचिंतकों ने भी मेरा उत्साह बढ़ाया है, उन सबके प्रति भी आभारी हूं। आभारी हूं अपने परिवार का जिसके सहयोग के बिना यह काम मुमकिन नहीं था। पांडुलिपि टाइप करने के लिए मुकेश सिसोदिया के प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करता हूं। श्री सुरेश कौशिक ने पुस्तक के लिए चित्र जुटाये हैं। मैं उनका भी आभारी हूं।

अंत में नेशनल बुक ट्रस्ट का भी आभारी हूं कि उसने इस पुस्तक के प्रकाशन में दिलचस्पी ली।

निर्धारित सीमा में पचास वर्षों के क्रिकेट इतिहास को पेश करना कठिन भी है और चुनौतीपूर्ण भी। क्रिकेट मैचों की बढ़ती संख्या के मद्देनजर मैंने अपनी ओर से इस दिशा में प्रयास किया है। सुविधा की दृष्टि से मैंने अपना क्षेत्र उन्हीं घटनाओं तक सीमित रखा है जिनमें भारतीय टीम का प्रदर्शन उत्साहवर्धक रहा है। आशा है आपको मेरा यह प्रयास रुचिकर लगेगा।

–सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी

पुस्तक के बारे में

'आजाद भारत में क्रिकेट' में मैंने विगत पचास वर्षों में भारतीय क्रिकेट का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इन पचास वर्षों के दौरान भारतीय क्रिकेट ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। सफलता की सीढ़ियां भी चढ़ी हैं और असफलता का दौर भी देखा है। पचास वर्ष के लंबे इतिहास की सिलसिलेवार झांकी प्रस्तुत करना कठिन एवं चुनौतीपूर्ण है। इतनी लंबी यात्रा की सभी घटनाओं की समीक्षात्मक विवेचना को पुस्तक का रूप दे पाना कितना जोखिम भरा है मुझे इसका पूरा अहसास है। अतः मैंने आजादी के बाद की उन्हीं प्रमुख घटनाओं की चर्चा की है जिनमें भारत की उपलब्धियां महत्वपूर्ण रही हैं।

क्रिकेट में भारत को सभी सफलताएं आजाद होने के बाद ही मिलीं। 1947-48 में भारत की पहली टीम आस्ट्रेलिया गयी। यह आजादी के दो माह बाद की घटना है। इसी दौरे में पहली बार किसी भारतीय बल्लेबाज ने एक टेस्ट की दोनों पारियों में शतक बनाया। यह सम्मान एडिलेड टेस्ट में विजय हजारे को प्राप्त हुआ। आजादी के बाद ही भारत को पहली टेस्ट विजय प्राप्त हुई। यह बात 1951-52 की है। जब चेन्नई (पहले मद्रास) टेस्ट में भारत ने इंग्लैंड को एक पारी व 8 रनों से हराकर अपनी पहली टेस्ट विजय दर्ज की तथा टेस्ट श्रृंखला 1-1 से बराबर कर ली। पहली टेस्ट विजय दिलाने वाली भारतीय टीम के कप्तान भी विजय हजारे ही थे। भारत ने पहली टेस्ट श्रृंखला भी इंग्लैंड को ही हराकर जीती जब 1961-62 में उसने घरेलू श्रृंखला में इंग्लैंड को 2-0 से हराया। भारत को यह गौरव नॅरी कंट्रेक्टर के नेतृत्व में प्राप्त हुआ। आस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत ने पहला टेस्ट 1959-60 की घरेलू श्रृंखला में जीता मगर उसके खिलाफ पहली श्रृंखला जीतने के लिए भारत को लंबा इंतजार करना पड़ा। यह अवसर आया 1979 में जब उसने घरेलू श्रृंखला में आस्ट्रेलिया को 4-0 से हराकर करारी शिकस्त दी। इस विजयी भारतीय टीम के कप्तान थे सुनील गावसकर। भारत ने वेस्टइंडीज के खिलाफ अपना पहला टेस्ट व पहली टेस्ट श्रृंखला

1971 में जीती। इस बार उसने घर के बाहर जाकर विदेशी भूमि पर न सिर्फ ताकतवर वेस्टइंडीज को पहली बार टेस्ट मैच में हराया बल्कि उसके खिलाफ शृंखला जीतने का भी सौभाग्य प्राप्त किया। इस बार भारत के कप्तान थे अजीत वाडेकर। यही वह शृंखला थी जिससे सुनील गावसकर का उद्भव हुआ। पाकिस्तान के खिलाफ शुरुआती वर्ष 1952 में ही भारत को टेस्ट व शृंखला दोनों ही जीतने का अवसर मिल गया। यह सफलता उसे घरेलू शृंखला में लाला अमरनाथ की कप्तानी में मिली। पाकिस्तान की ही तरह न्यूजीलैंड के खिलाफ भी भारत को दोनों देशों के बीच खेली गयी पहली ही शृंखला में टेस्ट व शृंखला दोनों जीतने का गौरव मिला। यह बात 1955-56 की है जब ऑफ स्पिनर गुलाम अहमद व ऑलराउंडर पॉली उमरीगर के नेतृत्व में भारत ने न्यूजीलैंड को घरेलू शृंखला में 2-0 से पराजित किया था। श्रीलंका के खिलाफ भारत को पहली बार टेस्ट व शृंखला जीतने का अवसर दोनों देशों के बीच टेस्ट क्रिकेट संबंध स्थापित होने के 4 साल बाद मिल पाया। 1986-87 में भारत ने श्रीलंका के खिलाफ पहला टेस्ट भी जीता व पहली टेस्ट शृंखला भी। यह सफलता उसे कपिल देव के नेतृत्व में घरेलू शृंखला में मिली। जिम्बाब्वे के खिलाफ भारत ने पहला टेस्ट व पहली शृंखला 1992-93 में अजहरुद्दीन के नेतृत्व में जीती और दक्षिण अफ़्रीका के खिलाफ पहला टेस्ट व पहली टेस्ट शृंखला भारत ने 1996-97 में जीती जब उसने घरेलू शृंखला में अजहरुद्दीन के नेतृत्व में उसे 2-1 से हराया।

इंग्लैंड में 1983 का प्रूडेंशियल विश्व कप जीतने के बाद अपनी मेजबानी में खेले गये 1987 के विश्व कप व 1996 के विश्व कप में भारत सेमीफाइनल दौर तक पहुंचा। इस तरह एक दिवसीय मैचों के साथ ही क्रिकेट की विश्व कप स्पर्धा में भी भारत का प्रदर्शन इंग्लैंड से बेहतर ही रहा है।

ये वे प्रमुख सफलताएं हैं जो भारत ने एक टीम के रूप में अर्जित कीं। अब उन महत्वपूर्ण निजी उपलब्धियों पर भी नजर डालें जो भारतीय खिलाड़ियों ने प्राप्त कीं और जिनकी बदौलत उन्होंने खुद तो अंतर्राष्ट्रीय ख्याति पाई ही, अपने देश का भी नाम रोशन किया। सुनील गावसकर 1986 में दस हजार टेस्ट रन बनाने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज बने और अपने 16 वर्ष लंबे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट जीवन में 125 टेस्ट की 214 पारियों में से 16 में नाबाद रहते हुए उन्होंने 10122 रन बनाये जिनमें 34 शतक शामिल थे। आस्ट्रेलिया के एलन बॉर्डर उनसे अधिक रन बनाकर दुनिया में सबसे ज्यादा टेस्ट रन बनाने वाले बल्लेबाज तो जरूर बन गये लेकिन 34 टेस्ट शतकों का विश्व कीर्तिमान अभी भी गावसकर के ही नाम पर है। रिचर्ड हेडली की सर्वाधिक 431 टेस्ट विकेट के कीर्तिमान को 1994 में तोड़कर कपिल देव विश्व के सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गये। उनके नाम 434 टेस्ट विकेट हैं। कपिल के नाम पर ऑलराउंडर के रूप में भी विश्व कीर्तिमान है। वह दुनिया के अकेले ऐसे ऑलराउंडर खिलाड़ी हैं जो पांच हजार से अधिक टेस्ट

रन भी बना चुके हैं और चार सौ से ज्यादा टेस्ट विकेट भी ले चुके हैं। लगता नहीं है कि कोई ऑलराउंडर उनके इस कीर्तिमान को बहुत जल्दी तोड़ पायेगा। भारत के मध्यक्रम के विश्वसनीय बल्लेबाज दिलीप वेंगसरकर के नाम पर भी एक अभूतपूर्व उपलब्धि है। क्रिकेट के मक्का कहे जाने वाले लॉर्ड्स के ऐतिहासिक मैदान पर 1979, 1982 व 1986 में तीन टेस्ट शतक लगाने का दुर्लभ गौरव उन्हें प्राप्त है। यह सम्मान न तो महान ब्रेडमेन को ही प्राप्त हो पाया है और न ही बॉर्डर या गावसकर को। 1952 में लॉर्ड्स टेस्ट में भारत के ऑलराउंडर वीनू मनकड़ का श्रेष्ठ प्रदर्शन भी निजी उपलब्धियों की महत्वपूर्ण कड़ी थी। पहली पारी में भारत के 235 के स्कोर में से मनकड़ ने 72 रन बनाये और फिर इंग्लैंड के 537 के बड़े स्कोर के दौरान उन्होंने 73 ओवर गेंदबाजी की जिनमें से 24 ओवर मेडन रहे। उन्होंने 196 रन दिये और 5 विकेट लिये। इसके बाद मनकड़ ने दूसरी पारी में 184 रन बनाकर बेड्सर, ट्रूमेन व लेकर की गेंदबाजी का डटकर सामना किया तथा दूसरी पारी में भी उम्दा लेफ्ट आर्म स्पिन का प्रदर्शन करते हुए 24-12-35-0 का विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस टेस्ट में मनकड़ लगातार छाये रहे—कभी बल्लेबाजी करते हुए तो कभी गेंदबाजी करते हुए। इसी कारण इस शृंखला का यह टेस्ट मनकड़ टेस्ट के नाम से विख्यात हुआ। 1984-85 में इंग्लैंड के खिलाफ कलकत्ता टेस्ट में खेलकर अपना टेस्ट जीवन शुरू करते हुए मोहम्मद अजहरुद्दीन ने अपने टेस्ट जीवन के पहले तीन टेस्ट मैचों में शतक बनाकर एक नया विश्व कीर्तिमान भी बनाया तथा 'वंडरबॉय' होने की ख्याति भी पायी।

आजादी के 5 साल बाद भारत को अपनी पहली टेस्ट विजय नसीब हुई। आजादी के 12 साल बाद उसने आस्ट्रेलिया के खिलाफ पहला टेस्ट जीता और आजादी के 32 साल बाद पहली टेस्ट शृंखला। वेस्टइंडीज के खिलाफ पहला टेस्ट व पहली टेस्ट शृंखला उसने आजादी के 24 साल बाद जीती। पाकिस्तान के खिलाफ पहला टेस्ट व पहली टेस्ट शृंखला उसने आजाद होने के 5 साल बाद जीती। और आजादी के 13 साल बाद उसे न्यूजीलैंड के खिलाफ पहला टेस्ट व पहली टेस्ट शृंखला जीतने का अवसर मिला। श्रीलंका के खिलाफ पहला टेस्ट व पहली टेस्ट शृंखला भारत आजाद होने के 40 साल बाद जीत पाया जबकि जिम्बाब्वे के खिलाफ पहला टेस्ट व पहली टेस्ट शृंखला उसने आजादी के 46 साल बाद जीती। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहला टेस्ट व पहली टेस्ट शृंखला वह आजादी के पूरे 50 वर्ष बाद जीत पाया क्योंकि इस बीच 21 साल तक दक्षिण अफ्रीका अपनी रंगभेद नीति के कारण टेस्ट बिरादरी से निष्कासित रहा तथा भारत के साथ उसके टेस्ट संबंध 1992 में ही बने। 1983 का प्रूडेंशियल विश्व कप विजेता होने का सम्मान उसे आजाद होने के 36 साल बाद मिला। गावसकर व कपिल की निजी उपलब्धियां भी आजाद होने के क्रमशः 40 व 47 साल बाद की ही हैं।

आलोचक कह सकते हैं कि भारत ने घरेलू शृंखलाओं में ही अच्छा प्रदर्शन किया है, देश के बाहर उसका प्रदर्शन उतना अच्छा नहीं रहा है। यह सच भी है। अपने विकेट, अपने मौसम, वातावरण एवं परिवेश का लाभ तो हर घरेलू शृंखला में मिलता है। अन्य देशों के प्रदर्शन पर भी यदि आप नजर डालें तो वे भी अपने देश व धरती पर ही अच्छा प्रदर्शन करते रहे हैं। तभी तो माना जाता है कि किसी भी देश को वहां जाकर हराना मुश्किल व चुनौतीपूर्ण होता है। आस्ट्रेलिया को आस्ट्रेलिया जाकर, इंग्लैंड को इंग्लैंड में, वेस्टइंडीज को वेस्टइंडीज में, पाकिस्तान को पाकिस्तान में, श्रीलंका को श्रीलंका में, दक्षिण अफ्रीका को दक्षिण अफ्रीका में और यहां तक कि न्यूजीलैंड को न्यूजीलैंड व जिम्बाब्वे को जिम्बाब्वे में हराना जब मुश्किल माना जाता है तो इससे सिद्ध होता है कि सभी देश अपने ही देश में अच्छा प्रदर्शन कर पाते हैं। फिर यदि भारत; भारत में खेलकर अच्छा प्रदर्शन करता रहा है और यदि अन्य देशों को भारत को भारत में हरा पाना मुश्किल लगता रहा है तो आश्चर्य की क्या बात है ? आप पिछले दस वर्षों में यदि भारत द्वारा भारत में खेली गयी टेस्ट शृंखलाओं पर नजर डालें तो पायेंगे कि 1987-88 से लेकर 1996-97 तक खेली गयी सभी शृंखलाओं में या तो भारत जीता है या वे 'ड्रा' रही हैं। यानी वह पिछले दस वर्षों में कोई घरेलू शृंखला नहीं हारा है और इस बीच वह वेस्टइंडीज, न्यूजीलैंड, इंग्लैंड, श्रीलंका, आस्ट्रेलिया व दक्षिण अफ्रीका जैसी ताकतवर टीमों के खिलाफ खेल चुका है। फिर ऐसा भी नहीं है कि भारत ने विदेश में जाकर कभी कोई शृंखला जीती ही न हो। 1971 व 1986 में वह इंग्लैंड को इंग्लैंड में, 1968 में न्यूजीलैंड को न्यूजीलैंड में, 1993 में श्रीलंका को श्रीलंका में हराकर शृंखला जीत चुका है। इसके अलावा 1980-81 व 85-86 में आस्ट्रेलिया के खिलाफ आस्ट्रेलिया में, 1962 में वेस्टइंडीज के खिलाफ वेस्टइंडीज में, 1955, 1984 व 1989-90 में पाकिस्तान के खिलाफ पाकिस्तान में, 1976 में व 1994 में न्यूजीलैंड के खिलाफ न्यूजीलैंड में, 1997 में श्रीलंका के खिलाफ श्रीलंका में व 1992-93 में जिम्बाब्वे के खिलाफ जिम्बाब्वे में खेली गयी शृंखलाएं या तो 'ड्रा' रही हैं या फिर बराबर। यह भी कोई कम महत्वपूर्ण उपलब्धि तो नहीं है !

भारत के ताजा श्रीलंका दौरे की समाप्ति तक भारत ने अब तक कुल 312 टेस्ट खेले हैं जिनमें से उसने 57 जीते हैं, 102 में वह पराजित हुआ है, 1 टेस्ट 'टाई' हुआ है व 152 टेस्ट 'ड्रा' रहे हैं। टेस्ट क्रिकेट में यह भारत की 65 वर्षों की उपलब्धि है।

जहां तक एक दिवसीय क्रिकेट मैचों का सवाल है कि उनकी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही तादाद व उसी अनुपात में बढ़ती लोकप्रियता के कारण आज के ताजा आंकड़े कल तक बासी हो जाते हैं। पाकिस्तान में संपन्न हुई कायदे आजम ट्राफी तक भारत 336 एक दिवसीय मैच खेला है, उसने 147 जीते हैं, 173 में वह पराजित

हुआ है, 3 मैच 'टाई' हुए हैं और 13 में कोई नतीजा नहीं निकल पाया है यानी वे पूरे नहीं हो पाये हैं। भारत ने 1974 में इंग्लैंड के खिलाफ दो एक दिवसीय मैच खेलकर एक दिवसीय क्रिकेट खेलने की शुरुआत की थी। तब से सिर्फ 23 वर्ष की अल्प अवधि में वह 336 एक दिवसीय मैच खेल चुका है यानी भारत ने जहां 65 वर्षों में 312 टेस्ट खेले हैं वहीं उससे आधी अवधि में उससे 24 एक दिवसीय मैच अधिक खेले हैं। भारत ही क्या आज सभी क्रिकेट राष्ट्रों की कमोबेश यही स्थिति है। भारत की ओर से एक दिवसीय मैचों में अजहरुद्दीन 7 हजार से अधिक रन बनाकर बल्लेबाजी में व कपिल देव गेंदबाजी में ढाई सौ से अधिक विकेट लेकर शीर्ष पर हैं। आजादी के बाद भारत की ये क्रिकेट उपलब्धियां आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड व वेस्टइंडीज जैसे ताकतवर क्रिकेट राष्ट्रों की उपलब्धियों की तुलना में भले ही कम हों लेकिन भारत के ही पिछले 50 वर्षों के खेल इतिहास पर गौर करें तो पायेंगे कि अन्य खेलों की उपलब्धियों की तुलना में क्रिकेट की उपलब्धियां निश्चित ही अधिक आकर्षक एवं गौरवपूर्ण हैं।

मैदानी उपलब्धियों के साथ-साथ भारत ने क्रिकेट में अपने प्रशासनिक कौशल का भी सबूत पेश किया है। जगमोहन डालमिया भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के मानद सचिव थे। तत्पश्चात वह अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल के अध्यक्ष रहे हैं। पिछले दो दशकों से डालमिया व बिंद्रा ने मिलकर क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड को सर्वाधिक सुगठित, व्यवस्थित एवं अनुशासित खेल संघ के रूप में स्थापित किया है व क्रिकेट की मार्केटिंग करके बोर्ड कोष में भी इजाफा किया है तथा खिलाड़ियों का पारिश्रमिक भी बढ़ाया है। 1987 व 1996 में दो विश्व कप स्पर्धाओं का सफल आयोजन भारत की संगठन क्षमता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।

मैंने इस पुस्तक में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की विभिन्न देशों के खिलाफ टेस्ट शृंखलाओं एवं प्रमुख एक दिवसीय स्पर्धाओं की सफलता का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कुछ विवादों का भी जिक्र है जिनमें अधिकांश तो चयन एवं अहम् के टकराव से संबंधित ही हैं। ताजा विवाद खिलाड़ियों व सट्टेबाजों के बीच कथित सांठ-गांठ को लेकर है जिसकी अफवाह पिछले साल से जोरों पर है। भारतीय क्रिकेट की धवल छवि को इन विवादों एवं अफवाहों का साया धूमिल ही करता है। सफलता के क्षणों में टीम को अर्श पर बैठाने और असफलता के क्षणों में फर्श पर ला पटकने की प्रवृत्ति उत्तेजना के अतिरेक का ही परिणाम है। बेहतर होगा यदि हम संतुलित रुख रखें।

मैंने अपनी ओर से प्रस्तुति में सावधानी व सतर्कता बरती है। मेरा प्रयास कहां तक सफल हुआ है, आप ही परखिए और मूल्यांकन कीजिए।

1

स्वतंत्रता पूर्व का नजारा

विगत पचास साल के दौरान भारत की क्रिकेट गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने से पहले सरसरी तौर पर आजादी के पहले की स्थिति पर नजर डालना जरूरी है। भारत में क्रिकेट की शुरुआत तो ब्रिटिश इंडिया कंपनी के भारत आगमन के कुछ वर्षों बाद से ही हो गयी थी, लेकिन आम भारतीयों में यह खेल 1926 में ही लोकप्रिय हो पाया। यह वह साल था जब अर्थर गिलिगन की एम. सी. सी. टीम भारत के दौरे पर आयी थी। तब 30 नवंबर व 1 दिसंबर को मुंबई जिमखाना पर हिंदुओं की टीम व प्रवासी गिलिगन की एम. सी. सी. टीमों के बीच दो दिवसीय मैच खेला गया। यह मैच अनेक कारणों से ऐतिहासिक एवं यादगार रहा। एम. सी. सी. के लिए मध्यक्रम के बल्लेबाज अर्ल ने 130 रन बनाये जिनमें 8 छक्के व 11 चौके थे। इसके जवाब में भारत के लिए कर्नल सी. के. नायडू ने एक अभूतपूर्व साहसिक पारी खेलते हुए 116 मिनट में 156 रन बनाये जिनमें 11 छक्के व 14 चौके थे। काश उन दिनों एक दिवसीय क्रिकेट का चलन होता अथवा कर्नल नायडू आज खेल रहे होते। इस दौरे में कर्नल नायडू, देवधर, रामजी और गोडम्बे ने अपने खेल की ऐसी छाप छोड़ी कि अंग्रेज भी मान गये कि उनके राष्ट्रीय खेल क्रिकेट में भारत उनसे बराबरी की प्रतिस्पर्धा कर सकता है।

यूं तो 1889 से 1902-3 के बीच इंग्लैंड की तीन टीमें भारत की यात्रा पर आयी थीं। लेकिन तब भारत में क्रिकेट अपने शैशवकाल में था। भारत का क्रिकेट चर्चित तो 1926 में ही हो पाया। इसी के बाद इंग्लैंड में उसके खिलाड़ियों की खेल प्रतिमा एवं उनके प्रदर्शन की चर्चा होने लगी। इसके बाद 1932 में भारत को टेस्ट दर्जा मिला। अब इंग्लैंड के लोगों को भी भरोसा हो गया था कि भारत के खिलाड़ी टेस्ट क्रिकेट खेलने योग्य हैं तथा भारतीय टीम टेस्ट स्तर का क्रिकेट खेल पाने में सक्षम है।

1932 के इंग्लैंड दौरे के लिए भारतीय टीम किस आधार पर व किन परिस्थितियों

में चुनी गयी यह जानना भी जरूरी है। टीम का चयन अंग्रेज चयनकर्ताओं ने किया। चयनकर्ता अच्छे स्तर का काउंटी क्रिकेट खेले हुए लोग थे। तब भारत में क्रिकेट राजघरानों के इर्द-गिर्द केंद्रित था। या तो राजघराने और उनके सगे संबंधी क्रिकेट खेलते थे अथवा वे लोग जो क्रिकेट के जरिये राजघराने में नौकरी पाना चाहते थे। राजा-महाराजा अंग्रेजों से निकटता बनाये रखना चाहते थे। गुलामी का जमाना था, अतः टीम का कप्तान किसी राजा-महाराजा या नबाव को ही बनाया जाता था। यही नहीं टीम में तीन, चार या पांच खिलाड़ी तो राजघराने से संबंधित या उनके करीबी दोस्त होते ही थे। 1932 में भी कप्तानी के मामले में इन्हीं बातों का ध्यान रखा गया और महाराजा पटियाला को वरीयता दी गयी। लेकिन जब महाराजा पटियाला ने जाने से इनकार कर दिया तो पोरबंदर के राणा साहब को कप्तान और उनके करीबी रिश्तेदार घनश्याम सिंह जी को उप-कप्तान बनाया गया। सी. के. नायडू टीम के श्रेष्ठ खिलाड़ी एवं वरीयतम सदस्य थे। लेकिन उनका ध्यान किसी को नहीं आया। बल्कि उनकी योग्यता को अनदेखा किया गया।

'लॉर्ड्स' पर खेलकर इस एक मात्र टेस्ट से भारत अपने टेस्ट सफर की शुरुआत कर रहा था। अतः इस ऐतिहासिक अवसर के महत्व को ध्यान में रखते हुए एवं अपनी क्षमता के मद्देनजर पोरबंदर और घनश्याम सिंह जी दोनों ने इस टेस्ट में न खेलने का फैसला किया। पोरबंदर कर्नल नायडू के पक्ष में हट गये और इस तरह भारत के इस पहले टेस्ट में कर्नल नायडू ने टीम का नेतृत्व किया। 25, 26 व 28 जून 1932 को खेले गये इस टेस्ट में इंग्लैंड ने भारत को 158 रनों से हरा दिया। 1936 में जब भारतीय टीम अपने दूसरे दौरे पर इंग्लैंड गयी तब महाराजा कुमार विजयनगरम को टीम का कप्तान बनाया गया। यद्यपि वह औसत क्लब स्तर के खिलाड़ी थे, फिर भी विजय मर्चेंट की सलाह की परवाह न करते हुए उन्होंने न सिर्फ टेस्ट मैचों में कप्तानी की बल्कि सी. के. नायडू जैसे विख्यात एवं वरिष्ठ खिलाड़ी को 'डीप थर्ड मैन', 'डीप फाइन लेग' व 'लांग लेग' जैसे दौड़-भाग वाले स्थानों पर तैनात करके अपने अहम् की तुष्टि की। भारत 1932 में 1-0 से हारा था तो 1936 के दौरे में टेस्ट शृंखला 2-0 से हारा जबकि 1 टेस्ट 'ड्रा' रहा। इस बीच 1933-34 में इंग्लैंड की टीम जार्डिन की अगुआई में भारत यात्रा पर आयी। इस घरेलू शृंखला में भारतीय टीम का नेतृत्व कर्नल नायडू को सौंपा गया। इंग्लैंड ने यह शृंखला 2-0 से जीती और शृंखला का एक टेस्ट 'ड्रा' रहा।

1936 से 1946 तक इन दस वर्षों में भारतीय टीम कोई टेस्ट नहीं खेली। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण न तो कोई टीम भारत आयी और न ही कोई भारतीय टीम किसी अन्य देश की यात्रा पर गयी। इस तरह समूचे क्रिकेट जगत में अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियां ठप्प रहीं। बहरहाल इस बीच अनधिकृत टेस्ट मैच जरूर खेले गये। 1935-36 में महाराजा पटियाला की आस्ट्रेलियाई एकादश और भारतीय टीम के बीच

4 अनधिकृत टेस्ट मैचों की श्रृंखला खेली गयी जो 2-2 से बराबर रही। फिर 1937-38 में लार्ड टेनिसन की इंग्लैंड एकादश भारत आयी। 5 टेस्ट मैचों की इस श्रृंखला में टेनिसन एकादश ने भारत को 3-2 से पराजित किया। 1945 में आस्ट्रेलियाई सर्विसेस एकादश की टीम ने भारत आकर 3 टेस्ट मैचों की श्रृंखला में शिरकत की। इस श्रृंखला में भारत 1-0 से विजयी रहा।

जब द्वितीय विश्व युद्ध खत्म हो गया और अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच फिर से खेले जाने लगे तब 1946 में भारतीय टीम अपने तीसरे इंग्लैंड दौरे पर गयी। 1932 व 1936 की तरह इस बार भी शाही घराने के व्यक्ति को ही टीम का कप्तान बनाया गया। इस बार कप्तान बने सीनियर पटौदी। यद्यपि वह एक अच्छे खिलाड़ी थे और इंग्लैंड की ओर से टेस्ट क्रिकेट खेल चुके थे लेकिन थे तो शाही परिवार के ही। यह जरूर है कि वह पोरबंदर व विजयनगरम की अपेक्षा कहीं ज्यादा अच्छे स्तर के खिलाड़ी थे। उनकी नियुक्ति शाही परिवार में जन्म लेने तथा क्रिकेट खेलने की प्रतिभा इन दोनों का मिला जुला परिणाम था। पर चूंकि वह इंग्लैंड में ही रहे व वहीं पढ़े एवं खेले थे, अतः उन्हें भारतीय खिलाड़ियों के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं थी। इस कारण वह एक सफल कप्तान साबित नहीं हो पाये। इतना जरूर है कि टेस्ट क्रिकेट के अभाव में जहां भारतीय खिलाड़ियों को त्रिकोणीय, चतुष्कोणीय एवं पंचकोणीय स्पर्धाओं से संतोष करना पड़ रहा था उसकी कमी इस दौरे से जरूर पूरी हुई। सी. के. नायडू, मोहम्मद निसार और अमरसिंह इस बार नहीं थे। अब विजय हजारे, वीनू मनकड़ व अब्दुल हफीज कारदार नये सितारे थे जिन्हें मौके का इंतजार था ताकि ये अपनी प्रतिभा के जौहर दिखा सकें। 1936 के दौरे में गये विजय मर्चेट, मुश्ताक़ अली व लाला अमरनाथ इस बार भी टीम में थे। 3 टेस्ट मैचों की इस श्रृंखला में भारत एक टेस्ट में पराजित हुआ जबकि 2 टेस्ट 'ड्रा' रहे। इस तरह यह श्रृंखला इंग्लैंड ने 1-0 से जीत ली। इस दौरे में विजय मर्चेट ने बल्लेबाजी में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया जबकि वीनू मनकड़ एक स्तरीय ऑलराउंडर के रूप में स्थापित हुए। बाएं हाथ से धीमी गति के स्पिन गेंदबाज व दाहिने हाथ से बल्लेबाजी करने वाले मनकड़ एक विश्वसनीय बल्लेबाज के रूप में जाने गये जो कि किसी भी क्रम पर जाकर खेल सकते थे।

आजादी के पहले 1932 से 1946 तक भारत सिर्फ 4 अधिकृत टेस्ट श्रृंखलाएं खेला और ये सभी श्रृंखलाएं इंग्लैंड के खिलाफ ही खेली गयीं। तीन इंग्लैंड में खेली गयीं और एक भारत में। जब दस साल तक कोई टेस्ट श्रृंखला नहीं खेली गयी तब अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के इस शून्य को 3 अनधिकृत टेस्ट श्रृंखलाओं के 12 टेस्ट एवं त्रिकोणीय, चतुष्कोणीय एवं पंचकोणीय क्रिकेट की घरेलू स्पर्धाओं ने भरा। इन स्पर्धाओं के कारण देश में क्रिकेट का वातावरण भी बना रहा और भारतीय खिलाड़ियों को उच्च स्तरीय, प्रतिस्पर्धात्मक क्रिकेट खेलने का अवसर भी मिला। 1932 के इंग्लैंड

दौरे में लॉर्ड्स पर खेला गया एकमात्र टेस्ट भारत का भी पहला टेस्ट था और कर्नल नायडू का भी। लेकिन तब उनकी उम्र 37 वर्ष की थी और 1936 में जब वह भारतीय टीम की एवं.अपनी दूसरी इंग्लैंड यात्रा पर गये तब वह 41 साल के थे। अमरसिंह व निसार भी अपनी उम्र के उतार पर थे। ये सभी अपना श्रेष्ठ क्रिकेट तभी खेल चुके थे जब भारत को टेस्ट दर्जा नहीं मिला था। 1936 में जहां लाला अमरनाथ, विजय मर्चेंट व मुश्ताक अली ने अपने खेल से सभी को प्रभावित किया था तथा ओल्ड ट्रेफर्ड टेस्ट में मर्चेंट-मुश्ताक अली के बीच पहले विकेट की साझेदारी में 204 रन बने थे और वह भी 'फालोऑन' खेलते हुए, 1946 के 'हीरो' रहे विजय मर्चेंट विजय हजारे और वीनू मनकड़।

आजादी के पहले 1932 से 1946 तक 14 वर्षों में सिर्फ 10 अधिकृत टेस्ट खेलकर भारत ने जो क्रिकेट जगत में साख बनायी थी वह काबिले तारीफ थी। यद्यपि भारत अभी तक इनमें से एक भी टेस्ट नहीं जीत पाया था फिर भी सीमित अवसर एवं साधन, न्यूनतम धन और कड़ी स्पर्धा के बीच खेलते हुए भारतीय खिलाड़ियों का खेल निखरा तथा वे इंग्लैंड व आस्ट्रेलिया जैसे तब के ताकतवर क्रिकेट राष्ट्रों के सामने बराबरी से प्रतिस्पर्धा करने के काबिल बने। लेकिन टीम में राजा महाराजाओं की बेवजह की भर्ती के कारण कुछ योग्य खिलाड़ियों के खेल अवसर अवश्य घट गये। मसलन 1932 में जब टीम गयी तो प्रोफेसर देवधर को अच्छे 'फार्म' एवं अच्छी सेहत के बावजूद सिर्फ इसलिए टीम में नहीं लिया गया कि वे 40 वर्ष के हो चुके थे। तब ऐसा माना गया कि अधिक उम्र के कारण वह प्रतिस्पर्धात्मक तनाव झेल पाने के अनुपयुक्त हैं जबकि वह शारीरिक रूप से चुस्त-दुरुस्त थे और राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे। आयीबेरा दूसरे ऐसे खिलाड़ी थे जो केवल इसलिए नहीं चुने जा सके क्योंकि वह सामान्य वर्ग के थे और राजघराने अथवा उससे संबंधित लोगों के लिए टीम में जगह सुरक्षित रखना जरूरी था। उन जैसे अनेक सामान्य वर्ग के खिलाड़ियों को उच्च स्तरीय खिलाड़ी होने के बाद भी नुकसान उठाना पड़ा और वे टेस्ट खेलने के अवसर से वंचित रहे। अच्छे खिलाड़ियों का समावेश न हो पाने के कारण टीम भी कमजोर बनी रही। ढूंढ़ने पर आपको अनेक ऐसे नाम मिल जायेंगे जो देवधर और आयीबेरा की तरह दुर्भाग्यशाली रहे।

टेस्ट दर्जा पाने और आजाद होने के साल भर पहले तक के 14 वर्षों में भारतीय टीम के क्षेत्ररक्षण का स्तर बेहद कमजोर रहा। इसका खामियाजा जहां गेंदबाजों ने भुगता वहीं टीम को भी नुकसान हुआ। यदि आप हॉब्स, हेमंड, हटन, कंप्टन, ब्रेडमेन व फ्रेंक वुली जैसे बल्लेबाजों को एक या दो अवसर दे दें तो आपके लिए मैच में भला क्या अवसर बच सकता था ? माना कि कैच या रन आउट या 'स्टंपिंग' छूटना खेल का ही हिस्सा है। मगर छोड़ने वाली टीम तो घाटे में और फायदा उठाने वाली टीम लाभ की स्थिति में रहती है।

2

अनधिकृत टेस्ट मैच और भारत

जब तक भारत को टेस्ट दर्जा नहीं मिला था तब तक त्रिकोणीय, चतुष्कोणीय और पंचकोणीय स्पर्धाएं ही उच्च स्तरीय प्रतिस्पर्धा का माध्यम थीं। 1932 तक भारत के टेस्ट क्रिकेट से बाहर रहने की कमी इन्हीं राष्ट्रीय स्पर्धाओं ने पूरी की। खिलाड़ी बड़े उत्साह से व बढ़-चढ़ कर इन स्पर्धाओं में भाग लेते थे। दर्शकों में भी इन प्रतियोगिताओं को लेकर उत्साह बना रहता था और वे बड़ी बेचैनी तथा उत्सुकता से इनकी प्रतीक्षा करते थे। उस वक्त पूरे मुंबई (पहले बंबई) शहर में जोश का वातावरण रहता था। लोगों के लिए तब यही बड़ा क्रिकेट यानी उच्च स्तरीय क्रिकेट था।

भारत को 1932 में 1, 1933-34 में 3 तथा 1936 में 3 अधिकृत टेस्ट खेलने को मिले। ये सभी टेस्ट इंग्लैंड के खिलाफ ही खेले गये। अन्य देशों से भारत के क्रिकेट संबंध थे ही नहीं। वे तो बाद में बने। अतः अपने देश में क्रिकेट का वातावरण बनाये रखने, उसकी लोकप्रियता बरकरार रखने, खिलाड़ियों को उच्च स्तरीय क्रिकेट खेलने का अभ्यास दिलाने तथा उन्हें अन्य देशों के खिलाड़ियों के विरुद्ध खेलकर अपने खेल के स्तर का आकलन करने का अवसर देने के मद्देनजर अन्य देशों से टीमों का आदान-प्रदान किया जाना जरूरी था। द्वितीय विश्व युद्ध के कारण समूचे क्रिकेट जगत में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट गतिविधियां स्थगित थीं। इंग्लैंड में तो डेनिस कंप्टन जैसे खिलाड़ी बाकायदा युद्ध का प्रशिक्षण लेने में व्यस्त थे और इसी कारण इंदौर के पास स्थित सैनिक केंद्र महू में पदस्थ थे तथा होल्कर की टीम के लिए रणजी ट्राफी भी खेले। भारत के क्रिकेट अधिकारियों ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के इसी शून्य को भरने के लिए अनधिकृत टेस्ट शृंखलाओं का आयोजन किया। अनधिकृत टेस्ट खेलने जो टीमें भारत आयीं उनमें कुछ तो पुराने मशहूर खिलाड़ी थे और कुछ ऐसे प्रतिभावान नये खिलाड़ी थे जो भविष्य में क्रिकेट जगत के सितारा खिलाड़ी बने। यह इसीलिए किया गया ताकि दर्शकों में इन मैचों के प्रति जिज्ञासा व दिलचस्पी

बनी रहे तथा वे अधिकाधिक संख्या में मैच देखने आयें। तब प्रायोजकों का जमाना तो था नहीं, अतः मैचों पर होने वाले खर्च की भरपाई टिकट से होने वाली आय व स्मारिका निकाल कर जैसे-तैसे पूरी करने की कोशिश की जाती थी।

1936 में इंग्लैंड यात्रा से वापस लौटी भारतीय टीम को कैसे व्यस्त रखा जाये, यह एक समस्या थी। इसके समाधान हेतु महाराजा पटियाला ने जैक राइडर के नेतृत्व में आस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों से गठित टीम को भारत बुलवाया और इस टीम का नाम रखा 'जैक राइडर की महाराजा पटियाला आस्ट्रेलियाई एकादश'। यह टीम 1935-36 में भारत आयी, और इसके व भारतीय टीम के बीच 4 अनधिकृत टेस्ट मैचों की श्रृंखला खेली गयी। यह भारत में खेली गयी पहली अनधिकृत टेस्ट श्रृंखला थी। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट उपलब्धियों में खिलाड़ियों के अनधिकृत टेस्ट मैचों के प्रदर्शन को सम्मिलित नहीं किया जाता है और अनधिकृत श्रृंखलाओं के तहत उनका हिसाब अलग से रखा जाता है। इस श्रृंखला के सभी टेस्ट तीन दिवसीय थे और वे मुंबई, कलकत्ता, लाहौर व चेन्नई में खेले गये। लाहौर अविभाजित भारत का महत्वपूर्ण क्रिकेट केंद्र था। मुंबई और कलकत्ता में खेले गये मैचों में तो मेहमान टीम तथा लाहौर व चेन्नई में खेले गये मैचों में भारतीय टीम विजयी हुई। यह श्रृंखला 2-2 से बराबर रही। इसके बाद 1937-38 में इंग्लैंड से लार्ड टेनिसन एकादश भारत आयी। भारतीय टीम व लार्ड टेनिसन एकादश के बीच 5 अनधिकृत टेस्ट खेले गये जिनमें से 3 में टेनिसन एकादश व 2 में भारतीय टीम जीती। इस तरह भारत यह अनधिकृत टेस्ट श्रृंखला 3-2 से हार गया। यह भारत में खेली गयी दूसरी अनधिकृत टेस्ट श्रृंखला थी। 1945 में जब विश्व युद्ध की लपटें शांत हुई तो क्रिकेट गतिविधियों के शुरू किये जाने की चर्चा चल पड़ी। जब तक अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट की हलचल शुरू हो पाती, 1945 में ही आस्ट्रेलियाई सर्विसेस एकादश के नाम से एक टीम भारत के खिलाफ 3 अनधिकृत टेस्ट मैचों की श्रृंखला खेलने भारत आयी। यह टीम इंग्लैंड जाकर विक्ट्री एकादश के नाम से खेलकर लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी थी। इस टीम में सिसिल पेपर, कीथ मिलर व पैटी फोर्ड जैसे विख्यात खिलाड़ी थे। इसी श्रृंखला में खेलकर भारत के वीनू मनकड़, रूसी मोदी, विजय हजारे, शूटे बेनर्जी व चंदू सर्वटे जैसे खिलाड़ी सामने आये। इस श्रृंखला के मुंबई व कलकत्ता टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और चेन्नई टेस्ट में भारतीय टीम ने आस्ट्रेलियाई सर्विसेस एकादश को 6 विकेट से हरा कर 1-0 से श्रृंखला जीत ली।

ये तीनों अनधिकृत टेस्ट श्रृंखलाएं आजादी के पहले खेली गयी थीं और इनमें से भारत 1 में जीता, 1 में पराजित हुआ तथा 1 बराबर रही थी। जब क्रिकेट गतिविधियों की शुरुआत हो गयी तो भारत ने 1946 में इंग्लैंड व 1947-48 में आस्ट्रेलिया की यात्रा करके दो अधिकृत टेस्ट श्रृंखलाएं खेलीं। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद जब अधिकृत टेस्ट मैच फिर से खेले जाने लगे और भारतीय टीम ने भी

इंग्लैंड जाकर 3 व आस्ट्रेलिया जाकर 4 टेस्ट मैच खेल लिए, तब भी अनधिकृत टेस्ट मैचों की लोकप्रियता को देखते हुए अनधिकृत टेस्ट शृंखलाओं का सिलसिला जारी रहा। इसी प्रयास के अंतर्गत 1949-50 में पहली राष्ट्रमंडलीय टीम भारत यात्रा पर आयी। यह आजादी के बाद की पहली और अनधिकृत टेस्ट शृंखलाओं की कड़ी के माने से चौथी अनधिकृत टेस्ट शृंखला थी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के तत्कालीन अध्यक्ष एंथनी डी'मेलो की मेहनत और उनकी दूरदर्शिता का ही परिणाम था कि आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड तथा वेस्टइंडीज के पेशेवर खिलाड़ियों से सुगठित यह राष्ट्रमंडलीय एकादश टीम 5 अनधिकृत टेस्ट मैचों की शृंखला खेलने भारत यात्रा पर आयी। भारतीय टीम का कोई अन्य क्रिकेट कार्यक्रम था ही नहीं। अतः इस शृंखला का सबसे बड़ा फायदा यही हुआ कि इन पेशेवर खिलाड़ियों के खिलाफ खेलने का अनुभव तो उन्हें मिला ही, वे चुस्त-दुरुस्त भी बने रहे। इस राष्ट्रमंडलीय एकादश टीम के कप्तान थे जॅक लिव्हिंगस्टन और मैनेजर थे कभी इंग्लैंड के विकेट कीपर रहे जॉर्ज डकवर्थ। वेस्टइंडीज के सितारा बल्लेबाज फ्रेंक वॉरेल तब युवा ही थे मगर उनके खेल के आकर्षण की बड़ी चर्चा थी। अतः वह इस टीम के प्रमुख आकर्षण थे। वॉरेल ने इस यात्रा में अपने व्यवहार, खेल भावना, व्यक्तित्व एवं खेल से सभी को प्रभावित किया। इस टीम में जार्ज ट्राइब भी थे जो कि महान ब्रेडमेन की कप्तानी में एक स्पिनर के रूप में खेल चुके थे। सिसिल पेपर तो थे ही। इस शृंखला में भारतीय टीम का नेतृत्व किया विजय मर्चेंट ने। शृंखला का पहला टेस्ट दिल्ली में खेला गया जिसमें प्रथम राष्ट्रमंडलीय एकादश टीम ने भारत को 9 विकेट से पराजित कर दिया। मुंबई में खेला गया दूसरा व कानपुर में खेला गया चौथा टेस्ट 'ड्रा' रहा। इन दोनों ही टेस्ट मैचों में कांटे का मुकाबला हुआ। इस तरह शृंखला में 1-0 से पीछे बने रहने के बाद भारत ने कलकत्ता में खेले गये तीसरे तथा चेन्नई में खेले गये पांचवें व अंतिम टेस्ट में मेहमान टीम को हरा कर यह शृंखला 2-1 से जीत ली। इस शृंखला में भारत के लिए विजय हजारे ने 10 पारियां खेल कर 96.71 की औसत से 677 रन बनाये। कानपुर में तब 'टर्फ' विकेट नहीं था, अतः टेस्ट मैच 'क्वायर मैटिंग' पर खेला गया। इस टेस्ट में गुलाम अहमद, वीनू मनकड़ व हीरा लाल गायकवाड़ जैसे कुशल स्पिन गेंदबाजों का बखूबी सामना करते हुए फ्रेंक वॉरेल ने अपनी आकर्षक शैली में नाबाद 223 रन बनाये। उनकी इस पारी को दर्शक आज तक याद करते हैं।

इस टेस्ट शृंखला की समाप्ति के बाद भारतीय नियंत्रण बोर्ड कोई अधिकृत टेस्ट शृंखला आयोजित नहीं कर पाया। इस कारण अगले ही वर्ष 1950-51 में दूसरी राष्ट्रमंडलीय एकादश टीम को भारत की यात्रा का निमंत्रण दिया गया। इस टीम के कप्तान थे इंग्लैंड के पूर्व विकेट कीपर लेसली एक्स। इस टीम में वॉरेल, ट्राइब, जिमलोकर, डूलेंड और रिजवे तो थे ही, वेस्टइंडीज के सोनी रामाधीन भी थे जिन्होंने

1950 के इंग्लैंड दौरे में वेस्टइंडीज के लिए यादगार गेंदबाजी करके अपनी स्पिन गेंदबाजी से तहलका मचा दिया था व इंग्लैंड की टीम के छक्के छुड़ा दिये थे। इस बार भी भारत के कप्तान विजय मर्चेंट ही थे। 5 टेस्ट मैचों की यह शृंखला दूसरी राष्ट्रमंडलीय टीम ने 2-0 से जीत ली। 3 टेस्ट 'ड्रा' रहे। इस शृंखला में भी विजय हजारे भारत के सफलतम बल्लेबाज रहे। उन्होंने 79.25 की औसत से 634 रन बनाये। उमरीगर ने मुंबई और चेन्नई टेस्ट में शतक बनाये। मुंबई में भारतीय टीम अपनी पहली पारी में रिजवे की घातक गेंदबाजी के सामने ब्रेबोर्न स्टेडियम पर सिर्फ 82 रनों पर ढेर हो गयी जो कि इस शृंखला का न्यूनतम स्कोर रहा। भारत के 7 बल्लेबाज तो अपना खाता भी नहीं खोल पाये और बिना कोई रन बनाये आउट हो गये। इन दो राष्ट्रमंडलीय टीमों के दौरों का यह लाभ हुआ कि भारतीय क्रिकेट प्रेमी कुछ ऐसे ख्यातिप्राप्त खिलाड़ियों को खेलते हुए देख पाये जिनके बारे में उन्होंने सुन तो रखा था पर जिन्हें देखने का मौका उन्हें अब तक नहीं मिल पाया था। सिसिल पेपर ऐसे ही एक गेंदबाज थे। उन्हें भारतीय दर्शकों ने बेहतरीन लेग स्पिन-फ्लिपर गेंद फेंकते हुए देखा। वह अपनी ढलती उम्र में भी बल्लेबाजों को चकमा देकर परेशान करते रहे। रामाधीन भारत में उतने प्रभावशाली नहीं रहे जितने कि वह इंग्लैंड में रहे थे। वॉरेल का जादू इस बार भी बरकरार रहा।

1953-54 में सिल्वर जूबली राष्ट्रमंडलीय टीम भारत के दौरे पर आयी। इस अनधिकृत शृंखला में 5 टेस्ट खेले गये जिनमें से 2 'ड्रा' रहे, 2 भारत ने जीते और 1 राष्ट्रमंडलीय एकादश ने। इस तरह भारत ने यह शृंखला 2-1 से जीत ली। मुंबई और कलकत्ता में खेले गये टेस्ट मैचों को छोड़कर शेष तीनों टेस्ट मैचों में भारतीय टीम का दबदबा बना रहा तथा वह मेहमान टीम पर हावी रही। दिल्ली व चेन्नई दोनों ही टेस्ट भारत ने एक पारी से जीते जबकि लखनऊ में खेले गये व 'ड्रा' हुए टेस्ट में उसे पहली पारी में बढ़त मिली। यह अंतिम अनधिकृत टेस्ट शृंखला थी। अब चूंकि क्रिकेट गतिविधियां सामान्य हो चली थीं और भारत को भी अधिकृत दौरे आयोजित करने में कामयाबी मिल रही थी, अतः भविष्य में अधिकृत टेस्ट मैच ही खेले गये।

भारत में कुल 5 अनधिकृत टेस्ट शृंखलाएं खेली गयीं। इनमें से 3 भारत ने जीतीं और 2 प्रवासी टीमों ने। इन शृंखलाओं में चेन्नई व कलकत्ता में खेलना भारत को अधिक रास आया तथा इन स्थानों पर खेलना उसके लिए शुभ रहा। भारत ने चेन्नई में 4, कलकत्ता में 2 तथा दिल्ली में 1 टेस्ट जीता और दिल्ली व कलकत्ता में 1-1 टेस्ट में उसे पराजित होना पड़ा। इन अनधिकृत टेस्ट मैचों के कारण भारत में 1937 से 1954 तक क्रिकेट गतिविधियों की धूमधाम रही व लोगों को उच्च स्तर के मशहूर खिलाड़ियों को खेलते हुए देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भारतीय खिलाड़ियों को भी अच्छे स्तर के मैच खेलने का पर्याप्त अभ्यास मिलता रहा। यदि

इन टीमों के दौरे न हुए होते व अनधिकृत टेस्ट शृंखलाएं न खेली गयी होतीं तो 17 वर्षों तक भारत में क्रिकेट गतिविधियां ठप्प ही पड़ गयी होतीं और इसका खामियाजा खिलाड़ियों व क्रिकेट प्रेमियों दोनों को ही भुगतना पड़ता। इन मैचों को सफलतापूर्वक करा पाना भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के पदाधिकारियों की गतिशीलता, सक्रियता एवं दूरदृष्टि का परिचायक था।

3

आजादी के बाद का पहला विदेशी दौरा

1947-48 में भारतीय टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर गयी। इस दौरे का विशेष महत्व है। आजादी के बाद यह भारतीय क्रिकेट टीम का पहला विदेशी दौरा तो था ही, किसी भी भारतीय टीम का यह पहला आस्ट्रेलियाई दौरा भी था। 15 अगस्त, 1947 को भारत को आजादी मिली और इसी साल अक्तूबर में यानी स्वतंत्रता प्राप्ति के सिर्फ 2 माह बाद भारतीय टीम आस्ट्रेलिया के लिए रवाना हुई। अतः इस दौरे का भारत के क्रिकेट इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

इस दौरे को लेकर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड, खिलाड़ियों एवं भारतीय क्रिकेट प्रेमियों में बड़ा उत्साह था। यह पहला मौका था जब आजादी के बाद भारतीय टीम आस्ट्रेलिया जैसी ताकतवर टीम के खिलाफ खेलने एवं महान ब्रेडमेन को करीब से देखने आस्ट्रेलिया जा रही थी। सभी रोमांचित एवं अच्छे प्रदर्शन के प्रति कटिबद्ध थे। यह एक सुनहरा अवसर था जब एक आजाद देश को अच्छे प्रदर्शन द्वारा स्वयं को क्रिकेट जगत में स्थापित करना था। इस दौरे के प्रति भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड भी कितना गंभीर था यह इसी बात से पता चलता है कि आस्ट्रेलिया जाने वाली टीम चुनने के पहले उसने 1946 की इंग्लैंड यात्रा से लौटी भारतीय टीम और शेष भारत के बीच कुछ मैच आयोजित किये। उद्देश्य यही था कि श्रेष्ठ खिलाड़ियों को उनके श्रेष्ठ प्रदर्शन के आधार पर चुना जाये। सीनियर पटौदी तो अपनी अस्वस्थता के कारण आस्ट्रेलिया दौरे के लिए अपनी असमर्थता पहले ही प्रकट कर चुके थे। हिंडलेकर व राव साहब निम्बालकर 'फिट' नहीं थे, अतः वे टीम में स्थान नहीं पा सके। खण्डू रांगणेकर, हेमू अधिकारी, दत्तू फड़कर और फज़ल महमूद ने अपने खेल से प्रभावित किया तथा टीम के लिए अपना दावा मजबूती से पेश किया। जब टीम की घोषणा हुई तो जैसी कि उम्मीद थी विजय मर्चेंट को कप्तान तथा लाला अमरनाथ को उप-कप्तान बनाया गया। जो टीम चुनी गयी वह अनुभवी व नये प्रतिभावान

खिलाड़ियों की मिली-जुली टीम थी। उसमें अतीत के अनुभव एवं भविष्य की संभावनाओं का समुचित संतुलन था। कुल मिलाकर वह एक सुगठित एवं संतुलित टीम थी। लेकिन ऐन वक्त पर विजय मर्चेंट ने अपने पैर की तकलीफ के कारण जाने से इनकार कर दिया, रूसी मोदी बीमार हो गये और टीम चुनी जाने व उसके रवाना होने की प्रक्रिया के बीच देश का विभाजन हो गया। इस कारण फज़ल महमूद ने भी जाने से इनकार कर दिया और वह पाकिस्तान चले गये। देश में सांप्रदायिक दंगों एवं पारिवारिक कारणों के मद्देनजर मुश्ताक अली ने भी जाने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी। इस तरह सारे जोश खरोश से की गयी तैयारी पर एक तरह से पानी फिर गया। नये सिरे से सोच-विचार शुरू हुआ। भारत के 3 बेहतरीन बल्लेबाज और एक उम्दा मध्यम तेज गति का गेंदबाज टीम के साथ नहीं जा रहे थे। आप कल्पना कर सकते हैं कि जब इतने महत्वपूर्ण दौरे में वे दोनों प्रारंभिक बल्लेबाज ही न हों जिन्होंने 1936 में इंग्लैंड के खिलाफ ओल्ड ट्रेफर्ड टेस्ट की दूसरी पारी में 204 रनों की रिकार्ड भागीदारी की हो तथा दोनों ने ही शतक बनाया हो और तीसरे क्रम पर जाकर खेलने वाला बल्लेबाज भी न जा रहा हो तो आस्ट्रेलिया जाने वाली टीम के खिलाड़ियों के मन पर इसका कितना खराब असर पड़ा होगा। मर्चेंट व मुश्ताक अली तो प्रारंभिक बल्लेबाज थे जिन्होंने विपरीत परिस्थिति में जब टीम 'फालोऑन' खेल रही थी तब जी-जान एक कर दी थी। ये दोनों ही नहीं जा रहे थे। उधर तीसरे क्रम पर जाकर खेलने वाले मोदी भी नहीं जा रहे थे। मर्चेंट को तो कप्तान बनाया गया था। अब बदली हुई परिस्थिति में लाला अमरनाथ को कप्तान एवं विजय हजारे को उप-कप्तान नियुक्त किया गया। न जाने वाले खिलाड़ियों का स्थान लेने के लिए चंदू सर्वटे, रणवीर सिंह, रामसिंह और रंगाचारी टीम में आये। लेकिन मुंबई के प्रारंभिक बल्लेबाज के. सी. इब्राहीम को अच्छे प्रदर्शन एवं टीम में प्रारंभिक बल्लेबाज की जरूरत होते हुए भी नहीं लिया जाना आश्चर्यजनक तो था ही, दुखद भी था। उन्हें तो मूल टीम में ही लिया जाना चाहिए था पर अफसोस कि उन्हें चार रिक्त स्थानों की पूर्ति करते वक्त भी याद नहीं किया गया। यानी चयन को लेकर मतभेद कोई नयी बात नहीं है। इस उपेक्षा का भी अपना इतिहास है।

इस दौरे की रिपोर्टिंग के लिए विभिन्न अखबारों एवं एजेंसियों के कुछ मशहूर पुराने खिलाड़ियों को अनुबंधित किया था। दिलीप सिंह जी 'रूटर्स' के लिए लिख रहे थे तो अर्थर मेली स्थानीय अखबार के लिए। जैक फिंगल्टन भी आस्ट्रेलिया के किसी समाचार पत्र कि लिए शृंखला 'कवर' कर रहे थे। इस दौरे के प्रति भारत ही नहीं, आस्ट्रेलिया में भी उतना ही उत्साह था।

दिलीप सिंह जी खुद एक अच्छे खिलाड़ी थे तथा उन्हें क्रिकेट की बारीकियों की अच्छी समझ थी। यह भारतीय टीम का दुर्भाग्य था कि उनकी जरूरी हिदायतों को गलत अर्थों में लिया गया जबकि उनकी राय एवं सलाह तथा खिलाड़ियों से

उनकी नजदीकी टीम के लिए फायदेमंद हो सकती थी। फिंगल्टन की रोचक एवं प्रमाणिक टिप्पणियां बड़े चाव से पढ़ी जाती थीं। वरिष्ठ खिलाड़ी प्रो. देवधर भी पुणे के किसी अखबार के लिए दौरा 'कवर' कर रहे थे।

ब्रेडमेन की आस्ट्रेलियाई टीम कागज पर तो ताकतवर थी ही, मैदान पर भी भारत पर भारी पड़ी। फिर भारतीय टीम में उसके अनेक स्थापित एवं प्रसिद्ध खिलाड़ी भी नहीं थे। इस कारण उसकी ताकत वैसे भी घट गयी थी। फिर यह उसका पहला आस्ट्रेलियाई दौरा था। परिस्थिति, मौसम व क्रिकेट सभी नया था। 5 टेस्ट मैचों की इस शृंखला का सिडनी टेस्ट तो वर्षा बाधित रहने के कारण 'ड्रा' रहा और 4 टेस्ट आस्ट्रेलिया ने जीतकर शृंखला 4-0 से जीत ली। परिणाम के लिहाज से यह शृंखला भले ही एकतरफा नजर आती हो पर वास्तव में वह ऐसी रही नहीं। अनेक कारणों से यह शृंखला महत्वपूर्ण साबित हुई। बारिश के कारण गीले व फिर धीरे-धीरे सूखने वाले विकेट पर खेलने का तो भारतीय टीम को कोई अनुभव ही नहीं था और वहां उसे ऐसे ही विकेट मिले। और आस्ट्रेलियाई विकेट ऐसी परिस्थिति में कितने घातक होते हैं यह अनुभव भारतीय खिलाड़ियों को पहली बार हुआ। ब्रिसबेन में खेले गये पहले टेस्ट में आस्ट्रेलियाई टीम एक पारी से जीती। लेकिन सिडनी में खेले गये दूसरे टेस्ट में पहली पारी में केवल 188 रनों पर आउट हो जाने के बावजूद भारतीय टीम ने आस्ट्रेलिया की पहली पारी 107 रनों में समेट कर 81 रनों की बढ़त ले ली। लेकिन लगातार बारिश ने इस टेस्ट का मजा ही किरकिरा कर दिया। यह टेस्ट पूरे समय खेला ही नहीं जा सका और इस तरह भारत ने जो दबाव बनाया था वह व्यर्थ गया। तीसरे, चौथे, और पांचवें टेस्ट में आस्ट्रेलिया ने आसान विजय प्राप्त की। मेलबोर्न पर खेले गये चौथे टेस्ट में विजय हजारे ने दोनों पारियों में शतक बनाया। उन्होंने पहली पारी में 116 तथा दूसरी में 145 रन बनाये। इस तरह एक ही टेस्ट की दोनों पारियों में शतक बनाने वाले वह पहले भारतीय बल्लेबाज बने। यह निश्चित ही एक बड़ी उपलब्धि थी तथा भारतीय क्रिकेट के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। आजादी के बाद यह किसी भी भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी की सबसे बड़ी निजी उपलब्धि थी।

चौथे टेस्ट के खत्म होने के बाद ही महात्मा गांधी की दुखद हत्या हो गयी। जब भारतीय टीम को इस हृदय विदारक समाचार की जानकारी मिली तो सभी खिलाड़ी सहसा टूट से गये। यह एक अप्रत्याशित घटना थी जिसने सभी को अंदर तक हिला दिया। दौरा अधूरा छोड़कर बीच में ही टीम के लौट आने की बात भी चली। लेकिन अंततः दौरा पूरा करने का फैसला लिया गया। ऐसी विषम परिस्थिति में ही टीम व उसके खिलाड़ियों के मनोबल एवं मानसिकता की परीक्षा होती है और भारतीय टीम इस कसौटी पर खरी उतरी। इतना जरूर हुआ कि शेष दौरे में सभी भारतीय खिलाड़ी शोक स्वरूप काला रिबन बांध कर खेले। राष्ट्रपिता के सम्मान स्वरूप यह

लाजिमी भी था।

विजय हजारे के अलावा दत्तू फड़कर दूसरे ऐसे भारतीय खिलाड़ी थे जिन्हें इस शृंखला में शतक बनाने का गौरव मिला। आस्ट्रेलिया के लिए रन मशीन कहे जाने वाले ब्रेडमेन ने टेस्ट शृंखला में 178.75 की औसत से 715 रन बनाये। लिंडवाल, मिलर और तोशॅक जैसे तेज मध्यमगति के गेंदबाजों के सामने मैच के दौरान विकेट को ढंकने की बजाय खुले रखने के नियम के कारण भारतीय खिलाड़ियों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। ब्रिसबेन में खेले गये पहले टेस्ट में भारतीय टीम का 58 व 98 के स्कोर पर आउट हो जाना उसकी मुसीबतों की कहानी कहने के लिए पर्याप्त है। संतोष यही रहा कि दत्तू फड़कर, वीनू मनकड़ और विजय हजारे इस दौरे के 'हीरो' के रूप में उभरे और इन खिलाड़ियों ने आजादी के बाद वर्षों तक भारतीय क्रिकेट की बहुमूल्य सेवा की। 1947 में ब्रेडमेन अपने यशस्वी एवं अभूतपूर्व खेल जीवन की निवृत्ति के कगार पर थे। मगर फिर भी वह इस टेस्ट शृंखला में सिर्फ चार बार ही आउट हुए और इन चार में से दो बार उन्हें हजारे ने आउट किया। हजारे ऑफ एवं लेग कटर्स करते थे परंतु अपने क्रिकेट गुरु महान लेग स्पिनर ग्रिमेट की सलाह पर उन्होंने गेंदबाजी की बजाय बल्लेबाजी पर ही अपना ध्यान केंद्रित करना बेहतर समझा। मनकड़ के रूप में भारत को एक महान ऑलराउंडर तथा फड़कर के रूप में एक मध्यम तेज गति का गेंदबाज तथा मध्यक्रम का उपयोगी बल्लेबाज मिला।

इस दौरे में भारतीय टीम की तेज गेंदबाजों को न खेल पाने की कमजोरी उजागर हुई। भारतीय बल्लेबाजों की समस्या थी तेज गेंदबाजों की गेंद की दिशा में जाकर न खेल पाना, बल्लेबाजों का तकनीकी दोष और उनका दोषपूर्ण 'फुट वर्क'। तेज गेंद, तेज विकेट और बारिश के कारण विकेट का बदलता स्वरूप—ये वे विपरीत परिस्थितियां थीं, जिनका आजादी के बाद आस्ट्रेलिया गयी भारतीय टीम को अपने पहले विदेशी दौरे में सामना करना पड़ा। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय अनुभव की प्राप्ति के लिए यह सब जरूरी था। अन्य क्रिकेट राष्ट्रों को भी तो आखिर विदेशी दौरों में नयी परिस्थितियों का सामना करना ही पड़ता था। मेहमान टीम का मेजबान देश में उसके विकेट पर खेलना क्रिकेट की गौरवशाली परंपरा का मूल अंग है। लेकिन चूंकि यह भारत का पहला आस्ट्रेलियाई दौरा था, अतः वहां के तेज एवं उछाल वाले विकेट और वातावरण टीम के खिलाड़ियों कि लिए समस्या बने रहे। कप्तान लाला अमरनाथ की निजी असफलता भी एक समस्या रही। दौरे के अन्य मैचों में शानदार शतक लगाने वाले अमरनाथ टेस्ट मैचों में बुरी तरह असफल हुए। इस दौरे की खेल शर्तों के अनुसार 40 ओवर के बाद नयी गेंद लेने का प्रावधान था। इस कारण 8 गेंद प्रति ओवर वाले 40 ओवर में नयी गेंद लेने का मतलब था 6 गेंद वाले ओवर के मान से 52 ओवर के बाद नयी गेंद लेना। इस नियम के कारण भारत के दोनों

लेग स्पिनर सी. एस. नायडू और अमीर इलाही नाकामयाब रहे। ब्रेडमेन की तकनीकबद्ध बल्लेबाजी और टेस्ट मंच से विदा लेने के पूर्व बेहद आकर्षक एवं प्रतिभावान वामहस्त बल्लेबाज नील हार्वे का टेस्ट मंच पर पदार्पण का दृश्य देखने का सौभाग्य इस टीम को मिला, यह भी एक विचित्र संयोग था। एक सितारा अस्त हो रहा था तो दूसरा उदय हो रहा था। जीवन की भांति क्रिकेट में भी ऐसा ही आगमन एवं प्रस्थान साथ-साथ चलता है। तभी तो क्रिकेट जीवन के इतने करीब है। लाला अमरनाथ की अगुआई में कंगारुओं के देश आस्ट्रेलिया गयी भारतीय टीम ऐसे ही कड़वे-मीठे अनुभव लेकर लौटी। संतोष यही था कि इंग्लैंड के अलावा अब एक अन्य देश आस्ट्रेलिया से भी भारत के क्रिकेट संबंध जुड़ गये थे।

4

भारत की पहली टेस्ट विजय

जिस तरह आजादी के बाद भारतीय टीम के विदेश दौरे का विशेष महत्व है उसी प्रकार भारत की पहली टेस्ट विजय का भी ऐतिहासिक महत्व है। इस विजय का महत्व इस कारण और बढ़ जाता है कि भारत को यह विजय आजादी के बाद ही मिली। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तो यह भारत की पहली टेस्ट विजय थी ही, 1932 से खेले गये सभी टेस्ट मैचों में भी यह उसकी पहली विजय थी। पहली पराजय का स्वाद जितना कड़वा होता है, पहली विजय का स्वाद उतना ही मीठा होता है। अपनी टेस्ट यात्रा शुरू करने के 19 वर्ष बाद वह दुर्लभ क्षण आया जिसका भारत को वर्षों से इंतजार था और लंबे इंतजार के बाद भारत को पहली टेस्ट विजय नसीब हुई।

यह घटना 1951-52 की है। उस साल नील हावर्ड व डोनाल्ड कार की अगुआई में इंग्लैंड की टीम भारत की यात्रा पर आयी थी। यह इंग्लैंड की टीम का भारत का दूसरा दौरा था। इससे पहले भारतीय टीम तीन बार इंग्लैंड की यात्रा पर जा चुकी थी। अतः दोनों देशों के बीच यह पांचवीं टेस्ट शृंखला थी। भारतीय टीम के कप्तान थे विजय हजारे। विजय मर्चेंट व लाला अमरनाथ की उपेक्षा करके जब हजारे को कप्तान बनाया गया तो उन्हें आश्चर्य ही हुआ। जब उनके नाम की घोषणा हुई तब वह इंग्लैंड में ही थे। अतः उन्होंने इस अवसर का पूरा लाभ उठाते हुए मेनचेस्टर व ओवल पर जाकर इंग्लैंड के सभी प्रमुख खिलाड़ियों का खेल देखा और उनकी खूबियों व खामियों पर पैनी नजर रखी। वह जानते थे कि इससे उन्हें अपनी टीम की खेल योजना बनाने में मदद मिलेगी। इस शृंखला में दोनों देशों के बीच पांच टेस्ट खेले जाने थे। भारत के आजाद होने के बाद यह पहला मौका था जब इंग्लैंड की टीम भारत यात्रा पर आ रही थी। अतः इस शृंखला के प्रति भारतवासियों में बेहद उत्साह था। प्रारंभिक मैच तो अभ्यास मैच जैसे थे। उनके बाद दिल्ली के

फिरोजशाह कोटला मैदान पर शृंखला का पहला टेस्ट खेला गया। भारतीय टीम के कप्तान हजारे 'टॉस' हार गये। इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। लेकिन भारत के दाहिने हाथ के लेग स्पिनर शिन्दे ने इंग्लैंड के बल्लेबाजों को खूब नचाया व परेशान किया। पहली पारी में इंग्लैंड की टीम 203 रनों पर ढेर हो गयी। शिन्दे ने अपने टेस्ट जीवन का श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए पारी में 91 रन देकर 6 विकेट लिये। जब भारत खेला तो मर्चेंट व हजारे के शतकों की बदौलत उसने 6 विकेट पर 418 के स्कोर पर अपनी पहली पारी घोषित कर दी। इस तरह भारत को पहली पारी में 215 रनों की बड़ी एवं महत्वपूर्ण बढ़त मिल गयी। उम्मीद थी कि पहली पारी की ही तरह दूसरी पारी में भी शिन्दे इंग्लैंड के बल्लेबाजों को परेशान करेंगे–खासकर तब जब विकेट धीरे-धीरे खराब होता जा रहा था। लेकिन बेहतरीन 'गुगली' के अपने पैने हथियार के बावजूद शिन्दे की गेंदबाजी में भी वही कमजोरी थी जो कि आमतौर पर अस्वाभाविक किस्म के कलाई से स्पिन कराने वाले गेंदबाजों में होती है। और वह थी दिशा एवं नियंत्रण की अनियमितता। लेकिन इस पारी में विकेट कीपर नाना जोशी व मर्चेंट की जगह क्षेत्ररक्षण कर रहे डी. के. गायकवाड़ ने कई आसान कैच छोड़ कर इंग्लैंड का काम आसान कर दिया। 6 विकेट पर 368 रन बनाकर इंग्लैंड यह टेस्ट 'ड्रा' करवाने में कामयाब रहा। बायें हाथ के बल्लेबाज ऐलन वाटकिंस ने करीब 9 घंटे क्रीज पर टिक कर 138 रन बनाये और भारत की जीत की उम्मीदों पर पानी फेर दिया।

दूसरा टेस्ट मुंबई के ब्रेबोर्न स्टेडियम में खेला गया। इस बार 'टॉस' हजारे ने जीता और काफी सोच विचार के बाद उन्होंने बल्लेबाजी करने का फैसला किया। विजय मर्चेंट घायल थे, अतः वह खेलने की स्थिति में नहीं थे। फड़कर भी 'अनफिट' थे। उनकी जगह सोहनी को टीम में लिया गया। गनीमत यही रही कि परिस्थिति की नजाकत को देखते हुए लाला अमरनाथ को लंबे अर्से बाद फिर से टीम में ले लिया गया। भारत के लिए पंकज राय व विजय हजारे दोनों ने शतक बनाये और भारत ने इस बार भी 9 विकेट पर 485 रनों का बड़ा स्कोर खड़ा करके अपनी पारी घोषित कर दी। इंग्लैंड ने इसके जवाब में अपनी पहली पारी में 456 रन बनाकर भारत को माकूल जवाब दिया। इंग्लैंड के लिए ग्रेवनी व वाटकिंस ने महत्वपूर्ण भागीदारी की। भारत की दूसरी पारी बुरी तरह लड़खड़ा गयी। सिर्फ 44 रनों पर उसके 7 प्रमुख विकेट गिर गये। यह क्रिकेट है और इसी अनिश्चितता में इसका आकर्षण एवं आन निहित है। पहली पारी में पांच सौ रनों के स्कोर के करीब पहुंचने वाली भारतीय टीम दूसरी पारी में एक-एक रन के लिए संघर्ष कर रही थी और आनन-फानन में उसके 7 विकेट आउट हो गये थे। लेकिन ऐसी विपरीत एवं चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में वीनू मनकड़ और सी. डी. गोपीनाथ ने साहस के साथ काम लिया। इसी कारण आखिरी दिन भारतीय पारी 208 रनों के सम्मानजनक स्कोर पर खत्म हुई। शेष समय

में इंग्लैंड ने 2 विकेट पर 55 रन बनाये और इस तरह पहले टेस्ट की भांति यह टेस्ट भी 'ड्रा' हो गया।

श्रृंखला के पहले दो टेस्ट 'ड्रा' रहे थे। तीसरा टेस्ट कलकत्ता के मशहूर ईडन गार्डन में खेला जाना था। इंग्लैंड ने पहले खेलते हुए पहली पारी में 342 रन बनाये और दूसरी पारी 5 विकेट पर 252 के स्कोर पर घोषित कर दी। इसके जवाब में भारत ने अपनी पहली पारी में 344 तथा दूसरी पारी में बिना कोई विकेट खोये 103 रन बनाये। भारत के लिए दत्तू फड़कर ने पहली पारी में शतक बनाया। कलकत्ता का विकेट इतना बेजान और नीरस था कि इस टेस्ट में दोनों ही टीमों की रन बनाने की गति बेहद धीमी रही। उत्तेजना के क्षण केवल वे ही रहे जब इंग्लैंड से ऑफ स्पिनर टेटरशॉल ने सिर्फ चार गेंदों में विजय हजारे व लाला अमरनाथ इन दो प्रमुख एवं अनुभवी भारतीय बल्लेबाजों को आउट करके तंबू में भेज दिया। वरना यह मैच उबाऊ ही रहा। भारत को इस टेस्ट में युवा लेग स्पिन-गुगली, फ्लिपर गेंदबाज सुभाष गुप्ते के रूप में एक उच्च स्तरीय स्पिनर जरूर मिला। बाद में गुप्ते ने विश्व के श्रेष्ठ लेग स्पिनर के रूप में ख्याति पायी। मनकड़ और गुलाम अहमद के साथ उन्होंने क्रिकेट जगत में भारत की स्पिन गेंदबाजी के जादू से तहलका मचा कर सभी को हतप्रभ किया। विजय मांजरेकर दूसरे ऐसे युवा खिलाड़ी थे जिन्होंने मध्यक्रम के बल्लेबाज के रूप में अपनी खेल तकनीक से प्रभावित किया। मगर परिणाम के लिहाज से यह टेस्ट भी 'ड्रा' रहा। भारत को पहली पारी में जो 2 रनों की छोटी सी बढ़त मिली वह उसके लिए बेहद उत्साहकारक रही।

अभी तक यद्यपि श्रृंखला के तीनों टेस्ट 'ड्रा' रहे थे मगर तीनों में भारत को पहली पारी में बढ़त मिली थी। अतः वह इंग्लैंड के मुकाबले बीस ही साबित हुई थी और उसका पलड़ा भारी रहा था। अब कानपुर के ग्रीन पार्क में श्रृंखला का चौथा टेस्ट खेला जाना था। विकेट नया था। यह टर्फ विकेट हाल ही में बना था और उस पर यह पहला ही टेस्ट खेला जा रहा था। यह उम्मीद पहले से ही थी कि विकेट स्पिन गेंदबाजी के लिए मददगार रहेगा। क्रिकेट पंडितों ने एक स्वर से ऐसी संभावना जतायी थी। इस कारण भारतीय टीम में चार स्पिन गेंदबाज शामिल किये गये जबकि इंग्लैंड की टीम ने लेफ्ट आर्म स्पिनर मेल्कम हिल्टन को श्रृंखला में पहली बार खिलाने का फैसला किया। इस टेस्ट में स्पिन गेंदबाजों ने ऐसा तांडव किया कि मैच सिर्फ तीन दिन में खत्म हो गया। टेटरशॉल और हिल्टन ने मिलकर भारतीय टीम की पहली पारी 121 रनों में समेट दी। इसके जवाब में इंग्लैंड ने अपनी पहली पारी में 203 रन बनाये जिनमें वाटकिंस के बहुमूल्य 66 रन उल्लेखनीय थे। गुलाम अहमद और मनकड़ ने उम्दा गेंदबाजी की लेकिन ऐसे विकेट पर जब स्पिन गेंदबाज कहर बरपा रहे हों 82 रनों की बढ़त महत्वपूर्ण एवं निर्णायक रही। दूसरी पारी में भारतीय टीम 157 के स्कोर पर आउट हो गयी, जिनमें 60 साहसिक रन तो अकेले हेमू अधिकारी

के ही थे। इंग्लैंड ने सिर्फ 2 विकेट पर आवश्यक 76 रन बनाकर यह टेस्ट 8 विकेट से जीत लिया। खास बात यह रही कि पहले दो टेस्ट में शतक बनाने वाले टीम के प्रमुख बल्लेबाज और कप्तान विजय हजारे इस टेस्ट की दोनों पारियों में बिना कोई रन बनाये शून्य पर ही आउट हो गये। देखिए क्रिकेट किस तरह हिसाब बराबर कर देता है। जब देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है जब लेता है तो सब कुछ ले लेता है। आज का नायक कल खलनायक बन जाता है। कलकत्ता के सपाट व निर्जीव विकेट पर असफल रहने वाले सुभाष गुप्ते को इस टेस्ट में न खिलाना शायद एक बड़ी भूल थी। चार स्पिनर्स को टीम में लेते वक्त गुप्ते को अनदेखा करना यकीनन एक नीतिगत भूल थी। वरना मुमकिन है कि इस टेस्ट का परिणाम शायद भिन्न होता। एक लेग स्पिनर कभी भी मैच का रुख बदल सकता है। तभी तो उसे मैच जिताने वाला गेंदबाज कहते हैं।

शृंखला के चार टेस्ट खेले जा चुके थे और इंग्लैंड की टीम 1-0 से आगे थी। अब शृंखला का पांचवां और अंतिम टेस्ट खेला जाना था। इंग्लैंड को जहां 1-0 की बढ़त का मनोवैज्ञानिक लाभ प्राप्त था वहीं भारत के सामने भी यह टेस्ट जीत कर शृंखला बराबर कर पाने का सुनहरा मौका था। प्रयास भारत को ही करना था वरना इंग्लैंड शृंखला जीत ही चुका था। वह यह टेस्ट भी जीतकर अपनी जीत का अंतर जरूर बढ़ा सकता था। भारतीय टीम को उम्मीद थी कि वह चेन्नई में खेले जाने वाले शृंखला के पांचवें व अंतिम टेस्ट में इंग्लैंड को हरा देगी। इस टेस्ट में इंग्लैंड के कप्तान नील हावर्ड अस्वस्थ थे, अतः कप्तानी उप-कप्तान डोनाल्ड कार ने की। कार ने 'टॉस' जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। पहली पारी में इंग्लैंड की टीम 266 रन बनाकर आउट हो गयी। मनकड़ ने बेहतरीन गेंदबाजी का प्रदर्शन किया और घातक लेफ्ट आर्म स्पिन से 55 रन देकर 8 विकेट लिये। इसके जवाब में भारत ने अपनी पहली पारी 9 विकेट पर 457 रन बनाकर घोषित कर दी। इस पारी में पंकज राय व पॉली उमरीगर का महत्वपूर्ण योगदान रहा। दोनों ने ही शतक बनाये। विडंबना देखिए कि उमरीगर पहले चार टेस्ट मैचों में असफल रहे थे और इस कारण पांचवें व अंतिम टेस्ट में उन्हें टीम में ही नहीं लिया गया था। लेकिन ऐन वक्त अधिकारी के घायल हो जाने के कारण उमरीगर टीम में आ गये और उन्होंने जरूरत के समय शतक ठोक दिया। कहते भी हैं कि 'ए सिक मैन सेव्स द साइड'—यानी बीमार व्यक्ति ही अपनी टीम को बचाता है। उमरीगर ने इस मौके का पूरा फायदा उठाया और एक नायाब पारी खेल कर अपनी उपयोगिता सिद्ध की। क्रिकेट में आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे कि जो खिलाड़ी मूल टीम में न हो और जिसे अकस्मात टीम में ले लिया जाये वह बाद में टीम का स्थायी सदस्य बन जाये, और जिसकी जगह उसे लिया जाये उसे हमेशा के लिए अपना स्थान खोना पड़े। बहरहाल चौथे दिन का खेल बेहद रोमांचक एवं घटना-प्रधान रहा। गुलाम अहमद



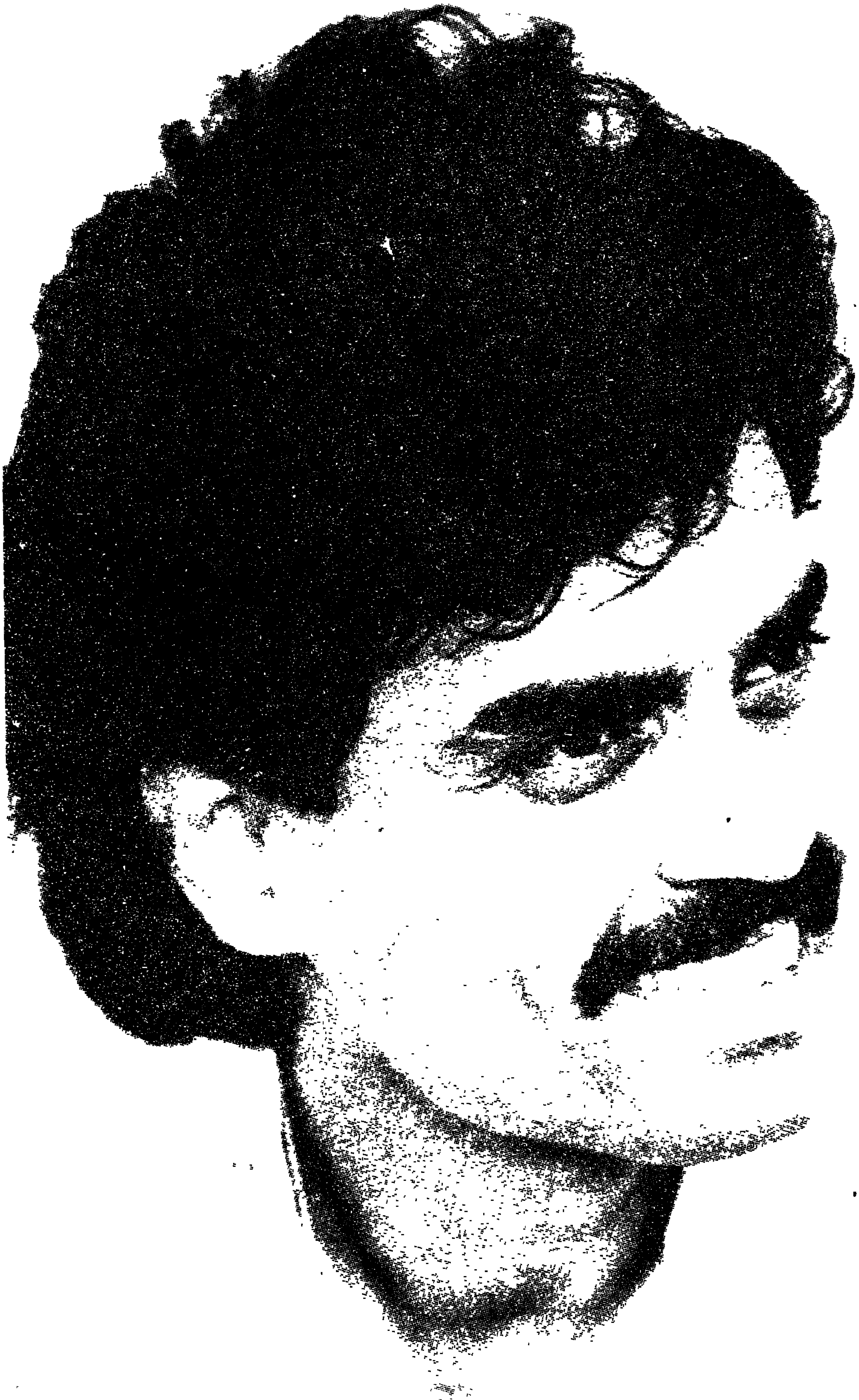
[illegible]



विजय हजारे



ई. प्रसन्ना



दिलीप वेंगसरकर



कपिल देव और नवजोत सिंह सिद्धू

और मनकड़ फिर एक बार इंग्लैंड के बल्लेबाजों पर चढ़ बैठे। वे उन पर इस कदर हावी हुए कि सभी बल्लेबाज चौकड़ी भूल गये। इंग्लैंड के खिलाड़ी हमेशा से अपनी व्यावसायिक शैली एवं संघर्ष के लिए विख्यात रहे हैं। लेकिन उनकी सभी खूबियां उस दिन जवाब दे गयीं। भारतीय टीम का क्षेत्ररक्षण भी चुस्त रहा वरना उसकी टीम इसी विभाग में कमजोर होने से नुकसान उठाती आयी थी। अच्छे क्षेत्ररक्षण से मिले सहयोग ने इन स्पिन गेंदबाजों का काम और आसान कर दिया और इंग्लैंड की टीम अपनी दूसरी पारी में 183 रनों पर ढेर हो गयी। और इस तरह भारत अपने टेस्ट इतिहास का पहला टेस्ट एक पारी व आठ रनों से जीत गया। यह प्रभावशाली जीत थी। अपनी इस पहली टेस्ट विजय दर्ज कराने वाली भारतीय टीम में जहां एक ओर मुश्ताक अली व अमरनाथ जैसे वरिष्ठ एवं अनुभवी खिलाड़ी थे वहीं दूसरी ओर पंकज राय, गोपीनाथ, दिवेचा व फड़कर जैसे प्रतिभावान युवा खिलाड़ी भी थे। कभी भारत पर शासन करने वाले इंग्लैंड की टीम को उसी के राष्ट्रीय खेल क्रिकेट में हराकर आजाद भारत के खिलाड़ियों को कितनी खुशी हुई होगी और उन्होंने खुद पर व दूसरों ने उन पर कितना गर्व महसूस किया होगा इसकी कल्पना आप आसानी से कर सकते हैं।

अभी तक भारतीय खिलाड़ियों का निजी प्रदर्शन तो शानदार रहा था लेकिन एक टीम के रूप में भारत अपनी साख नहीं बना पाया था। जीतने के बाद अपने आप चर्चा होने लगती है। खासकर इंग्लैंड के खिलाफ मिली जीत तो विशेष रूप से चर्चित होती है। इस बार भी ऐसा ही हुआ। निजी प्रदर्शन के संदर्भ में आप 1926 में गिलिगन की एम. सी. सी. टीम के खिलाफ मुंबई के हिंदू जिमखाना के मैदान पर कर्नल नायडू के 116 मिनट में 11 छक्कों व 14 चौकों की मदद से बनाये गये 156 रनों का स्मरण कीजिए। फिर 1933-34 में लाला अमरनाथ का पहला टेस्ट शतक, 1936 में मर्चेंट-मुश्ताक की ओल्ड ट्रेफर्ड टेस्ट में पहले विकेट के लिए 204 रनों की भागीदारी, विजय हजारे के आस्ट्रेलिया में एक ही टेस्ट की दोनों पारियों में शतक, निसार की कहर बरसाती गेंदबाजी तथा मनकड़ व फड़कर का 'ऑलराउंड' प्रदर्शन—ये सभी निजी प्रदर्शन वाकई गौरवपूर्ण थे। इनके कारण समूचे क्रिकेट जगत का ध्यान भारत की तरफ आकर्षित हुआ। परंतु चेन्नई में जब भारतीय टीम को अपनी पहली टेस्ट विजय नसीब हुई तो पूरे देश में उत्सवी माहौल छा गया। पहली विजय का स्वाद भी विशिष्ट होता है। पटाखे व आतिशबाजी द्वारा लोग अपनी खुशी का इजहार कर रहे थे। अब भारतीय क्रिकेट प्रेमियों को ही नहीं, विदेशी टीकाकारों को भी विश्वास हो गया कि भारत टेस्ट मैच जीत सकता है। अतः एक टीम के रूप में उसे हल्के-फुल्के ढंग से नहीं लिया जा सकता क्योंकि भारत भी एक ताकतवर क्रिकेट देश बनने की प्रक्रिया में है। और भारतीय टीम के कप्तान विजय हजारे के लिए तो 10 फरवरी, 1952 का दिन तो अविस्मरणीय था ही। हजारे को भले

ही लोग सुरक्षात्मक शैली वाला कप्तान मानते हों और उनकी राय में भले ही हजारे एक दूरदर्शी, कल्पनाशील और मैच जिताने के लिए जोखिम उठाने व प्रयोग करने का साहस करने वाले कप्तान न हों। इस बात से कौन इनकार करेगा कि उन्हीं के नेतृत्व में भारत ने अपना पहला टेस्ट जीता तथा एक विश्वसनीय व मजबूत मध्यक्रम बल्लेबाज के रूप में हजारे भारत की किसी भी सर्वकालिक श्रेष्ठ टीम में ससम्मान स्थान पाने के हकदार हैं।

5

भारत विरुद्ध इंग्लैंड

इंग्लैंड पहला देश था जिसके खिलाफ खेल कर भारत ने अपनी टेस्ट यात्रा शुरू की। अतः पिछले पचास वर्षों के दौरान भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट शृंखला में कैसा प्रदर्शन किया इसकी विवेचना और मूल्यांकन से प्रारंभ करना औचित्यपूर्ण होगा। इस चर्चा में भारत में खेली गदी शृंखलाएं भी शामिल हैं और भारत द्वारा इंग्लैंड में खेली गयी शृंखलाएं भी। 1980 के स्वर्णजयंती टेस्ट को मिलाकर 1932 से लेकर 1996 तक दोनों देशों के बीच कुल जमा 23 टेस्ट शृंखलाएं खेली गयी हैं। इनमें से 13 इंग्लैंड में खेली गयीं और 10 भारत में।

आजादी के बाद भारत व इंग्लैंड के बीच कुल 19 टेस्ट शृंखलाएं आयोजित हुईं। ये टेस्ट शृंखलाएं 1951-52 से लेकर 1996 के दौरान खेली गयीं, जिनमें 1980 में मुंबई में खेला गया स्वर्णजयंती टेस्ट भी शामिल है। इन शृंखलाओं में से 10 इंग्लैंड में खेली गयीं और 9 भारत में। जहां तक परिणाम का सवाल है 19 शृंखलाओं में से 11 में इंग्लैंड जीता और 6 में भारत जबकि 2 शृंखलाएं 'ड्रा' रहीं। भारत इंग्लैंड के खिलाफ इंग्लैंड में तो सिर्फ 2 शृंखलाएं ही जीत पाया है जबकि भारत में वह 4 शृंखलाएं जीता है। जाहिर है भारतीय टीम का प्रदर्शन जितना अच्छा अपने देश में रहा है उतना अच्छा देश के बाहर नहीं रह पाया है। अपने ही देश के धीमे व धीमे घुमाव वाले विकेट पर खेलना भारतीय खिलाड़ियों को हमेशा रास आया है। तेज, उछाल वाले व वर्षा से गीले हो जाने के बाद सूखते विकेट पर खेलना उन्हें कभी नहीं सुहाया। और इंग्लैंड का वातावरण, तेज चलती हवा, मौसम का पल-पल में बदलता मिजाज तथा वहां के दर्शक व अखबार अच्छी-अच्छी टीमों के समीकरण बदल देते हैं। फिर भला भारत की क्या बिसात ?

अंग्रेजों के शिकंजे से मुक्ति मिलने के बाद ही भारत को पहली टेस्ट विजय मिली थी। लेकिन 1951-52 की यह शृंखला 1-1 से बराबर रही थी और यह भी

एक संयोग ही है कि भारत को इंग्लैंड के खिलाफ शृंखला जीतने का गौरव भी आजादी के बाद ही मिला। यह बात 1961-62 की है जब भारत ने घरेलू शृंखला में इंग्लैंड को 2-0 से परास्त किया था। 5 टेस्ट मैचों की शृंखला खेलने आयी इंग्लैंड की टीम के कप्तान थे टेड डेक्सटर और इस ऐतिहासिक शृंखला में भारतीय टीम का नेतृत्व किया था कंट्रेक्टर ने। इस शृंखला के मुंबई, कानपुर और दिल्ली में खेले गये पहले तीन टेस्ट तो 'ड्रा' रहे थे। तत्पश्चात कलकत्ता में खेले गये चौथे टेस्ट में भारत ने इंग्लैंड को 187 रनों से हराने और शृंखला में 1-0 से बढ़त ले लेने के बाद चेन्नई में खेले गये शृंखला के पांचवें व अंतिम टेस्ट में इंग्लैंड को 128 रनों से हराकर इंग्लैंड से पहली बार टेस्ट शृंखला जीत ली और वह भी 2-0 के अंतर से। यह उपलब्धि इस कारण भी उल्लेखनीय थी क्योंकि 1952 व फिर 1959 में इंग्लैंड के दौरे पर भारत को पराजय का मुंह देखना पड़ा था। खासकर 1952 के दौरे में मेनचेस्टर पर खेले गये शृंखला के चौथे टेस्ट में तो भारतीय टीम पहली पारी में 58 व दूसरी में 82 के दयनीय स्कोर पर आउट हुई थी। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज फ्रेडी ट्रूमेन की तूफानी गेंदें तो मानो आग उगल रही थीं। ट्रूमेन ने 31 रनों पर 8 विकेट लेकर तो भारत की बल्लेबाजी की कमर ही तोड़ दी थी। वह जमाना था लेन हटन, पीटर मे, काउड्री जैसे धाकड़ बल्लेबाजों व ट्रूमेन जैसे तूफानी, बेडसर जैसे 'सीमर' तथा जिमलेकर व लॉक जैसे स्पिन गेंदबाजों का जिनकी सेवाएं इंग्लैंड को प्राप्त थीं।

यह पहला मौका था जब भारत किसी भी पारी में सैकड़ा भी पूरा नहीं कर पाया। हजारे, उमरीगर, मनकड़ व फड़कर के टीम में होते हुए भी भारतीय टीम का प्रदर्शन इतना दयनीय व शर्मनाक रहा था। लेकिन जब से अब तक दस बरस गुजर गये थे। 1961-62 की इस पहली रबड़ विजय से टेस्ट बिरादरी में भारत की साख व पूछ-परख बढ़ी। विजय मांजरेकर, एम. एल. जयसिम्हा, मंसूर अली खां पटौदी उर्फ टाइगर पटौदी जैसे प्रतिभावान युवा बल्लेबाजों के उभरकर आने और शृंखला में शतक बनाने से जहां भारत की बल्लेबाजी की ख्याति बढ़ी वहीं सलीम दुर्रानी, बापू नाडकर्णी व चंदू बोर्डे जैसे प्रतिभाशाली ऑलराउंडर भी सामने आये। डेक्सटर व बैरिंगटन जैसे जुझारू बल्लेबाजों से लैस तथा अपने व्यावसायिक नजरिये के लिए विख्यात इंग्लैंड की टीम यह शृंखला हार गयी। भारतीय टीम ने अपने संघर्षमयी शुरुआती दौर को पार करके अब निश्चित ही तरक्की कर ली थी। उसका क्षेत्ररक्षण भी पहले की तुलना में अधिक चुस्त व चौकन्ना था। परिणाम सामने था।

नॅरी कंट्रेक्टर के नेतृत्व में भारत की यह विजय ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण तो थी ही मगर चूंकि भारत ने यह शृंखला अपने घर में घरेलू मैदानों और दर्शकों के सामने खेलकर जीती थी, अतः इससे देश में क्रिकेट का माकूल वातावरण बना तथा देश में क्रिकेट के प्रति उत्साह एवं रुझान बढ़ा। पर इंग्लैंड के समीक्षक इंग्लैंड में किये गये प्रदर्शन को ही अहमियत देते हैं, इस कारण वे इस विजय को सौ फीसदी

सम्मान नहीं दे रहे थे। अनेक तो इसे शक की नजर से देख रहे थे। परंपरावादी इंग्लैंड के दर्शकों की निगाह में तो उनकी नजरों के सामने घटी घटना ही अति महत्वपूर्ण होती आयी है। फिर भले ही वह विंबल्डन टेनिस हो या 'विसडन' के लिए वर्ष के श्रेष्ठ खिलाड़ियों के चयन का मसला। वे इंग्लैंड के बाहर कुछ देखना ही नहीं चाहते।

1971 में वेस्टइंडीज के दौरे पर जाकर वेस्टइंडीज के खिलाफ खेलकर तथा विदेश में अपनी पहली टेस्ट शृंखला जीतने के बाद जब भारत की टीम इंग्लैंड के दौरे पर गयी और उसने इंग्लैंड में भी उसे पहली बार हराकर 1-0 से शृंखला जीत ली तो इंग्लैंड के दर्शकों एवं समीक्षकों की आंखें खुलीं। तभी उन्हें भारत की क्रिकेट क्षमता का सही अंदाज हो पाया। अजीत वाडेकर की अगुआई में वेस्टइंडीज व इंग्लैंड में मिली इन सफलताओं ने भारत का सम्मान तो बढ़ाया ही, वाडेकर को भी सफल कप्तान के रूप में स्थापित किया। वाडेकर, कर्नल नायडू या टाइगर पटौदी जैसे आक्रामक एवं जानकार कप्तान भले ही न रहे हों, वे भाग्यशाली एवं सफल कप्तान तो रहे ही हैं जैसे वह बाद में सफल मैनेजर भी साबित हुए। यह तब की बात है जब भारत ने 1990 से 1996 के बीच इंग्लैंड, वेस्टइंडीज, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड व श्रीलंका के खिलाफ अजहरुद्दीन के नेतृत्व में या तो टेस्ट शृंखलाएं जीतीं या बराबर रखीं।

1971 की शृंखला खेलने वाली भारतीय टीम में 'लिटिल मास्टर' के रूप में विख्यात नाटे कद के दो विश्व स्तरीय बल्लेबाज सुनील गावसकर एवं गुंडप्पा विश्वनाथ के अलावा दिलीप सरदेसाई व खुद कप्तान वाडेकर तो थे ही, विश्व स्तरीय स्पिन चौकड़ी ऑफ स्पिनर प्रसन्ना व वेंकटराघवन, फ्रीक गेंदबाज चंद्रशेखर, व लेफ्ट आर्म स्पिनर बिशन सिंह बेदी भी थे। इन चारों स्पिनर्स को वाडेकर, आबिद अली, एकनाथ सोलकर व वेंकटराघवन के चुस्त नजदीकी क्षेत्ररक्षण की सहायता मिली जिसके कारण सामान्यतया नामुमकिन से कैच भी लिए जाते रहे। कुल मिलाकर यह भारतीय टीम एक आदर्श टीम हो सकती थी यदि इसमें दो स्तरीय मध्यम तेज गेंदबाज और होते। यही एक मात्र कमी थी। इस कमी को आबिद अली व सोलकर बखूबी पूरा करते रहे। पूर्व टेस्ट खिलाड़ी व भारतीय सेना में कर्नल रहे हेमू अधिकारी टीम के मैनेजर थे जो कि एक बेहद अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे।

यह शृंखला इंग्लैंड के क्रिकेट मौसम के उत्तरार्ध में खेली जा रही थी। इस कारण बारिश द्वारा व्यवधान पैदा किए जाने की आशंका तो थी ही, और इसके लिए दोनों ही टीमें मानसिक रूप से तैयार भी थीं। लार्ड्स पर शृंखला का पहला टेस्ट खेला गया जो 'ड्रा' रहा। मैच में बड़ी दिलचस्प स्थिति निर्मित हुई। अंतिम क्षणों में भारत के 2 विकेट शेष बचे थे और उसे जीतने के लिए 38 रनों की जरूरत थी। पहली पारी में 9 रनों की बढ़त मिली ही थी। भारतीय खिलाड़ियों का मनोबल ऊंचा था। हार-जीत के इतने करीब आकर मैच 'ड्रा' हो गया। इसी प्रकार मैनचेस्टर

पर खेला गया दूसरा टेस्ट भी 'ड्रा' रहा। बरसात के कारण यह टेस्ट केवल चार दिन ही खेला जा सका। इंग्लैंड ने पहली पारी में 386 रन बनाये और दूसरी में 3 विकेट पर 245 रन बनाकर पारी घोषित कर दी। इसके जवाब में भारत ने पहली पारी में 212 व दूसरी में 3 विकेट पर 65 रन बनाये। इस टेस्ट के पांचवें और अंतिम दिन का खेल तो बारिश व खराब मौसम के कारण खेला ही नहीं जा सका। शृंखला तीन टेस्ट मैचों की थी। पहले दोनों टेस्ट 'ड्रा' रहे थे। इस कारण ओवल पर खेले जाने वाले तीसरे व अंतिम टेस्ट का महत्व स्वतः ही बढ़ गया था। यह टेस्ट निर्णायक था, अतः इस पर सभी की निगाहें टिकी हुई थीं।

पहले दोनों टेस्ट मैचों की ही तरह इस टेस्ट मैच में भी इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी की और पहली पारी में 355 रनों का स्कोर खड़ा किया। यह स्कोर यदि अधिक नहीं था तो कम भी नहीं था। इसे संतोषप्रद तो कहा ही जा सकता है। पहली पारी में इतने रन बनाने के बाद टीम तभी हार सकती है जब वह दूसरी पारी में बहुत ही खराब खेले। मैच के दूसरे दिन तो वर्षा के कारण खेल ही नहीं हो पाया। भारतीय टीम अपनी पहली पारी में 274 रना बनाकर आउट हो गयी और इस तरह इंग्लैंड की टीम को 71 रनों को महत्वपूर्ण बढ़त मिली। लेकिन अपनी दूसरी पारी में इंग्लैंड की टीम केवल 101 रनों पर आउट हो गयी। भारत को अब अंतिम पारी खेलते हुए मैच जीतने के लिए 173 रनों की जरूरत थी। और भारत ने सिर्फ 6 विकेट के नुकसान पर 174 रन बनाकर ओवल टेस्ट 4 विकेट से जीत कर शृंखला भी जीत ली। 1-0 से शृंखला जीतना और वह भी इंग्लैंड में तथा पहली पारी में 71 रनों से पीछे रहने के बाद व वर्षा के कारण बार-बार बदलते मौसम में, वास्तव में एक गौरवपूर्ण घटना थी। इंग्लैंड के कप्तान मशहूर स्पिन गेंदबाज रे इलिंगवर्थ के लिए यह एक बुरा झटका था। इंग्लैंड क्रिकेट पंडितों ने अपनी आंखों के सामने अपनी टीम को दूसरी पारी में ताश के पत्तों की तरह बिखरते व भारतीय स्पिन गेंदबाजों के सामने असहाय होकर घुटने टेकते हुए देखा। अपने ही देश में उनकी टीम भारत के खिलाफ न सिर्फ टेस्ट बल्कि शृंखला भी हारी थी। दिलचस्प बात यह रही थी कि इस टेस्ट में न तो दोनों ही टीमों का कोई भी खिलाड़ी शतक बना पाया और न ही कोई बड़ी भागीदारी हुई। इंग्लैंड के लिए जेमसन व एड्रिच के बीच दूसरे विकेट की भागीदारी में बने 106 रन ही इस टेस्ट की सबसे बड़ी भागीदारी थी। जिस दिन भारत ने यह टेस्ट जीता उस दिन गणेश चतुर्थी थी और भारत के लोग श्रद्धाभाव से उस दिन गणेश पूजन में लगे हुए थे। मंगलमूर्ति गणेश की स्थापना के साथ ही शुभ संकेत मिलने लगे थे। भारतीय टीम के मैनेजर कर्नल अधिकारी ने कहा भी कि पांचवें दिन सबेरे ही उन्हें अपने होटल के कमरे की खिड़की से बाहर जाता एक हाथी दिखा और तभी उन्हें विश्वास हो गया कि गणेश चतुर्थी के दिन गणेशजी के प्रतीक हाथी का दिखना भारत को उस दिन मिलने वाली विजय के पूर्वाभास का

संकेत था। अधिकारी पुणे और वडोदरा में वर्षों रहे हैं; उन्हें पता है वहां गणेश उत्सव कितने विशाल पैमाने पर मनाया जाता है। उन्हें यह देख कर पूरा विश्वास हो गया था कि भारत जरूर जीतेगा। और यही हुआ भी।

1971 का यह प्रदर्शन अब तक इंग्लैंड के खिलाफ भारत का श्रेष्ठ प्रदर्शन है। इस सफलता की वजह थी उसकी धारदार एवं असरदार गेंदबाजी और उसके चुस्त नजदीकी क्षेत्ररक्षकों से गेंदबाजों को मिला वांछित सहयोग। गावसकर व वाडेकर दोनों ने इस दौरे में अपने एक-एक हजार रन पूरे किये। अब लोगों की यह गलतफहमी दूर हो गयी कि भारतीय टीम सिर्फ अपने घर में ही अच्छा प्रदर्शन कर सकती है और विदेशी भूमि पर लड़खड़ा जाती है तथा तेज उछाल वाले व 'मूवमेंट' वाले विकेट पर तथा वर्षा बाधित माहौल में खेल पाना उसके बस की बात नहीं है। अतः यह उपलब्धि भारत के क्रिकेट इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जायेगी। तभी तो 1971 के वर्ष को भारतीय क्रिकेट का स्वर्ण युग कहते हैं। इसके बाद भारतीय टीम की ऐसी धाक जमी कि समूचे क्रिकेट जगत में वह लोकप्रिय हो गयी। टीम के वापस लौटने पर उसका स्थान-स्थान पर सम्मान एवं स्वागत किया गया। इस विजय को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से इंदौर में नौलखा पुल पर आगरा-मुंबई राजमार्ग पर एक विशालकाय क्रिकेट बल्ला स्थापित किया गया जिस पर वेस्टइंडीज व इंग्लैंड के दौरे पर गयी भारतीय टीम के खिलाड़ियों के नाम अंकित हैं। यह बल्ला दूर से ही नजर आता है और खिलाड़ियों के नाम भी दूर से ही पढ़े जा सकते हैं।

1972-73 में टोनी लुइस के नेतृत्व में इंग्लैंड की टीम भारत के दौरे पर आयी। पांच टेस्ट मैचों की यह शृंखला भारत ने 2-1 से जीत ली। 2 टेस्ट 'ड्रा' रहे। इंग्लैंड ने दिल्ली में खेला गया पहला व एकमात्र टेस्ट जीता जबकि भारत ने कलकत्ता व चेन्नई के टेस्ट जीते। कानपुर व मुंबई टेस्ट 'ड्रा' रहे। यद्यपि दिल्ली टेस्ट में भारत हारा लेकिन इसके बावजूद जिस लय में चंद्रशेखर ने इस टेस्ट में गेंदबाजी की और 80 रन देकर 8 विकेट लिए उसकी जितनी तारीफ की जाय कम है। इस टेस्ट की चंद्रा की इस गेंदबाजी को भारतीय गेंदबाजी के श्रेष्ठ प्रदर्शनों में शुमार किया जाता है। इस पूरी शृंखला में चंद्रशेखर ने 35 विकेट लिए जो कि किसी भी भारतीय गेंदबाज द्वारा इंग्लैंड के खिलाफ खेली गयी टेस्ट शृंखला में सर्वाधिक विकेट भी हैं और श्रेष्ठ प्रदर्शन भी है। 1974 में जब वाडेकर के ही नेतृत्व में भारतीय टीम इंग्लैंड गयी तो वह शृंखला के तीनों टेस्ट मैचों में पराजित हुई व शृंखला 3-0 से खोकर लौटी। मेनचेस्टर टेस्ट में भारत 113 रनों से हारा और सुनील गावसकर का शतक टीम के कोई काम न आया। हां इससे आंशिक संतोष अवश्य मिला व पराजय की कड़वाहट कम जरूर हुई। तीसरे टेस्ट में तो भारत को पारी की हार का सामना करना पड़ा। आप प्रश्न कर सकते हैं कि जब टीम के अधिकांश खिलाड़ी वे ही थे जो 1971 तथा 72-73 में खेली गयी शृंखलाओं में खेले थे, फिर भारतीय टीम का प्रदर्शन इतना

खराब क्यों रहा और उसके प्रदर्शन में यह फर्क क्यों व कैसे आ गया ? शायद अन्य कारणों के अलावा एक कारण यह भी रहा हो कि उतार चढ़ाव के दौर खेल की एक सामान्य प्रक्रिया है और चूंकि भारत का यह दौरा क्रिकेट सत्र के प्रारंभ में था, अतः तेज हवा व सर्दी की वजह से खिलाड़ियों का प्रदर्शन प्रभावित हुआ और वे तालमेल नहीं बिठा पाये। परिणाम की अनिश्चितता और अच्छा बुरा खेल ही तो क्रिकेट को आकर्षक बनाते हैं। देश में भी इस असफलता की तीखी प्रतिक्रिया हुई और समीक्षकों ने स्वीकार किया कि टीम भले ही लगभग वही हो लेकिन इसमें वह बात नहीं रही थी जो 1971 में नजर आयी थी। 1976-77 में जब इंग्लैंड की टीम साढ़े छः फुट के टोनी ग्रेग के नेतृत्व में भारत आयी तो पांच टेस्ट मैचों की इस घरेलू शृंखला में भी भारत का प्रदर्शन कमजोर बना रहा। अब दृश्य बदलता जा रहा था। प्रसन्ना व चंद्रशेखर अपने खेल जीवन के उतार पर थे। अब बिशन बेदी भारत के कप्तान थे। भारतीय टीम यह शृंखला 3-1 से हार गयी जबकि मुंबई में खेला गया अंतिम टेस्ट 'ड्रा' रहा। जब टीम का प्रदर्शन लगातार खराब रहे तो कप्तान व टीम चयन को लेकर अनेक तरह के विवाद उठ खड़े होते हैं। 1979 में भी नेतृत्व को लेकर ऐसा विवाद उठा कि उसके मद्देनजर ऑफ स्पिनर वेंकटराघवन को भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया जबकि मेजबान इंग्लैंड के नेतृत्व की बागडोर संभाली माइक ब्रेयरली ने। चार टेस्ट तो 'ड्रा' रहे जबकि एजबेस्टन में खेले गये पहले ही टेस्ट में इंग्लैंड ने भारत को एक पारी से पराजित किया और इस तरह शृंखला भी जीत ली। लेकिन गावसकर ने ओवल पर खेले गये चौथे टेस्ट में यादगार 221 रन बनाने का गौरव प्राप्त किया। इस टेस्ट में आखरी पारी खेलते हुए व 439 के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत ने 8 विकेट पर 429 रन बनाये और सभी की वाह-वाही लूटी। क्रिकेट में ऐसी परिस्थिति में कम ही टीमें ऐसा सकारात्मक खेल खेल पायी हैं। भारत के इस इंग्लैंड दौरे की यह एक बड़ी उपलब्धि रही।

1980 में मुंबई में खेले गये स्वर्णजयंती टेस्ट में भारतीय टीम का नेतृत्व किया गुंडप्पा विश्वनाथ ने जबकि इंग्लैंड के कप्तान थे माइक ब्रेयरली। परिणाम की दृष्टि से देखें तो इंग्लैंड यह टेस्ट आसानी से 10 विकेट से जीत गया। लेकिन यह टेस्ट परिणाम की अपेक्षा भारतीय कप्तान विश्वनाथ की खेल भावना के लिए अधिक जाना जाता रहेगा। हुआ यूं कि भारत के पहली पारी के स्कोर 242 रनों का पीछा कर रहे इंग्लैंड के 5 विकेट जल्दी ही गिर गये और भारत की टीम मैच में हावी होने लगी। तभी इयान बॉथम व टेलर ने भारतीय आक्रमण का डटकर प्रतिकार करते हुए मजबूत भागीदारी की। ऐसी नाजुक स्थिति में विश्वनाथ ने स्लिप में टेलर का लगभग जमीन से लगता हुआ एक मुश्किल कैच लिया मगर अपील नहीं की। टीम के अन्य सदस्यों ने जोरदार अपील की और अंपायर ने टेलर को आउट दे दिया। जब टेलर जा रहे थे, विश्वनाथ अंपायर के पास गये और उन्होंने कहा कि गेंद जमीन

पर टप्पा खा चुकी थी, अतः टेलर आउट नहीं है। उन्होंने अंपायर से अपना निर्णय बदलने का अनुरोध किया। पैवेलियन की ओर जाते हुए टेलर को वापस बुलाया गया और फिर बॉथम तथा टेलर के बीच छठे विकेट के लिए 171 रनों की भागीदारी हुई तथा फिर तो मैच का नक्शा ही पलट गया। कहां तो भारतीय टीम पहली पारी में बढ़त लेती लग रही थी और कहां इस घटना के बाद इस बड़ी भागीदारी से मैच के सूत्र इंग्लैंड के हाथों में पहुंच गये। यह भागीदारी ही निर्णायक साबित हुई वरना मैच का परिणाम कुछ और होता। लेकिन विश्वनाथ ने हार जीत की परवाह नहीं की। जो सच था वह बताकर अपनी सच्ची खेल भावना का परिचय दिया। नतीजतन भारत यह टेस्ट 10 विकेट से हार गया। मगर सभी ने विश्वनाथ की दिल खोलकर तारीफ की। हार जीत से परे भी कोई चीज है और वह है इस महान खेल की शराफत की सीख जो अब अपवादस्वरूप ही मिलती है। आजादी के बाद भारत ही क्या, अन्य क्रिकेट देशों में भी ऐसी अद्‌भुत खेल भावना व सदाशयता के उदाहरण कम ही मिलेंगे। याद रखिए तब कैरी पैकर की व्यावसायिक चकाचौंध में हार-जीत इतना ज्यादा महत्वपूर्ण हो गयी थी कि खिलाड़ी जीतने व हार से बचने के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार रहते थे और सभी तरह के हथकंडे अपनाते थे। इस टेस्ट में हरफनमौला बॉथम ने अद्‌भुत ऑलराउंड प्रदर्शन किया। उन्होंने मैच में 106 रन देकर 13 विकेट लिये और 114 रन भी बनाये। ऐसे में जब भाईचारा व सद्‌भावना गये गुजरे जमाने की बात हो गयी थी, विश्वनाथ का यह साहसिक कृत्य ऐतिहासिक भी था और दूसरों के सामने एक आदर्श भी। लेकिन इसके बाद विश्वनाथ को कभी भारतीय टीम का कप्तान नहीं बनाया गया। शायद वह इस जमाने के प्रारूप में 'फिट' नहीं बैठते थे। इस टेस्ट से अगर किसी खिलाड़ी को लाभ हुआ तो वह बॉथम थे। उन्होंने न सिर्फ मैच का एकमात्र शतक बनाया बल्कि एक विश्वस्तरीय ऑलराउंडर की छवि बनायी। बाद में वह इमरान, कपिल व हेडली के साथ क्रिकेट जगत के चार महान ऑलराउंडरों में स्थापित हुए।

इंग्लैंड के खिलाफ भारत के शृंखला हारने की अपशगुनी शुरुआत 1974 से जो शुरू हुई तो वह 1980 तक जारी रही। 6 साल तक लगातार शृंखला हारते रहने के बाद भारत ने 1981-82 में जाकर इंग्लैंड के खिलाफ कोई टेस्ट शृंखला जीती। यह घरेलू शृंखला थी और कीथ फ्लेचर के नेतृत्व में इंग्लैंड की टीम 6 टेस्ट मैचों की शृंखला खेलने भारत आयी थी। अब सुनील गावसकर भारतीय टीम का नेतृत्व कर रहे थे। इस शृंखला के पांच टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और मुंबई में खेला गया पहला टेस्ट भारत ने 138 रनों से जीतकर 1-0 से शृंखला जीत ली। अगले ही वर्ष 1982 में भारतीय टीम गावसकर के नेतृत्व में 3 टेस्ट की छोटी शृंखला खेलने इंग्लैंड गयी। इस बार इंग्लैंड के कप्तान थे बॉब विलिस। भारत लॉर्ड्स पर खेला गया पहला टेस्ट 7 विकेट से हार गया तथा मैनचेस्टर पर खेला गया दूसरा व ओवल का तीसरा

टेस्ट 'ड्रा' रहा। इस तरह भारत यह शृंखला 1-0 से हार गया। परंतु पराजय के बावजूद लॉर्ड्स टेस्ट में दिलीप वेंगसरकर का शतक जो कि लॉर्ड्स पर उनका दूसरा टेस्ट शतक था और मैनचेस्टर टेस्ट में संदीप पाटिल का धुआंधार शतक जिसमें उन्होंने तूफानी गेंदबाज और इंग्लैंड के कप्तान विलिस के एक ओवर की सभी गेंदों पर चौके ठोके थे तथा 80 के निजी स्कोर के बाद चौकों की मदद से अपना शतक पूरा किया था, इस दौरे की यादगार घटनाएं थीं।

भारत व इंग्लैंड के बीच हार जीत का यह सिलसिला चलता रहा। 1984-85 में डेविड गॉवर के नेतृत्व में इंग्लैंड की टीम भारत आयी। भारत के कप्तान गावसकर ही थे। पांच टेस्ट मैचों की यह शृंखला भारत 2-1 से हार गया और शृंखला के दो टेस्ट 'ड्रा' रहे। इस शृंखला की विशेषता यह रही कि इसी शृंखला के कलकत्ता टेस्ट से अजहरुद्दीन ने तीन टेस्ट की तीन पारियों में लगातार शतक बनाकर नया कीर्तिमान बनाया। तभी से उन्हें वंडरबॉय कहा जाने लगा। यदि दिल्ली टेस्ट में लापरवाही से 'लिफ्ट' करने की कोशिश में संदीप पाटिल व कपिल देव को सबक सिखाने के उद्देश्य से टीम से न निकाला गया होता तो अजहर शायद टीम में भी न आ पाते। कपिल की तो वापसी हो गयी मगर पाटिल फिर हमेशा के लिए टीम से बाहर हो गये और उनकी जगह आये अजहर न सिर्फ भारतीय बल्लेबाजी के मजबूत आधार बने बल्कि आकर्षक शैली के लिए पूरी क्रिकेट दुनिया में विख्यात हुए तथा भारतीय टीम के कप्तान भी बने। भारत ने जो मुंबई टेस्ट जीता उसमें लेग स्पिनर शिवरामकृष्णन की महत्वपूर्ण भूमिका रही क्योंकि वैसे भी लेग स्पिन इंग्लैंड के खिलाड़ियों की कमजोरी रही है और वे उनके सामने लड़खड़ा जाते हैं।

1986 में कपिल देव के नेतृत्व में भारतीय टीम इंग्लैंड गयी। तब इंग्लैंड की टीम का नेतृत्व किया डेविड गॉवर व माइक गैटिंग ने। 3 टेस्ट मैचों की इस शृंखला में भारत 2-0 से विजयी हुआ। भारत ने लॉर्ड्स व हेडिंग्ले टेस्ट जीत कर 2-0 की बढ़त ली और चूंकि बर्मिंघम में खेला गया तीसरा व अंतिम टेस्ट 'ड्रॉ' रहा, अतः इसी अंतर से भारत ने शृंखला भी जीती। इसके बाद चार साल तक दोनों देशों के बीच कोई टेस्ट शृंखला नहीं खेली गयी। 1990 में अजहरुद्दीन के नेतृत्व में भारतीय टीम इंग्लैंड के दौरे पर गयी। इस बार इंग्लैंड का नेतृत्व ग्राहम गूच के हाथों में था। तीन टेस्ट मैचों की इस शृंखला के 2 टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और एक टेस्ट में भारत पराजित हुआ। यह शृंखला इंग्लैंड ने 1-0 से जीत ली। इस शृंखला के लॉर्ड्स टेस्ट की पहली पारी में कप्तान गूच ने 333 रन बनाकर नया कीर्तिमान बनाया। इसके अलावा इसी शृंखला के ओल्ड ट्रेफर्ड टेस्ट में भारत के युवा बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने विपरीत और चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में साहस के साथ खेलते हुए शानदार शतक बनाया और ओवल पर खेले गये टेस्ट में कपिल का शतक भी उल्लेखनीय रहा।

1993 में गूच के नेतृत्व में इंग्लैंड की टीम भारत आयी। 1984-85 के बाद

यह इंग्लैंड का पहला भारतीय दौरा था। 3 टेस्ट की यह शृंखला भारत ने अजहरुद्दीन के नेतृत्व में 3-0 से जीत ली और अपनी पिछली पराजय का बदला ले लिया। यह वह समय था जब इंग्लैंड की टीम बुरे दौर से गुजर रही थी। गूच पारिवारिक कलह के कारण टूटे हुए से लग रहे थे और खराब 'फॉर्म' में भी थे। टूटे मनोबल, लगातार की पराजय से त्रस्त और हारी थकी इंग्लैंड की टीम लगातार तीखी आलोचना का शिकार बनी रही। ऐसी परिस्थिति में जब वह वापस इंग्लैंड लौटी तो तलवार गूच के ही सिर पर गिरी और उन्हें अवकाशग्रहण करने की घोषणा करनी पड़ी। भारत तथा इंग्लैंड के बीच ताजा व अब तक की अंतिम टेस्ट शृंखला 1996 में खेली गयी। इस बार अजहरुद्दीन के नेतृत्व में भारतीय टीम इंग्लैंड की यात्रा पर गयी। इंग्लैंड की टीम का नेतृत्व किया माइक ऑर्थरटन ने। 3 टेस्ट मैचों की यह कॉर्नहिल टेस्ट शृंखला इंग्लैंड ने 1-0 से जीत ली। शृंखला के दो टेस्ट 'ड्रा' रहे तथा सिर्फ एक में ही फैसला हो पाया और वह इंग्लैंड के पक्ष में रहा। टेंटब्रिज टेस्ट में भारत के सामने टेस्ट जीतकर शृंखला बराबर करने का अच्छा अवसर था लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हो पाया। कॉर्नहिल टेस्ट शृंखला के पहले 'टेक्सलो' ट्रॉफी के लिए खेली गयी एक दिवसीय मैचों की शृंखला में भी भारत 2-0 से पराजित हो चुका था। इस कारण टेस्ट शृंखला में भी टीम का मनोबल टूटा हुआ बना रहा। जो भी हो पिछले तीन वर्षो से लगातार खराब प्रदर्शन के कारण तीखी आलोचना झेल रही इंग्लैंड की टीम घरेलू शृंखला में मिली इस विजय से नयी जिंदगी पा गयी। उसका आत्मविश्वास भी बढ़ा और साख भी। जहां तक भारत का सवाल है उसकी इसी कारण आलोचना होने लगी कि टीम सभी प्रमुख टीमों से हार चुकी है और जिसे वह खुद घरेलू शृंखला में हरा चुकी थी, उसी से वह उसके देश में जाकर हार गयी। इंग्लैंड की टीम विश्व की सबसे कमजोर टीमों मे गिनी जाने लगी थी और उससे हार जाने से भारत की प्रतिष्ठा भी प्रभावित हुई। इस दौरे में बंगाल के बायें हाथ के आकर्षक बल्लेबाज सौरव गांगुली और कर्नाटक के मध्यक्रम के विश्वसनीय बल्लेबाज राहुल द्रविड़ की बल्लेबाजी तथा मध्यम तेज गति के गेंदबाज जवागल श्रीनाथ व वेंकटेश प्रसाद की गेंदबाजी ने खासतौर पर प्रभावित किया। गांगुली के चयन पर सभी ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। लेकिन उन्होंने अपने प्रदर्शन से आलोचकों का मुंह बंद कर दिया। उन्होंने लॉर्ड्स पर खेले गये शृंखला के दूसरे और अपने जीवन के पहले ही टेस्ट में 131 तथा फिर नॉटिंघम में खेले गये तीसरे टेस्ट में 136 रन बना कर लगातार दो टेस्ट मैचों में शतक बनाने का गौरव प्राप्त किया। अजहर की ही तरह लगातार तीन टेस्ट मैचों में तीन शतक लगाने का अवसर भी उनके सामने था पर वह चूक गये। तेंदुलकर ने भी पहले व तीसरे टेस्ट में शतक बनाये। इस तरह नये-नये खिलाड़ियों के सफल निजी प्रदर्शनों से कुछ राहत मिली जरूर। टीम तो हार कर लौटी मगर यह स्थापित हो गया कि अजहर व तेंदुलकर के अलावा भी टीम में नये बल्लेबाज

हैं जो मौका आने पर अच्छा खेल सकते हैं और उन पर भरोसा किया जा सकता है। द्रविड़ व प्रसाद को तो सही अर्थों में 1996 के इंग्लैंड दौरे की खोज ही मानना चाहिए। इस दौरे को अधूरा छोड़कर बीच में ही भारत लौटकर आ जाने वाले सिद्धू के इस आश्चर्यजनक फैसले ने सभी को चौंका दिया। सिद्दू के इस फैसले ने हार के कड़वे स्वाद को और कसैला बना दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने इंगलैंड के खिलाफ अभी तक 6 शृंखलाएं जीती हैं जिनमें से 4 भारत में खेली गयीं और 2 इंग्लैंड में। कुछ बातें इंग्लैंड के खिलाफ खेलकर प्राप्त की गयी भारतीय खिलाड़ियों की निजी उपलब्धियों के बारे में भी। सुनील गावसकर, कपिल देव, विश्वनाथ, अजहरुद्दीन, वेंगसरकर व तेंदुलकर वे प्रमुख भारतीय खिलाड़ी हैं जिन्होंने आजादी के बाद नये भारत में इंग्लैंड के खिलाफ खेलकर उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। वेंगसरकर विश्व के एकमात्र ऐसे बल्लेबाज हैं जिन्हें क्रिकेट का मक्का कहे जाने वाले 'लॉर्ड्स' के मैदान पर 3 टेस्ट शतक लगाने का गौरव प्राप्त है। वेंगसरकर ने 1979 में 103, 1982 में 157 व 1986 में लॉर्ड्स पर 126 नाबाद रन बनाये। यह सम्मान न तो महान ब्रेडमेन को मिल पाया और न ही गावसकर को अथवा एलन बॉर्डर को। अजहर ने इंग्लैंड के खिलाफ अपने जीवन का पहला ही टेस्ट खेला और इस तरह 1984-85 में कलकत्ता टेस्ट से अपना टेस्ट जीवन शुरू करके पहले ही टेस्ट में शतक बनाया, फिर चेन्नई में खेले गये चौथे टेस्ट व तत्पश्चात कानपुर में खेले गये पांचवें टेस्ट में भी शतक बनाकर लगातार तीन टेस्ट में तीन शतक लगाये जो कि एक बड़ी एवं दुर्लभ उपलब्धि है। सौरभ गांगुली ने लॉर्ड्स पर खेल कर अपनी टेस्ट यात्रा शुरू की और पहले ही टेस्ट में 131 रन बनाये। टेस्ट जीवन शुरू करने का इससे बेहतर स्थान व तरीका भला और क्या हो सकता है ? राहुल द्रविड़ भी अपने पहले ही टेस्ट में शतक के बहुत करीब जाकर शतक बनाने से 5 रनों से चूक गये वरना 1996 में लॉर्ड्स पर अपना टेस्ट जीवन शुरू करके शतक बनाने वाले वे दूसरे भारतीय बल्लेबाज हो गये होते।

क्रिकेट की बाइबल मानी जाने वाली 'विसडन' पत्रिका उन खिलाड़ियों को हर वर्ष सम्मानित करती है जो इंग्लैंड आकर उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हैं। यानी यह पत्रिका खिलाड़ियों के केवल इंग्लैंड के प्रदर्शन का ही मूल्यांकन करती है। 'विसडन' में भी अभी तक 14 भारतीय खिलाड़ी सम्मानित हो चुके हैं। रणजीत सिंह जी व दिलीप सिंह जी तो इंग्लैंड के ही लिए खेले पर थे तो दोनों भारतीय ही। ये पहले दो भारतीय थे जिन्हें 'विसडन' ने सम्मानित किया। फिर सीनियर पटौदी, कर्नल नायडू, विजय मर्चेंट, वीनू मनकड़, टाइगर पटौदी, चंद्रशेखर, गावसकर, कपिल देव, मोहिंदर अमरनाथ, दिलीप वेंगसरकर, मोहम्मद अजहरुद्दीन अपने इंग्लैंड में किये गये प्रदर्शन के मान से 'विसडन' द्वारा सम्मानित किये गये। इस कड़ी में तेंदुलकर फिलहाल अंतिम भारतीय खिलाड़ी हैं जिन्हें 'विसडन' सम्मानित कर चुका है। इसमें से 9 खिलाड़ी

ऐसे हैं जो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही सम्मानित किये गये हैं।

सुनील गावसकर और कपिल देव ये दो ऐसे भारतीय खिलाड़ी हैं जिन्हें इंग्लैंड के लोग भी गैरी सोबर्स, रिचर्ड हेडली और एलन बॉर्डर जैसे महान खिलाड़ियों के साथ यकीनन याद रखना चाहेंगे। अंग्रेजों के इस राष्ट्रीय खेल में उन्हीं के देश में उन्हीं की टीम के खिलाफ अपने शानदार प्रदर्शन द्वारा इन भारतीय खिलाड़ियों ने अपना नाम तो चमकाया ही है, देश का सम्मान भी बढ़ाया है और अपने चाहने वालों को उन पर गर्व करने का अवसर दिया है।

6

भारत विरुद्ध आस्ट्रेलिया

यह एक संयोग ही है कि भारत आस्ट्रेलिया के बीच क्रिकेट संबंधों की शुरुआत भारत की आजादी के बाद हुई। जाहिर है दोनों देशों के बीच सभी क्रिकेट शृंखलाएं भी भारत की आजादी के बाद ही खेली गयीं। भारत आस्ट्रेलिया के बीच पहली टेस्ट शृंखला तो 1947-48 में खेली ही गयी थी। लेकिन भारत ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ अपना पहला टेस्ट घरेलू शृंखला में ही जीता जो 1959-60 में खेली गयी। मगर आस्ट्रेलिया के खिलाफ पहली टेस्ट शृंखला भारत 1979 में ही जीता पाया और वह भी घरेलू शृंखला ही थी। यानी दोनों देशों के बीच क्रिकेट संबंधों के शुरू हो जाने के 12 साल बाद तो भारत ने आस्ट्रेलिया से पहला टेस्ट जीता और टेस्ट संबंधों की शुरुआत के 32 साल बाद पहली टेस्ट शृंखला जीती। भारत को आस्ट्रेलिया से टेस्ट शृंखला जीतने के लिए लंबा इंतजार करना पड़ा। अभी तक दोनों के बीच कुल 14 टेस्ट शृंखलाएं खेली गयी हैं। इनमें से 7 आस्ट्रेलिया ने जीती हैं और 3 भारत ने जबकि 4 शृंखलाएं 'ड्रा' रही हैं जिनमें से एक वह टेस्ट भी है जो 1986 में चेन्नई में खेला गया था और 'टाई' हुआ था।

भारत को आजादी मिली 15 अगस्त, 1947 को और भारतीय टीम आस्ट्रेलिया गयी अक्तूबर-नवंबर 1947 में। यानी आजादी मिलने के 2 माह बाद भारत की पहली टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर गयी। इससे पहले न ही कोई आस्ट्रेलिया टीम भारत आयी थी और न ही कोई भारतीय टीम आस्ट्रेलिया गयी थी। दोनों देशों के बीच टेस्ट क्रिकेट खेलने के संबंध ही इसी दौरे से स्थापित हुए। वरना अभी तक 1932 से 1946 तक इंग्लैंड ही एक मात्र ऐसा देश था, जिससे भारत के क्रिकेट संबंध थे। इस बीच तीन बार 1932, 1936 व 1946 में भारतीय टीम इंग्लैंड गयी थी और एक बार 1933-34 में इंग्लैंड की टीम भारत आयी थी।

एक नये और ताकतवर क्रिकेट राष्ट्र से संबंध जुड़ना भारतीय क्रिकेट के लिए

एक नये युग की शुरुआत थी। यद्यपि परिणाम के लिहाज से भारत की पहली आस्ट्रेलिया यात्रा निराशाजनक रही और टीम हारकर लौटी मगर अनुभव के लिहाज से उसके खिलाड़ियों ने बहुत कुछ सीखा। तब महान ब्रेडमेन अवकाश ग्रहण करने की कगार पर थे और नील हार्वे के रूप में एक नया सितारा क्रिकेट आकाश में तेजी से उभर रहा था। लिंडवाल व मिलर की तेज गेंदबाजी का खौफ तो था ही, तेज वर्षा के कारण गीले होकर सूखते हुए विकेट पर खेलने की भी अपनी समस्या थी। ऐसे में तालमेल बिठाना कितना मुश्किल होता है, यह भारतीय खिलाड़ियों को पहली बार पता चला। भारत के इस आस्ट्रेलियाई दौरे के करीब 9 साल बाद आस्ट्रेलिया की टीम भारत आयी। 1956 में जानसन व लिंडवाल के नेतृत्व में भारत आने वाली यह पहली आस्ट्रेलियाई टीम थी। आस्ट्रेलिया को तब एक जबरदस्त और इंग्लैंड के बराबर की टीम माना जाता था। अतः आस्ट्रेलिया के भारत के इस पहले दौरे को लेकर भारत में उत्साह व उत्सुकता थी। भारत के क्रिकेटप्रेमी उन महान खिलाड़ियों को अपनी नजरों के सामने खेलते हुए देखना चाहते थे जिनके बारे में उन्होंने बहुत कुछ सुन व पढ़ रखा था। भारतीय टीम के नेतृत्व की कमान पॉली उमरीगर के हाथों में थी। तीन टेस्ट मैचों की इस शृंखला का पहला मैच चेन्नई में खेला गया और इस पहले ही टेस्ट में ताकतवर आस्ट्रेलिया ने भारत को 1 पारी व 5 रनों से हराकर करारी शिकस्त दी। डी.सी. बून और डी.एस. जोन्स के बीच दूसरे विकेट की भागीदारी में बने 158 रन ही इस मैच की सबसे बड़ी भागीदारी रही। सीधे हाथ से लेगब्रेक-गुगली गेंदबाजी करने वाले व मध्यमक्रम के उपयोगी बल्लेबाज रिची बेनो ने अपनी सधी हुई और संतुलित गेंदबाजी द्वारा 72 रन देकर 7 व तेज गेंदबाज रे लिंडवाल ने 43 रन देकर 7 विकेट लेकर भारतीय टीम की कमर ही तोड़ दी। शृंखला का पहला ही टेस्ट हार जाने के बाद हारने वाली टीम मनोवैज्ञानिक दबाव में आ जाती है। ऐसी स्थिति से उबरकर आने के लिए उच्चस्तरीय मनाबेल, जीवट तथा मानसिक संतुलन की आवश्यकता होती है और तब भारत में क्रिकेट अपनी प्रारंभिक अवस्था में ही था। भारत के प्रमुख अनुभवी खिलाड़ियों में उमरीगर, वीनू मनकड़, विजय मांजरेकर व सुभाष गुप्ते ही थे। पिछली आस्ट्रेलियाई यात्रा के सफल बल्लेबाज विजय हजारे अब नहीं थे और लाला अमरनाथ भी टीम से बाहर थे। मुंबई में खेला गया दूसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा। आस्ट्रेलिया के लिए नील हार्वे ने इस टेस्ट में शानदार शतक बनाया जबकि भारत के लिए जी.एस. रामचंद ने शतकीय पारी खेली। कलकत्ता में शृंखला का तीसरा व अंतिम टेस्ट खेला गया। यह मैच कम स्कोर वाला रहा और इसमें भी आस्ट्रेलिया 94 रनों से जीत गया। इस तरह आस्ट्रेलिया ने भारत के खिलाफ भारत में खेली गयी अपनी पहली शृंखला 2-0 से जीत ली।

इसके तीन साल बाद 1959-60 में रिची बेनो के नेतृत्व में 5 टेस्ट मैचों की शृंखला खेलने आस्ट्रेलियाई टीम फिर भारत आयी। इस बार भारत के कप्तान

थे जी.एस. रामचंद। दिल्ली में खेले गये शृंखला के पहले ही टेस्ट में आस्ट्रेलिया ने भारत को 1 पारी व 127 रनों के बड़े अंतर से पराजित कर दिया। आस्ट्रेलिया के लिए बायें हाथ के आकर्षक शैली के बल्लेबाज नील हार्वे ने कलात्मक खेल दिखाते हुए अविस्मरणीय 114 रन बनाये। भारत के लिए यद्यपि नॅरी कंट्रेक्टर व पंकज राय ने पहले विकेट के लिए 121 रनों की मजबूत भागीदारी की परंतु इसके बावजूद भारत यह टेस्ट एक पारी से हार गया। भारत के अन्य बल्लेबाज डेविडसन की मध्यम तेज व बेनो तथा क्लाइन की स्पिन गेंदबाजी के सामने टिक ही नहीं पाये और धराशायी हो गये। लेकिन कानपुर में खेले गये दूसरे टेस्ट में भारत ने पहले टेस्ट की हार का बदला ले लिया। भारत ने इस टेस्ट में आस्ट्रेलिया को 119 रनों से हराया। ऑफ स्पिनर जसू पटेल ने अपने टेस्ट जीवन का श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए इस टेस्ट में 124 रन देकर 14 विकेट लिए और भारत की इस जीत में महती भूमिका निभायी। आस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत की यह पहली टेस्ट विजय थी। इंग्लैंड से पहला टेस्ट जीतने के 8 साल बाद भारत ने आस्ट्रेलिया से पहला टेस्ट जीता। एलन डेविडसन ने आस्ट्रेलिया के लिए श्रेष्ठ गेंदबाजी की ओर 93 रनों पर 7 खिलाड़ियों को आउट किया मगर वह अपनी टीम को पराजय से नहीं बचा सके। भारतीय क्रिकेट के लिए यह एक ऐतिहासिक एवं गौरवपूर्ण क्षण था। मुंबई में खेला गया तीसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा और नॅरी कंट्रेक्टर ने इस टेस्ट में भारत के लिए उपयोगी 108 रन बनाये। चेन्नई में खेले गये शृंखला के चौथे टेस्ट में आस्ट्रेलिया ने भारत को एक पारी व 52 रनों से हरा दिया। इस शृंखला में यह दूसरा मौका था जब भारत को पारी की हार देखनी पड़ी। आस्ट्रेलिया के लिए एल. फेबल ने इस टेस्ट में शतक बनाया। कलकत्ता में खेला गया शृंखला का पांचवां व अंतिम टेस्ट 'ड्रा' रहा और अंततः आस्ट्रेलिया यह शृंखला 2-1 से जीत गया।

1964 में आस्ट्रेलिया की टीम पुनः भारत के दौरे पर आयी। इस बार आस्ट्रेलिया के कप्तान थे बॉबी सिम्पसन और भारतीय टीम के कप्तान थे मंसूर अली खां पटौदी। इस शृंखला में तीन टेस्ट खेले गये। चेन्नई में खेले गये पहले टेस्ट में आस्ट्रेलिया ने भारत को 139 रनों से पराजित कर शृंखला में अपनी बढ़त बनायी तो मुंबई में खेले गये दूसरे टेस्ट में भारत ने आस्ट्रेलिया को 2 विकेट से हराकर शृंखला में 1-1 से बराबरी कर ली। कलकत्ता में अंतिम व निर्णायक टेस्ट खेला गया जो 'ड्रा' रहा। भारत के लिए चेन्नई टेस्ट में कप्तान टाइगर पटौदी ने शानदार शतक लगाया और जयसिम्हा और विजय मांजरेकर ने मुंबई में खेले गये दूसरे टेस्ट में तीसरे विकेट के लिए 112 मूल्यवान रन जोड़े। इस शृंखला में आस्ट्रेलिया के लिए मुंबई टेस्ट में कूपर व बूथ ने चौथे विकेट के लिए 125 रनों की व छठे विकेट के लिए रीवर्स व जारमन के बीच 151 रनों की भागीदारी हुई तथा कलकत्ता टेस्ट में सिम्पसन व बिल लॉरी ने पहले विकेट के लिए 115 रन जोड़े। इस तरह यह शृंखला 1-1 से



कपिल देव



विशन सिह बेदी



सुनील गावसकर



मोहम्मद अजहरुद्दीन



महान खिलाड़ी डॉन ब्रेडमेन के साथ सचिन तेंदुलकर



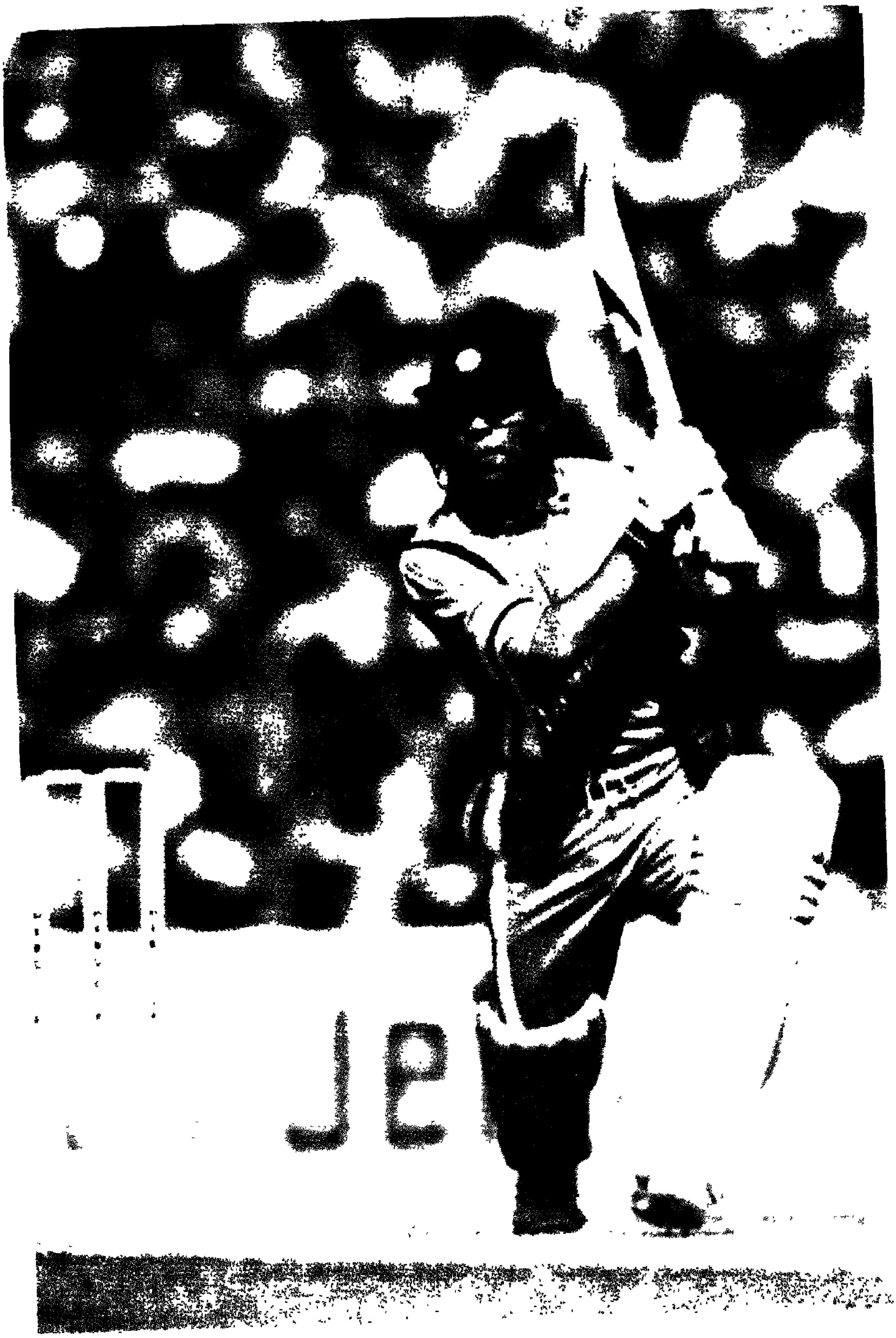
अजय जडेजा



नवजोत सिंह सिद्धू, सौरभ गांगुली और मोहम्मद अजहरुद्दीन



मोहम्मद अजहरुद्दीन खेलते हुए



सचिन तेंदुलकर

बराबर रही।

1967-68 में भारतीय टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर गयी। सनद रहे कि 1947-48 के बाद यह दूसरी भारतीय टीम थी जो आस्ट्रेलिया गयी थी। इस बीच कंगारुओं के देश आस्ट्रेलिया की टीम तीन बार भारत आ चुकी थी। इस भारतीय टीम के नेतृत्व की बागडोर चंदू बोर्डे व टाइगर पटौदी के हाथों में थी। आस्ट्रेलिया की कमान संभाली सिम्पसन व बिल लॉरी ने। यानी दोनों ही टीमों का नेतृत्व दो-दो कप्तानों ने मिल-जुलकर किया, यह भी अजीब इत्तिफाक था। इस टेस्ट शृंखला के चारों टेस्ट मैचों में भारत को पराजय देखनी पड़ी। चंद्रशेखर इंग्लैंड के खिलाफ 4 टेस्ट खेल चुके थे। उन्हीं पर भारतीय गेंदबाजी का दारोमदार था। वह गेंदबाजी के 'ट्रंपकार्ड' थे। लेकिन जब टीम आस्ट्रेलिया पहुंची और पटौदी ने महान ब्रेडमेन को चंद्रशेखर की विशेषताओं के बारे में बताया तो ब्रेडमेन ने सिर्फ एक ही सवाल किया कि चंद्रा 'स्पिन' कितनी करा लेते हैं। पटौदी ने ब्रेडमेन को चंद्रा की तेज गति व उनकी गेंदों के उछाल के बारे में बताया। इस पर ब्रेडमेन की प्रतिक्रिया थी कि बिना अधिक स्पिन के चंद्रा का वहां सफल होना मुश्किल है। और यही हुआ भी। इससे साबित होता है कि ब्रेडमेन क्रिकेट की बारीकियों के कितने अच्छे जानकार थे। जरूरी नहीं कि हर बड़ा खिलाड़ी क्रिकेट का अच्छा विद्यार्थी भी हो। मगर ब्रेडमेन रहे। भारत यह शृंखला 4-0 से हार गया। मेकंजी की तेज गेंदबाजी ने भारतीय बल्लेबाजों को बुरी तरह परेशान किया। खासकर मेलबोर्न टेस्ट में तो उनके 66 रनों पर लिए गये 7 विकेट हमेशा याद किए जायेंगे। उन्हीं की गेंदबाजी के तांडव के कारण आस्ट्रेलिया शृंखला का यह दूसरा टेस्ट एक पारी से जीतने में सफल हुआ। इस शृंखला में जयसिम्हा शतक लगाने वाले एक मात्र भारतीय बल्लेबाज रहे। ब्रिसबेन में खेले गये तीसरे टेस्ट में उन्होंने 101 रन बनाये। आस्ट्रेलिया के लिए सिम्पसन व कूपर ने दो-दो तथा इयान चैपल व बिल लॉरी ने एक-एक शतक बनाया। भारतीय टीम का यह आस्ट्रेलिया का दूसरा ही दौरा था और उसके खिलाड़ियों के लिए आस्ट्रेलिया का मौसम व वहां के विकेट का मिजाज इस बार भी समस्या बने रहे।

1969 में बिल लॉरी की कप्तानी में आस्ट्रेलिया की टीम भारत आयी। भारत के कप्तान टाइगर पटौदी ही थे। पांच टेस्ट मैचों की यह शृंखला भारत 3-1 से हार गया जबकि 1 टेस्ट 'ड्रा' रहा। भारत ने दिल्ली में खेला गया तीसरा टेस्ट जीता जबकि आस्ट्रेलियाई टीम मुंबई में खेले गये पहले, कलकत्ता में खेले गये चौथे और चेन्नई में खेले गये पांचवें टेस्ट में विजयी हुई। कानपुर में खेला गया शृंखला का दूसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा। आस्ट्रेलिया के खिलाफ इसी शृंखला से गुंडप्पा विश्वनाथ ने अपना टेस्ट जीवन शुरू किया तथा देखते ही देखते वह दुनिया के सर्वाधिक कलात्मक व आकर्षक शैली के बल्लेबाजों में शुमार किये जाने लगे। वैसे आमतौर पर दाहिने हाथ के बल्लेबाजों का खेल उतना आकर्षक नहीं होता जितना कि बायें हाथ के

बल्लेबाजों का होता है। अपने पहले ही टेस्ट में उन्होंने कानपुर में बेहतरीन 137 रन बनाये और खास बात यह कि बाद में भी वह सफल होते रहे जबकि पहले ही टेस्ट में शतक बनाने वाले अन्य भारतीय बल्लेबाज इतने भाग्यशाली नहीं रहे हैं। आस्ट्रेलिया के लिए इयान चैपल ने दिल्ली टेस्ट में, पॉल शीहन ने कानपुर टेस्ट में, स्टेकपोल ने मुंबई टेस्ट में तथा डगवाल्टर्स ने चेन्नई टेस्ट में शतक बनाये।

1977-78 में बिशन सिंह बेदी की कप्तानी में भारतीय टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर गयी। आस्ट्रेलियाई टीम के कप्तान थे बॉबी सिम्पसन। इस शृंखला में 5 टेस्ट खेले गये और आस्ट्रेलिया ने यह शृंखला 3-2 से जीत ली। ब्रिसबेन में खेला गया पहला टेस्ट आस्ट्रेलिया ने जीता। फिर मेलबोर्न में खेला गया दूसरा व सिडनी में खेला गया तीसरा टेस्ट भारत ने जीतकर शृंखला में 2-1 से बढ़त ले ली। तत्पश्चात सिडनी में खेला गया चौथा और फिर एडिलेड में खेला गया पांचवां और अंतिम टेस्ट जीतकर आस्ट्रेलिया ने इस टेस्ट शृंखला पर अपना कब्जा कर लिया। इस शृंखला में कप्तान बिशन बेदी ने अपनी 'लेफ्ट आर्म' स्पिन गेंदबाजी के जरिये 23.87 की औसत से 31 विकेट लिये जो कि आस्ट्रेलिया के खिलाफ किसी भी भारतीय गेंदबाज का श्रेष्ठ प्रदर्शन है। आस्ट्रेलिया के लिए सिम्पसन ने दूसरे व पांचवें टेस्ट में, ए. एल. मान ने दूसरे टेस्ट में तथा येलॉप ने पांचवें टेस्ट में शतक बनाये। भारत के लिए सुनील गावसकर ने दूसरे, तीसरे व चौथे टेस्ट में तथा मोहिंदर अमरनाथ ने दूसरे टेस्ट में शतक बनाया। इस शृंखला में भारत तथा आस्ट्रेलिया के बीच जैसा नजदीकी एवं कांटे का मुकाबला हुआ वैसा फिर किसी भी शृंखला में नहीं हुआ। यह वह समय था जब आस्ट्रेलियाई टेलीविजन के चैनल नंबर 9 के प्रमुख कैरी पैकर ने 1976 से ही आस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड से पंगा लेना शुरू कर दिया था तथा समूचे क्रिकेट संगठन को तहस-नहस करने की ठान ली थी। पैकर ने सभी क्रिकेट राष्ट्रों के प्रमुख खिलाड़ियों को अपनी तथाकथित सुपर टेस्ट शृंखला के लिए अनुबंधित करने की पहल शुरू कर दी थी। भारत को छोड़ सभी देशों के क्रिकेट खिलाड़ी धन व प्रचार-प्रसार के लालच में अपने-अपने देशों के क्रिकेट संगठन से बगावत कर पैकर के सर्कस में शरीक हो गये थे। बाद में इसी बगावत की भावना के मद्देनजर उन्होंने विद्रोही खिलाड़ियों के रूप में दक्षिण अफ्रीका का दौरा भी किया। नतीजतन सभी राष्ट्रों का क्रिकेट प्रभावित हुआ व टीमें कमजोर हुईं क्योंकि प्रमुख खिलाड़ी निष्कासन की सजा भुगतते रहे। इंग्लैंड के ग्राहम गूच इनमें प्रमुख हैं। लेकिन अपार धन के लालच के बावजूद भारतीय खिलाड़ी न तो पैकर की ओर आकर्षित हुए और न ही वे दक्षिण अफ्रीका ही गये। ऐसा चारित्रिक साहस तब किसी अन्य देश के खिलाड़ियों ने नहीं किया। अब अगर आज कोई यह कहे कि भारतीय खिलाड़ी भी सटोरियों से मिलकर पैसे खाते व कमजोर प्रदर्शन करते हैं तो कैसे यकीन किया जा सकता है !

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में मची इस उथल-पुथल के चलते 1979 में किम ह्यूज के नेतृत्व में आस्ट्रेलिया की टीम भारत आयी। भारतीय टीम के कप्तान थे सुनील गावसकर। 6 टेस्ट मैचों की इस शृंखला में भारत ने आस्ट्रेलिया को आसानी से 2-0 से हरा दिया। शृंखला के दो ही टेस्ट मैचों में फैसला हो पाया जबकि चार टेस्ट 'ड्रा' रहे। भारत के गुंडप्पा विश्वनाथ ने इस शृंखला में 74.00 की औसत से 518 रन बनाये जो कि किसी भी भारतीय खिलाड़ी द्वारा आस्ट्रेलिया के खिलाफ किसी भी शृंखला में बल्लेबाजी का श्रेष्ठ प्रदर्शन है। भारत के लिए गावसकर ने मुंबई व दिल्ली टेस्ट में, किरमानी ने मुंबई टेस्ट में, विश्वनाथ व वेंगसरकर ने बंगलौर टेस्ट में और यशपाल शर्मा ने दिल्ली टेस्ट में शतक बनाये। आस्ट्रेलिया के लिए किम ह्यूज, एलन बॉर्डर ने चेन्नई टेस्ट में तथा येलॉप ने कलकत्ता टेस्ट में शतक ठोके। जहां तक गेंदबाजी का सवाल है आस्ट्रेलिया के लिए डिमॉक ने कानपुर टेस्ट में 166 रनों पर 12 विकेट लिये। यह प्रदर्शन आस्ट्रेलियाई गेंदबाजी के श्रेष्ठ टेस्ट प्रदर्शनों में शुमार किया जाता है।

अगले ही वर्ष 1980-81 में गावसकर के नेतृत्व में भारतीय टीम आस्ट्रेलिया गयी। इस शृंखला में आस्ट्रेलिया के कप्तान थे एलन बॉर्डर। 3 टेस्ट मैचों वाली इस शृंखला में एक टेस्ट तो आस्ट्रेलिया ने जीता और एक भारत ने तथा एक 'ड्रा' रहा। इस तरह यह टेस्ट शृंखला बराबर रही। सिडनी में खेला गया पहला टेस्ट आस्ट्रेलिया ने जीता और मेलबोर्न में खेले गये तीसरे टेस्ट में भारत विजयी हुआ जबकि एडिलेड में खेला गया दूसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा। इस तरह 1977-78 की शृंखला की तरह यह शृंखला भी दिलचस्प रही। इस शृंखला की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को याद करना जरूरी है। मेलबोर्न में खेले गये शृंखला के तीसरे एवं अंतिम टेस्ट की दूसरी पारी में भारतीय गेंदबाजों ने आस्ट्रेलिया की टीम को सिर्फ 83 रनों में उखाड़ फेंका। यह आस्ट्रेलिया का भारत के खिलाफ अब तक का सबसे कम स्कोर है। एडिलेड में खेले गये दूसरे टेस्ट में तेज विकेट पर सिर पर चोट लग जाने के बावजूद भारत के साहसिक एवं विस्फोटक शैली के बल्लेबाज संदीप पाटिल ने डेनिस लिली और जेफ थॉमसन की तूफानी एवं कहर बरपाती गेंदबाजी के खिलाफ विपरीत परिस्थिति में भी खेलते हुए जो आकर्षक तथा आक्रामक 174 रन बनाये थे वे भारत के क्रिकेट इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज रहेंगे। ऐसी पारी एक अति प्रतिभावान खिलाड़ी ही खेल सकता था। विश्वनाथ दूसरे भारतीय बल्लेबाज थे जिन्हें इस शृंखला में शतक बनाने का गौरव प्राप्त हुआ। उन्होंने मेलबोर्न में खेले गये तीसरे टेस्ट में 114 रन बनाये। आस्ट्रेलिया के लिए ग्रेग चैपल, एलन बॉर्डर, किम ह्यूज व वुड ने शतकीय पारियां खेलीं। इसी शृंखला के मेलबोर्न टेस्ट में एक ऐसी दुखद घटना भी हुई जिसे सभी भूल जाना पसंद करेंगे। हुआ यूं कि बल्लेबाजी करते वक्त गावसकर ने अपने साथी प्रारंभिक बल्लेबाज चेतन चौहान से मैच के दौरान विकेट छोड़कर

पैवेलियन में लौट चलने के लिए कहा। सौभाग्य से मैनेजर कमांडर दुर्रानी ने स्थिति संभाल ली और दोनों भारतीय बल्लेबाजों को मैदान में ही रहने का निर्देश दिया। वरना ऐसा माना जाता कि भारत ने मैच 'कनसीड' कर दिया है। दरअसल लिली की एक एल.बी.डब्ल्यू. अपील पर गावसकर ने बल्ला उठाकर यह दिखाना चाहा कि गेंद उनके बल्ले से लग चुकी है जबकि लिली उनके पैर के उस भाग की तरफ इशारा करते रहे जहां उनके हिसाब से वह गेंद लगी थी। गावसकर इस शृंखला में पहली बार जमकर खेल रहे थे और अपने खराब 'फॉर्म' से उबरने की कोशिश में थे। यही कारण है कि कभी उत्तेजित न होने एवं शांत बने रहने वाले गावसकर भी अपना आपा खो बैठे। जो भी हो एक शर्मनाक घटना घटते-घटते रह गयी। बाद में गावसकर ने अपनी भूल स्वीकार की, और माना कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।

चार साल बाद 1985-86 में कपिल देव के नेतृत्व में भारत ने फिर आस्ट्रेलिया का दौरा किया। आस्ट्रेलिया के कप्तान एलन बॉर्डर ही थे। तीन टेस्ट मैचों की इस शृंखला के तीनों ही टेस्ट 'ड्रा' रहे। इस नीरस शृंखला की सबसे बड़े उपलब्धि यही रही कि सिडनी में खेले गये तीसरे और अंतिम टेस्ट की पहली पारी में भारत ने 4 विकेट पर 600 के स्कोर पर पारी घोषित कर दी जो कि भारत का आस्ट्रेलिया के खिलाफ किसी भी टेस्ट में अब तक का सर्वाधिक स्कोर है। गावसकर ने पहले व तीसरे टेस्ट में, मोहिंदर अमरनाथ ने पर्थ में खेले गये दूसरे टेस्ट में तथा श्रीकांत ने तीसरे टेस्ट में शतक बनाया जबकि आस्ट्रेलिया के लिए इस शृंखला में डेविड बून ने दो तथा ग्रेग मैथ्यूज व रिची ने एक-एक शतक बनाया। इस शृंखला में बल्ला गेंद पर हावी रहा। इस शृंखला के बाद ही 1986 में एलन बॉर्डर के नेतृत्व में आस्ट्रेलिया की टीम भारत आयी। इस टीम और कपिल देव के नेतृत्व में खेली भारतीय टीम के बीच तीन टेस्ट खेले गये। चेन्नई में खेला गया शृंखला का पहला टेस्ट बड़ी रोचक परिस्थिति में 'टाई' हो गया। आस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी 7 विकेट पर 574 रन बनाकर घोषित कर दी जिसमें डीन जोन्स का दोहरा शतक शामिल था। भारत ने पहली पारी में 397 रन बनाये। आस्ट्रेलिया ने अपनी दूसरी पारी भी 5 विकेट पर 170 रनों पर घोषित कर दी और भारत ने अपनी दूसरी पारी में 347 रन बनाये तथा इस तरह दोनों ही टीमों का दोनों पारियों का योग समान हो जाने से मैच 'टाई' हो गया। डीन जोन्स की द्विशतकीय पारी के अलावा एलन बॉर्डर तथा कपिल देव के शतक इस टेस्ट की विशेषता रहे। दिल्ली में खेले गये दूसरे टेस्ट मैच के पहले तीन दिन तो बारिश के कारण खेल ही नहीं हुआ। खिलाड़ी मजे में घूमते-फिरते रहे। डीन जोन्स को अपने 'लेग गार्ड्स' यह कहते हुए बेचते देखा गया कि वे उस डीन जोन्स के 'लेग गार्ड्स' हैं जिसने चेन्नई टेस्ट में दोहरा शतक बनाया था। शेष बचे समय में आस्ट्रेलिया ने 3 विकेट पर 207 रन बनाकर पहली पारी घोषित की तथा भारत ने 3 विकेट पर 107 रन बनाये और मैच 'ड्रा' हो गया। मुंबई में खेला

गया। शृंखला का तीसरा व अंतिम टेस्ट भी 'ड्रा' रहा। इस टेस्ट में भारत के लिए वेंगसरकर, गावसकर व रवि शास्त्री ने शतकीय पारियां खेलीं।

1992 के विश्व कप से ठीक पहले 1991 में अजहरुद्दीन की कप्तानी में भारतीय टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर गयी। गावसकर 1987 में निवृत्त हो चुके थे। अतः विगत 16 वर्षों से टीम की पारी की शुरुआत करते आ रहे एक अनुभवी एवं गावसकर जैसे तकनीकबद्ध प्रारंभिक बल्लेबाज की गैर मौजूदगी में एकाएक गावसकर के स्तर की तो बात ही छोड़िये कोई ठीक-ठाक एवं कामचलाऊ बल्लेबाज का मिलना भी मुश्किल था। श्रीकांत ही एक उद्घाटक बल्लेबाज थे। अतः उनके साथ रवि शास्त्री से पारी की शुरुआत करवायी गयी। आस्ट्रेलियाई टीम की कमान एलन बॉर्डर के ही हाथों में थी। इस शृंखला में भारतीय टीम का प्रदर्शन निराशाजनक रहा। भारत यह शृंखला 4-0 से हार गया। सिडनी टेस्ट 'ड्रा' रहा वरना शेष चारों टेस्ट मैचों में आस्ट्रेलिया ने भारत को बड़े अंतर से हराकर अपना दबदबा बनाया। लेग स्पिनर नरेंद्र हिरवानी को एक दिवसीय मैंचों में तो 12वें सदस्य के रूप में टीम में रखा जाता रहा मगर टेस्ट शृंखला के पहले ही भारत भेज दिया गया जबकि वह टेस्ट क्रिकेट में मुफीद गेंदबाज साबित होते रहे हैं। इस शृंखला में आस्ट्रेलिया के लिए डेविड बून ने दो तथा डीन जोन्स, मूडी व मार्क टेलर ने एक-एक शतक बनाया। भारतीय बल्लेबाजों में जहां रवि शास्त्री ने सिडनी में खेले गये तीसरे टेस्ट में दोहरा शतक बनाया वहीं अजहरुद्दीन व सचिन तेंदुलकर ने एक-एक शतक बनाया।

इस शृंखला के बाद 10 साल के लंबे अंतराल में दोनों देशों के बीच कोई टेस्ट शृंखला नहीं खेली गयी। 1996 में मार्क टेलर की अगुआई में आस्ट्रेलियाई टीम भारत के दौरे पर आयी। दिल्ली में खेले गये इस दौरे के एक मात्र टेस्ट में भारतीय टीम की कप्तानी सचिन तेंदुलकर ने की। लगातार की आलोचना एवं खराब प्रदर्शन के कारण अजहरुद्दीन को कप्तानी से हटा दिया गया था। मगर बतौर एक बल्लेबाज वह टीम में बने हुए थे। आस्ट्रेलिया और भारत दोनों ही टीमों की अपनी-अपनी समस्याएं थीं। कपिल की निवृत्ति के बाद श्रीनाथ ही भारत के स्तरीय मध्यम तेज गति के गेंदबाज थे मगर वह इंग्लैंड के दौरे से ही अत्यधिक गेंदबाजी करते रहने के कारण कंधे के दर्द से परेशान थे और विश्राम कर रहे थे। भारत की नयी गेंदबाजी अब वेंकटेश प्रसाद व जॉनसन के जिम्मे थी। उधर आस्ट्रेलिया के विश्व स्तरीय लेग स्पिनर शेन वार्न भी अपनी 'स्पिनिंग फिंगर' की शल्य चिकित्सा करा चुके थे और विश्राम कर रहे थे। अतः वह भी टीम के साथ नहीं आये थे। बहरहाल इस टेस्ट में भारत ने मैच के चौथे दिन ही 7 विकेट से आस्ट्रेलिया को पराजित कर दिया। युवा तेंदुलकर के लिए यह अच्छी शुरुआत थी, क्योंकि टाइगर पटौदी के बाद वह भारत के दूसरे ऐसे कप्तान थे जो इतनी कम उम्र में टेस्ट मैच में कप्तानी कर रहे थे। यानी पटौदी के बाद भारत के सबसे कम उम्र के इस कप्तान ने अपनी कप्तानी

में पहला ही टेस्ट जीत लिया और वह भी आस्ट्रेलिया जैसी जुझारू टीम के खिलाफ। भारत के लिए नयन मोंगिया ने प्रारंभिक बल्लेबाज की भूमिका बखूबी निभायी और शानदार 152 रन बनाये जो कि उनके टेस्ट जीवन का सर्वाधिक स्कोर भी है तथा श्रेष्ठ प्रदर्शन भी। अनिल कुंबले ने मैच में 9 विकेट लिये। मोंगिया व कुंबले दोनों ने ही भारत की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यह तो तय है कि कुंबले की सफलता को देखते हुए आस्ट्रेलिया को अपने 'स्टार' लेग स्पिनर शेन वार्न की कमी निश्चित ही खली होगी। इस दौरे का यह एकमात्र टेस्ट था और भारत ने शानदार तरीके से उसे जीतकर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ायी।

मार्च-अप्रैल 1998 में भारत व आस्ट्रेलिया के बीच खेली गयी 3 टेस्ट मैचों की घरेलू शृंखला भारत ने 2-1 से जीतकर अपने देश में और अपने मैदानों पर अपना वर्चस्व एक बार फिर स्थापित किया। आस्ट्रेलिया के कप्तान मार्क टेलर न तो निजी प्रदर्शन द्वारा ही अपनी टीम को प्रेरित कर सके और न ही बतौर कप्तान के। चेन्नई में खेले गये शृंखला के पहले टेस्ट में पहली पारी में आस्ट्रेलिया से 71 रनों से पिछड़ने के बावजूद यदि भारत यह टेस्ट 179 रनों से जीत पाया तो इसका श्रेय सचिन तेंदुलकर के दूसरी पारी में कलात्मक और आतिशी अंदाज में बनाये गये नायाब 155 रनों की पारी तथा कुंबले, राजू और राजेश चौहान की घातक स्पिन गेंदबाजी को है। 11 साल पहले दोनों देशों के बीच 'टाई' हुए टेस्ट के बाद चिंदबरम स्टेडियम में भारत तथा आस्ट्रेलिया के बीच खेला गया यह पहला टेस्ट था। नतीजतन आखिरी दिन अंतिम क्षणों तक स्टेडियम उत्साही दर्शकों से भरा रहा।

1-0 से बढ़त लेने के बाद भारत ने कलकत्ता के मनोहारी ईडन गार्डन पर खेले गये दूसरे टेस्ट में तो आस्ट्रेलिया को और भी करारी शिकस्त दी तथा यह टेस्ट 1 पारी व 219 रनों के भारी अंतर से जीता। इस तरह उसने 3 टेस्ट मैचों की इस शृंखला के 2 टेस्ट जीतकर गावसकर-बॉर्डर ट्राफी पर अधिकार कर लिया। कलकत्ता में खेलना अजहर के लिए भाग्यशाली रहा है व उन्हें ईडन गार्डन पर खेलना हमेशा सुहाया है। इस टेस्ट में उन्होंने नाबाद रहते हुए 163 रन बनाये। यह उनका कलकत्ता में अभी तक खेले गये 6 टेस्ट मैचों में पांचवां टेस्ट शतक था। पहली पारी में 233 रनों पर आउट होने वाली आस्ट्रेलियाई टीम भारत के 5 विकेट पर 633 रनों के बड़े स्कोर के दबाव में दूसरी पारी में सिर्फ 181 पर ढेर हो गयी। श्रीनाथ ने मैच में 6 व कुंबले ने 8 विकेट लिये। लक्ष्मण, सिद्धू व द्रविड़ दुर्भाग्यवश शतक बनाने से वंचित रहे और अपने शहर व दर्शकों के सामने पहली बार टेस्ट खेल रहे गांगुली भी 65 रन बनाकर आउट हो गये।

बंगलौर में खेले गये शृंखला के तीसरे व अंतिम टेस्ट में 2-0 से पिछड़ी आस्ट्रेलियाई टीम ने भारत को 8 विकेट से पराजित कर अपनी इज्जत बचायी। वरना मीडिया ने आस्ट्रेलिया को अनधिकृत रूप से टेस्ट क्रिकेट की श्रेष्ठ टीम बताकर

आसमान पर चढ़ाया हुआ था। तेंदुलकर के शानदार 177 व सिद्धू के 74 रनों की बदौलत पहली पारी में आस्ट्रेलिया से 24 रनों की बढ़त ले लेने के बावजूद भारतीय टीम अपनी दूसरी पारी में सिर्फ 169 रन ही बना पायी। आस्ट्रेलिया के लिए पहली पारी में मार्क वॉ ने नाबाद 153 रन बनाये जो कि उनका सर्वाधिक टेस्ट स्कोर है। मध्यम तेज गति के गेंदबाज कास्पिरोविच ने इस टेस्ट में 6 व अभी तक असफल रहे विश्व के श्रेष्ठ लेग स्पिन गेंदबाज शेन वार्न ने शृंखला में पहली बार अपनी ख्याति के अनुरूप गेंदबाजी करते हुए मैच में 5 विकेट लिये। उन्हीं की तरह ऑफ स्पिनर रॉबर्ट्सन को भी इस टेस्ट में 5 विकेट मिले। इस टेस्ट में भारत को श्रीनाथ की सेवाएं नहीं मिल पायीं क्योंकि वह मांसपेशियों के खिंचाव के कारण नहीं खेल पाये।

तेंदुलकर की जगह फिर से भारतीय टीम के कप्तान बनाये गये अजहर इस शृंखला में पहले से अधिक परिपक्व व कामयाब नजर आये। उनका निजी प्रदर्शन भी अच्छा रहा और उनके नेतृत्व में टीम के प्रदर्शन में भी निखार आया। भारत के लिए तेंदुलकर ने 2 व अजहर ने 1 शतक लगाया, जबकि आस्ट्रेलिया के लिए शृंखला का एकमात्र शतक मार्क वॉ ने ही लगाया। इस शृंखला के तीनों टेस्ट मैचों में हार-जीत का फैसला होने से टेस्ट क्रिकेट की धुंधली पड़ती जा रही प्रतिष्ठा को नया जीवन मिलना एक शुभ संकेत रहा।

वर्तमान में आस्ट्रेलिया की टीम बल्लेबाजी में मार्क वॉ, स्टीव वॉ व टेलर पर ही प्रमुख रूप से निर्भर करती है। भारत के धीमे व घुमाव वाले विकेट पर मेग्रा व गिलिस्पी उतने असरदार नहीं रह पाये जितने कि वे तेज विकेट पर रहते हैं। एक और बात भी है। अब क्रिकेट जगत में धीरे-धीरे किसी एक राष्ट्र का प्रभुत्व एवं आधिपत्य खत्म होता जा रहा है। यही कारण है कि अब कोई भी देश विश्व विजेता होने का दावा नहीं कर सकता। उच्चतम स्तर पर क्रिकेट के प्रमुख देशों के खेल स्तर में अब बहुत कम अंतर रह गया है क्योंकि अब सभी क्रिकेट देशों का खेल स्तर सुधरा है। आज श्रीलंका व दक्षिण अफ्रीका भी ताकतवर क्रिकेट देशों से टक्कर लेने की स्थिति में हैं। फिर भी टेस्ट क्रिकेट में आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, पाकिस्तान व वेस्टइंडीज की टीमें अन्य देशों की तुलना में अधिक संतुलित प्रदर्शन करती रही हैं। भारत इस दृष्टि से पिछड़ा नजर आता है क्योंकि उसकी गेंदबाजी एक या दो गेंदबाजों पर ही निर्भर रही है, जो कि बड़ी सफलता के लिए नाकाफी है। भारत को आप न्यूजीलैंड, इंग्लैंड और जिम्बाब्वे से थोड़ा बेहतर जरूर मान सकते हैं।

आजादी के 50 वर्षों के दौरान भारतीय क्रिकेट उतार-चढ़ाव के अनेक अनुभवों में से गुजरा है। कभी उसकी सफलता का ग्राफ ऊपर उठा है तो कभी वह नीचे गिरा है। भारत-आस्ट्रेलिया के बीच खेले गये मुकाबले भी सफलता-असफ़लता का

मिला-जुला दृश्य प्रस्तुत करते हैं। इतना जरूरत है कि खेलों के प्रति दिली लगाव जितना आस्ट्रेलिया के आम नागरिकों में है उतना भारत में नहीं है। सब कुछ छोड़कर सप्ताह में दो दिन केवल घुड़दौड़ अथवा क्रिकेट या टेनिस को समर्पित करना उन्हीं के बलबूते की बात है। यही वजह है कि वहां के खिलाड़ियों की खेल शैली व्यावसायिक, नपी तुली, आखिरी दम तक संघर्ष करने की क्षमता से भरपूर है और आसानी से हार न मानने जैसी विशेषताओं से सजी संवरी है। हमें अपने देश में आम लोगों में खेलना तो दूर, खेल देखने की मानसिकता का ही अभी विकास करना है।

7

भारत विरुद्ध वेस्टइंडीज

भारत ने सबसे पहले तो इंग्लैंड के साथ खेलना शुरू किया। इंग्लैंड के बाद वह आस्ट्रेलिया से खेला और फिर वेस्टइंडीज तीसरा क्रिकेट राष्ट्र था जिससे उसके क्रिकेट संबंध स्थापित हुए। इसी क्रम में उसके क्रिकेट रिश्ते भी जुड़े तथा टीमों के आने-जाने का सिलसिला भी शुरू हुआ।

भारत की आजादी के साल भर बाद नवंबर 1948 में पहली वेस्टइंडीज टीम भारत यात्रा पर आयी। इसी दौर से भारत तथा वेस्टइंडीज के क्रिकेट रिश्तों की शुरुआत हुई। इस टीम के कप्तान थे जॉन गोडाई। वेस्टइंडीज के खिलाफ पहली बार खेलने वाली भारतीय टीम के कप्तान थे लाला अमरनाथ। इस शृंखला में 5 टेस्ट खेले गये। 4 तो 'ड्रा' रहे और एक में वेस्टइंडीज जीती। इस तरह वेस्टइंडीज ने दोनों देशों के बीच खेली गयी यह पहली टेस्ट शृंखला 1-0 से जीत ली। 1948-49 की इस शृंखला के दिल्ली, मुंबई और कलकत्ता टेस्ट तो 'ड्रा' रहे। लेकिन चेन्नई में खेले गये शृंखला के चौथे टेस्ट में वेस्टइंडीज ने भारत को एक पारी व 191 रनों के बड़े अंतर में पराजित किया। इस शृंखला में वेस्टइंडीज के तीन 'डब्ल्यू' में से एक इव्हर्टन वीक्स ने 111.28 की प्रभावी औसत से 779 रन बनाये जो वेस्टइंडीज के किसी भी बल्लेबाज द्वारा भारत के खिलाफ किसी भी टेस्ट शृंखला में बनाये गये सर्वाधिक रन हैं। इस शृंखला में वेस्टइंडीज के लिए रे व वीक्स ने दो-दो तथा क्रिश्चियानी, स्टॉल मेयर तथा वॉलमोर ने 1-1 शतक बनाया। भारत के लिए विजय हजारे ने दो व हेमू अधिकारी, रूसी मोदी व मुश्ताक अली ने एक-एक शतक बनाया। हेमू अधिकारी वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट शतक लगाने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी हैं। उन्होंने यह शतक दिल्ली में खेले गये शृंखला के पहले ही टेस्ट में लगाया।

इस वेस्टइंडीज टीम के दौरे के बाद 1953 में भारतीय टीम पहली बार वेस्टइंडीज की यात्रा पर गयी। यह दोनों देशों के बीच दूसरी टेस्ट शृंखला थी। भारत के कप्तान

थे विजय हजारे जबकि वेस्टइंडीज का नेतृत्व किया स्टॉल मेयर ने। 5 टेस्ट मैचों की इस शृंखला में भी 1948-49 की तरह भारतीय टीम 1-0 से हार गयी। इस शृंखला के चार टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और जिस टेस्ट में फैसला हुआ उसका परिणाम भारत के खिलाफ गया। कुल मिलाकर भारत की यह पहली वेस्टइंडीज यात्रा संतोषप्रद ही रही। इस शृंखला के सभी टेस्ट 6-6 दिन के थे और 6 दिन का टेस्ट खेलने का भारत का यह पहला अनुभव था। पोर्ट ऑफ स्पेन में खेले गये पहले टेस्ट में भारत के लिए उमरीगर ने शतक बनाया और आप्टे व रामचंद ने उनका बखूबी साथ दिया। वेस्टइंडीज के लिए वीक्स ने दोहरा तथा अपना पहला ही टेस्ट खेल रहे परेडयू ने अपने पहले ही टेस्ट में शतक बनाने का गौरव प्राप्त किया। पहली पारी में भारत के सुभाष गुप्ते ने अपनी 'फ्लाइटेड लेग ब्रेक–गुगली' के जरिये 162 रनों पर 7 खिलाड़ियों को आउट किया। ब्रिज टाउन में खेले गये दूसरे टेस्ट में वेस्टइंडीज ने भारत को 142 रनों से पराजित किया। यह टेस्ट कम स्कोर वाला रहा और इसका निर्णय शृंखला के लिए भी निर्णायक रहा। रामाधीन व वेलेंटाइन ने अपनी घातक स्पिन गेंदबाजी के जरिये भारतीय टीम को सस्ते में निबटा दिया। पोर्ट ऑफ स्पेन पर खेला गया तीसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा। इस टेस्ट में भारत की दूसरी पारी में आप्टे ने शतक बनाया मगर वीनू मनकड़ 96 पर आउट हो जाने से शतक पूरा करने से चूक गये वरना मनकड़ को भारत के खिलाफ खेलने वाली सभी टीमों के खिलाफ टेस्ट मैचों में शतक बनाने का दुर्लभ सम्मान मिल जाता। उमरीगर ऐसे दूसरे अभागे भारतीय बल्लेबाज हैं जो आस्ट्रेलिया को छोड़कर भारत के खिलाफ टेस्ट खेलने वाली सभी टीमों के खिलाफ शतक बना चुके हैं। इस टेस्ट में भी वेस्टइंडीज के लिए वीक्स ने शतक बनाया। जॉर्ज टाउन में खेले गये शृंखला के चौथे टेस्ट में बारिश के कारण मैदान इतना अधिक गीला हो गया कि उस पर अंपायरों ने मैच शुरू करवाने से ही इनकार कर दिया। मगर स्थानीय दर्शकों के भारी विरोध व दबाव के कारण बमुश्किल मैच शुरू किया गया। इस टेस्ट में छठे दिन सिर्फ घंटे भर का ही खेल हो पाया व टेस्ट 'ड्रा' हो गया। यहां यह बात ध्यान में रखना जरूरी है कि तब न तो अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट संघ ही इतना व्यवस्थित व सक्रिय था और न ही दौरे के नियम आजकल की तरह बारीकी से निर्धारित किये जाते थे। खिलाड़ियों के नखरे भी इतने नहीं थे। किंगस्टन में खेले गये पांचवें व अंतिम टेस्ट में वेस्टइंडीज के तीनों 'डब्ल्यूज' ने अपनी पूरी ताकत दिखा दी। वॉरले ने दोहरा शतक बनाया जबकि वीक्स व वॉलकॉट ने शतक बनाये। भारत के लिए उमरीगर ने 117, राय ने 150 तथा विजय मांजेरकर ने 118 रन बनाये। यह टेस्ट बड़े स्कोर वाला रहा और 'ड्रा' हो गया। सुभाष गुप्ते ने इस दौरे में 50 विकेट लिये और यह सम्मान प्राप्त करने वाले वह पहले गेंदबाज रहे।

1958 में वेस्टइंडीज की टीम ने भारत का दौरा किया। उसके कप्तान थे

एलेक्जेंडर और भारतीय टीम की कप्तानी इस बार चार लोगों ने की। वे थे गुलाम अहमद, पॉली उमरीगर, वीनू मनकड़ और हेमू अधिकारी। 5 टेस्ट मैचों की इस शृंखला में वेस्टइंडीज ने भारत को 3-0 से हरा दिया। दो टेस्ट 'ड्रा' रहे। वेस्टइंडीज ने कानपुर और चेन्नई टेस्ट काफी बड़े अंतर से जीते जबकि मुंबई और दिल्ली टेस्ट 'ड्रा' रहे। वेस्टइंडीज ने दिल्ली में खेले गये पांचवें व अंतिम टेस्ट में 8 विकेट पर 644 रन बनाकर अपनी पहली पारी घोषित की। यह उसका भारत के खिलाफ किसी एक पारी का सर्वाधिक स्कोर है। सुभाष गुप्ते ने कानपुर टेस्ट में 102 रन देकर 9 विकेट लिये जो कि तब तक किसी भी भारतीय गेंदबाज के वेस्टइंडीज के खिलाफ किसी एक टेस्ट के सर्वाधिक विकेट थे। 1983 में कपिल देव ने वेस्टइंडीज के ही 83 रनों पर 9 विकेट लेकर गुप्ते की बराबरी की। इस शृंखला में वेस्टइंडीज के लिए सोबर्स ने 3, बुचर ने 2 तथा होल्ट, कन्हाई, कॉली स्मिथ व सोलोमन ने एक-एक शतक बनाया। चंदू बोर्डे भारत के लिए शृंखला में शतक बनाने वाले एक मात्र बल्लेबाज रहे।

1962 में नॅरी कंट्रेक्टर की अगुआई में भारतीय टीम वेस्टइंडीज की यात्रा पर गयी। इस बार वेस्टइंडीज का नेतृत्व किया फ्रेंक वॉरेल ने। 5 टेस्ट मैचों की यह शृंखला वेस्टइंडीज ने 5-0 से जीत ली। यह भारत की वेस्टइंडीज के हाथों सबसे दयनीय पराजय थी। निश्चित ही यह शर्मनाक प्रदर्शन था। शृंखला के पांचों टेस्ट हारने वाली टीम से भला किसकी सहानुभूति हो सकती है ? लेकिन एक ऐसी घटना घटी जिसने इस शानदार एवं गौरवशाली खेल की प्रतिष्ठा में चार चांद लगा दिये। हुआ यूं कि दूसरे टेस्ट के बाद और तीसरे टेस्ट के ठीक पहले बारबेडोस के खिलाफ खेले गये मैच में जब भारतीय टीम के कप्तान कंट्रेक्टर चार्ली ग्रिफिथ की एक 'बहुत तेज' व अचानक ऊपर उठी गेंद पर घायल हो गये तब फ्रेंक वॉरेल न सिर्फ कंट्रेक्टर को साथ लेकर हवाई जहाज से गये बल्कि उनके सिर की शल्य चिकित्सा के दौरान उन्होंने कंट्रेक्टर को अपना खून भी दिया। खेल भावना व भाईचारे की इसी संजीदगी ने वॉरेल को सदायशता की प्रतिमूर्ति बना दिया। प्रतिस्पर्धी टीम के कप्तान होते हुए वॉरेल ने विपक्षी टीम के कप्तान के लिए जो कुछ भी संभव था वह सभी किया। देश, जाति-संप्रदाय, धर्म और भाषा से ऊपर उठकर सच्ची खेल भावना से एवं नियमों का पालन करते हुए खेलने में ही खेल का असली आनंद है। वॉरेल ने दिखा दिया कि जो मजा दूसरों के लिए करने में आता है वह खुद अपने लिए करने में नहीं आता। ऐसी परिस्थिति में मजबूरन युवा मंसूर अली खां पटौदी को तीसरे टेस्ट से भारतीय टीम का नेतृत्व करना पड़ा। इस शृंखला में वेस्टइंडीज के लिए कन्हाई व सोबर्स ने दो-दो तथा मैक मॉरिस ने एक शतक बनाया। भारत के लिए सलीम दुर्रानी व उमरीगर दोनों ने चौथे टेस्ट में शतक बनाया।

1966-67 में वेस्टइंडीज की टीम ने भारत का दौरा किया। वेस्टइंडीज के

कप्तान थे सोबर्स और भारत का नेतृत्व किया मंसूर अली खां पटौदी ने। तीन टेस्ट मैचों की यह शृंखला वेस्टइंडीज ने आसानी से 2-0 से जीत ली। चेन्नई में खेला गया शृंखला का तीसरा व अंतिम टेस्ट 'ड्रा' रहा। इस शृंखला में भी भारत का प्रदर्शन कमजोर रहा। भारत के लिए चंदू बोर्डे ने दो तथा वेस्टइंडीज के लिए हंट ने एक शतक बनाया।

1971 में भारतीय टीम ने वेस्टइंडीज का दौरा किया। इस दौरे के लिए अजीत वाडेकर को कप्तान बनाये जाने का निर्णय काफी जद्दोजहद व लंबी बहस के बाद चयन समिति के प्रमुख विजय मर्चेंट के निर्णायक मत द्वारा हुआ। तब वेस्टइंडीज के कप्तान थे सोबर्स। भारत का यह दौरा ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय रहा। इस शृंखला में 5 टेस्ट खेले गये। और इस दौरे में अपने टेस्ट इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं गौरवशाली सफलता प्राप्त करके भारत ने अपनी प्रतिष्ठा बढ़ायी। इस दौरे में भारत ने वेस्टइंडीज में खेलकर न सिर्फ अपने क्रिकेट इतिहास का पहला टेस्ट जीता बल्कि पहली बार टेस्ट शृंखला भी जीतने का गौरव प्राप्त किया। अभी तक भारत-वेस्टइंडीज के क्रिकेट संबंध 23 वर्ष पुराने हो चुके थे लेकिन ऐसा अभूतपूर्व क्षण कभी नहीं आया था। इस तरह वेस्टइंडीज में अपना पहला टेस्ट खेलने के 23 वर्ष बाद भारत को उसके खिलाफ टेस्ट व टेस्ट शृंखला जीतने का सम्मान मिल पाया। वरना या तो भारत हारता रहा या फिर शृंखला बराबर होती रही। इस विजय का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि भारत को यह सफलता वेस्टइंडीज की जमीन पर मिली। अपने घर में मिली सफलता को लोग उतना महत्व नहीं देते। बल्कि सही अर्थों में तो उसे वे शक की नजर से देखते हैं। पर यदि सफलता बाहर जाकर विदेश में मिले तब उसकी असली कद्र होती है। कहते भी हैं न कि शेर तो पराये गाले में जाकर ही शिकार करता है। अतः यह सफलता विशेष महत्व रखती है।

इस शृंखला के 4 टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और एक टेस्ट में भारत ने वेस्टइंडीज को हराकर यह शृंखला 1-0 से जीत ली। पोर्ट ऑफ स्पेन में खेले गये जिस एक मात्र टेस्ट में फैसला हुआ उसमें वेस्टइंडीज के लॉयड, सोबर्स, कन्हाई और डेविस जैसे धुरंधर बल्लेबाज भारत के स्पिनर्स के सामने नतमस्तक हो गये। किंगस्टन, जॉर्ज टाउन, ब्रिज टाउन और पोर्ट ऑफ स्पेन में खेले गये चार टेस्ट जब 'ड्रा' रहे तो पांचवें व अंतिम टेस्ट पर सभी की निगाहें टिकी हुई थीं। पोर्ट ऑफ स्पेन पर ही यह टेस्ट खेला गया जिसमें भारत के लिए दिलीप सरदेसाई ने शतक बनाया और हरफनमौला किंतु मनमौजी स्वभाव के सलीम दुर्रानी ने सोबर्स व लॉयड को अपनी गेंदों पर आउट करके तहलका मचा दिया। दरअसल दुर्रानी की दो गेंदों ने ही मैच का नक्शा पलट दिया और परिणाम भारत के पक्ष में आ गया। वेस्टइंडीज के लिए स्पिनर नोरेगा ने अपने जीवन का श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 95 रन देकर 9 विकेट लिए। परंतु उनकी सारी मेहनत बेकार गयी और उनकी टीम को पराजय का मुंह

देखना पड़ा। इस शृंखला के हीरो रहे सुनील गावसकर। उन्होंने इसी शृंखला से अपना टेस्ट जीवन शुरू किया और शृंखला के 4 टेस्ट मैचों में 154.80 की प्रभावी औसत से 774 रन बनाये जो कि किसी भी भारतीय बल्लेबाज का टेस्ट क्रिकेट में अब तक का श्रेष्ठ प्रदर्शन है। पोर्ट ऑफ स्पेन में खेले गये शृंखला के इस अंतिम टेस्ट में उन्होंने पहली पारी में 124 तथा दूसरी पारी में 220 रन बनाकर अपने धैर्य, तकनीक व एकाग्रता का परिचय दिया। एक ही टेस्ट में शतक व दोहरा शतक बनाने वाले वह अभी तक एकमात्र भारतीय बल्लेबाज हैं। भारतीय टीम की यह एक बड़ी उपलब्धि थी। दोनों देशों के बीच खेला गया यह 25वां टेस्ट था। इस जीत का जश्न पूरे देश में धूमधाम से मनाया गया। वेस्टइंडीज और भारत के समय में करीब साढ़े आठ घंटे का फर्क है। वहां कमेंट्री की अच्छी सुविधाएं भी नहीं थीं। फिर भी भारत में लोग देर रात जागकर जैसे-तैसे मैच की प्रगति की जानकारी लेते रहे। नतीजा जानते ही लोग खुशी से झूम उठे। टीम की वापसी पर खिलाड़ियों का वीरोचित सम्मान हुआ। क्रिकेट राष्ट्रों में एक कमजोर टीम समझी जाने वाली भारतीय टीम ने विश्व की सर्वाधिक ताकतवर टीम को उसी के घर में जाकर परास्त कर दिया था और समूचे जगत को अपनी क्रिकेट प्रतिभा से परिचित करवा दिया था। पूरे देश के लिए यह गौरव एवं गर्व का क्षण था।

इस शृंखला के तीन साल बाद 1974-75 में क्लाइव लॉयड के नेतृत्व में वेस्टइंडीज की टीम भारत आयी। 1971 की हार के बाद सोबर्स जैसे महान खिलाड़ी को कप्तानी से हटा दिया गया था और पराजय की तीखी आलोचना की वजह से उन्हें निवृत्ति की घोषणा करनी पड़ी थी। इसी कारण लॉयड को कप्तान बनाया गया था। भारतीय टीम का नेतृत्व किया था टाइगर पटौदी व वेंकटराघवन ने क्योंकि वाडेकर भी निवृत्त हो चुके थे। इस शृंखला में 5 टेस्ट खेले गये और वेस्टइंडीज ने भारत को 3-2 से हराकर यह शृंखला जीत ली। इस तरह उसने अपनी पिछली पराजय का बदला ले लिया। वेस्टइंडीज ने बंगलौर, दिल्ली और मुंबई टेस्ट जीते जबकि भारत को कलकत्ता व चेन्नई टेस्ट में विजय मिली। ग्रीनिज, रिचर्ड्स, कालीचरण व लॉयड अब वेस्टइंडीज के प्रमुख बल्लेबाज थे। लॉयड ने वेस्टइंडीज की टीम का कायाकल्प ही कर दिया था। उन्होंने टीम गठन का तौर तरीका ही बदल दिया था। लॉयड तेज गेंदबाजी पर भरोसा करते थे। उनकी मान्यता थी कि तेज गेंदबाजी ही वेस्टइंडीज की टीम का प्रमुख हथियार है। अतः उन्होंने वेस्टइंडीज के आक्रमण को पूरी तरह तेज गेंदबाजी पर केंद्रित कर दिया। टीम में चार व कभी पांच लगभग एक ही रफ्तार व स्तर के गेंदबाजों को शामिल कर उन्होंने टीम चयन का पैमाना ही बदल डाला। इस शृंखला में भारत के लिए एकनाथ सोलकर व गुंडप्पा विश्वनाथ ने शतकीय पारियां खेलीं। ऐंडी रॉबर्ट्स ने अपनी घातक तेज गेंदबाजी द्वारा चेन्नई में खेले गये चौथे टेस्ट में 121 रन देकर 12 विकेट लिये मगर फिर भी उनकी टीम हार गयी क्योंकि

उनके बल्लेबाज असफल रहे। क्रिकेट में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब खिलाड़ियों के अच्छे निजी प्रदर्शन के बावजूद उनकी टीम को पराजित होना पड़ा है। जीत के लिए संतुलित प्रदर्शन जरूरी है। गेंदबाजी के साथ-साथ बल्लेबाजी भी तो अच्छी होनी चाहिए। जब तक गेंदबाजों, बल्लेबाजों और क्षेत्ररक्षकों को एक दूसरे का सहयोग न मिले जीतना नामुमकिन है।

अगले ही साल 1976 में भारतीय टीम वेस्टइंडीज की यात्रा पर गयी। भारत के कप्तान थे बिशन सिंह बेदी और वेस्टइंडीज के कप्तान थे क्लाइव लॉयड। 5 टेस्ट मैचों वाली यह शृंखला वेस्टइंडीज ने 2-1 से जीत ली। दो टेस्ट 'ड्रा' रहे। वेस्टइंडीज ने ब्रिज टाउन और किंगस्टन टेस्ट जीते। इस बार भी पोर्ट ऑफ स्पेन पर दो टेस्ट खेले गये। पहला तो 'ड्रा' रहा तथा दूसरा भारत ने जीता। पोर्ट ऑफ स्पेन पर जो दूसरा मैच खेला गया उसमें भारत 6 विकेट से जीता। यह जीत इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इस टेस्ट में आखिरी पारी खेलते हुए भारत ने 4 विकेट पर 406 रन बनाये। यह टेस्ट इतिहास की असाधारण घटना है। दरअसल यह शृंखला का तीसरा टेस्ट था और जॉर्ज टाउन में खेला जाना था। लेकिन अनवरत तेज बारिश के कारण इसे पोर्ट ऑफ स्पेन में खेला गया और भारत को जीतने का सौभाग्य मिला। चौथी पारी में चार सौ के ऊपर का लक्ष्य पार करना असाधारण बात थी। लॉयड को लगा कि चूंकि पहले तीन टेस्ट में भारतीय बल्लेबाजी लड़खड़ाती रही है अतः 405 का लक्ष्य पार करना उसके लिए कठिन व चुनौतीपूर्ण होगा—खासकर खराब होते विकेट पर आखिरी पारी खेलते हुए और वह भी वेस्टइंडीज की तेज व खौफनाक गेंदबाजी के खिलाफ। चौथे व पांचवें दिन विकेट टर्न भी ले रहा था। लेकिन वेस्टइंडीज के 'स्पिनर्स' जुमादीन व इशशान अली पर्याप्त 'टर्न' नहीं करवा पा रहे थे। गावसकर पोर्ट ऑफ स्पेन पर हमेशा अच्छा खेले हैं। गावसकर व अंशुमन गायकवाड़ ने अच्छी शुरुआत की और फिर मोहिंदर अमरनाथ व विश्वनाथ भी डटकर खेले। ब्रजेश पटेल ने भी अच्छी बल्लेबाजी की। नतीजतन सिर्फ 3 विकेट खोकर भारत ने यह दुर्लभ लक्ष्य पार कर लिया। इसके बाद ही शायद लॉयड ने तय किया कि भविष्य में वह 'स्पिनर्स' की बजाय तेज गेदबाजों पर ही भरोसा करेंगे। इसके पहले 1948 में महान ब्रेडमेन की आस्ट्रेलियाई टीम ने ही टेस्ट क्रिकेट में चार सौ के लक्ष्य का पीछा किया था। भारत ने भी वैसा ही साहसिक कार्य कर दिखाया। ऐसे सकारात्मक रुख द्वारा ही टेस्ट क्रिकेट को लोकप्रिय बनाया जा सकता है। यह खिलाड़ियों एवं कप्तानों की सोच कर निर्भर करता है कि टीम कैसा रुख अपनाएगी। पोर्ट ऑफ स्पेन टेस्ट की ही तरह त्रिनिडाड में भी भारतीय टीम ने सकारात्मक खेल दिखाया।

1978-79 में कालीचरण के नेतृत्व में वेस्टइंडीज की टीम भारत आयी। कैरी पैकर से अनुबंधित होने के कारण अनेक चोटी के खिलाड़ी वेस्टइंडीज बोर्ड द्वारा निष्कासित किये जाने के कारण टीम में नहीं आ पाये। अनेक समीक्षकों ने इसे दोयम

दर्जे की टीम कहा। भारतीय टीम का नेतृत्व किया गावसकर ने। मुंबई टेस्ट 'ड्रा' रहा, बंगलौर टेस्ट को बीच ही में रोक देना पड़ा क्योंकि अंतिम दिन अचानक भड़के दंगे के कारण खेल नहीं हो पाया तथा कलकत्ता, दिल्ली व कानपुर टेस्ट 'ड्रा' रहे जबकि चेन्नई में खेले गये चौथे टेस्ट में भारत ने वेस्टइंडीज को 3 विकेट से हरा दिया। इस तरह 5 टेस्ट की यह शृंखला भारत ने 1-0 से जीत ली। कानपुर टेस्ट का उल्लेख जरूरी है। इस टेस्ट में भारत ने पहली पारी 7 विकेट पर 644 रन बनाकर घोषित कर दी। यह भारत का वेस्टइंडीज के खिलाफ सर्वाधिक टेस्ट स्कोर है। वेस्टइंडीज के लिए कालीचरण व विलियम्स ने तथा भारत के लिए गावसकर ने 4, वेंगसरकर व विश्वनाथ ने 2-2 तथा मोहिंदर अमरनाथ व कपिल देव ने 1-1 शतक बनाया। इसी शृंखला में गावसकर ने दिल्ली टेस्ट में अपना 29वां टेस्ट शतक बनाकर ब्रेडमेन के शतकों की बराबरी की। यह शतक उन्होंने 94 गेंदों में 180 मिनट खेलकर बनाया। अब ब्रेडमेन के टेस्ट शतकों की बराबरी करके गावसकर को उनसे आगे निकलने का इंतजार था। 1983 में भारतीय टीम वेस्टइंडीज गयी। इस बार भारत के कप्तान थे कपिल देव तथा वेस्टइंडीज की कप्तानी की लॉयड ने। अब तक कैरी पैकर के कारण खिलाड़ियों पर लगा प्रतिबंध हट चुका था। 5 टेस्ट मैचों की यह शृंखला वेस्टइंडीज ने 2-0 से जीत ली। 3 टेस्ट 'ड्रा' रहे। वेस्टइंडीज ने पहला और चौथा टेस्ट जीता। दूसरा, तीसरा व पांचवां टेस्ट 'ड्रा' रहा। भारत के लिए मोहिंदर अमरनाथ ने 2 तथा कपिल देव तथा रवि शास्त्री ने 1-1 शतक बनाया। वेस्टइंडीज के लिए ग्रीनिज, डूजों, हेंस, लॉयड, लॉगी व रिचर्ड्स ने शतक बनाये।

1983 के प्रूडेंशियल विश्व कप में भारत से पराजित होने के बाद अक्तूबर में लॉयड के नेतृत्व में वेस्टइंडीज की टीम भारत की यात्रा पर आयी। भारत के कप्तान कपिल देव ही थे। इस शृंखला में 6 टेस्ट खेले गये। 3 टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और 3 में वेस्टइंडीज जीती। इस तरह उसने यह शृंखला 3-0 से जीत ली। इस शृंखला की 10 पारियों में भारत के कप्तान कपिल देव ने 18.51 की औसत से 29 विकेट लिये जो कि दोनों देशों के बीच खेली गयी किसी भी शृंखला में किसी भी भारतीय गेंदबाज द्वारा लिये गये सर्वाधिक विकेट हैं। वेस्टइंडीज के लिए उसके तेज व खौफनाक गेंदबाज मेल्कम मार्शल ने 11 पारियों में 18.81 की औसत से 33 विकेट लिये जो कि दोनों देशों के बीच खेली गयी किसी भी शृंखला में वेस्टइंडीज के किसी गेंदबाज द्वारा लिये गये सर्वाधिक विकेट हैं। सामान्यतः ऐसी मान्यता है कि भारतीय विकेट धीमे व कम उछाल वाले हैं। तेज गेंदबाज उन्हें गेंदबाजी की कब्रगाह कहते हैं। मगर यदि ऐसे विकेट पर कपिल व मार्शल ने अपनी-अपनी टीमों के लिए शृंखला में सर्वाधिक विकेट लिये तो यह उनकी प्रतिभा एवं कौशल का ही परिचायक है। इस शृंखला में मार्शल का तांडव तो जैसे सिर पर चढ़कर बोल रहा था। यह आलम था कि सिर्फ भारतीय बल्लेबाज ही नहीं भारतीय दर्शक भी उनके दनदनाते हुए 'रन अप',

गेंदबाजी के 'एक्शन' व गोली की गति से आती गेंद से खौफ खाते थे। उनकी गेंदबाजी में रॉबर्ट्स या होल्डिंग जैसी सहजता, लय व कलात्मकता तो नहीं थी मगर रफ्तार गजब की थी और उछाल भी खूब थी। सड़क बनाने वाले इंजिन की तरह जब वह भागते हुए आते थे तो सहसा बल्लेबाज सिहर जाते थे। इस शृंखला में वेस्टइंडीज के लिए लॉयड ने 2 तथा रिचर्ड्स, ग्रीनिज, फ्रेडरिक्स व लैरी गोम्स ने 1-1 शतक बनाया। भारत के लिए गावसकर व वेंगसरकर ने 2-2 शतक बनाये। दिल्ली में खेले गये दूसरे व चेन्नई में खेले गये छठे टेस्ट में गावसकर ने खुलकर मार्शल को 'हुक' व 'पुल' किया। इस बार सामान्यतया सुरक्षात्मक शैली से खेलने वाले गावसकर का नया ही रूप हमारे सामने आया। नवजोत सिंह सिद्धू ने इसी शृंखला से अपने टेस्ट जीवन की शुरुआत की। अब गावसकर विश्व के सर्वाधिक टेस्ट शतक बनाने वाले बल्लेबाज बन गये।

चाल साल बाद 1987-88 में वेस्टइंडीज की टीम फिर भारत आयी। इस बीच चौथा विश्व कप संपन्न हो चुका था। वेस्टइंडीज के कप्तान थे विवियन रिचर्ड्स और भारतीय टीम की कप्तानी की वेंगसरकर व रवि शास्त्री ने। चार टेस्ट मैचों की यह शृंखला बराबर रही। एक टेस्ट वेस्टइंडीज ने जीता और एक भारत ने तथा दो टेस्ट 'ड्रा' हुए। दिल्ली में खेले गये पहले टेस्ट में वेस्टइंडीज ने भारत को 5 विकेट से हराकर शृंखला में बढ़त ले ली। फिर मुंबई व कलकत्ता टेस्ट 'ड्रा' रहे। इसके बाद चेन्नई में खेले गये चौथे, अंतिम व निर्णायक टेस्ट में भारत ने वेस्टइंडीज को 255 रनों से हराकर शृंखला बराबर कर ली। इस टेस्ट में अपने टेस्ट जीवन की शुरुआत करते हुए लेग स्पिन-गुगली-टॉप स्पिन गेंदबाज नरेंद्र हिरवानी ने 136 रन देकर मैच में 16 विकेट लिये जो कि एक कीर्तिमान था। भारत के लिए वेंगसरकर ने 2 तथा कपिल देव ने 1 शतक बनाया जबकि वेस्टइंडीज के लिए ग्रीनिज, लोगी, हूपर व रिचर्ड्स ने शतकीय पारियां खेलीं। इस शृंखला में भारत को गावसकर की सेवाएं नहीं मिलीं क्योंकि वे अवकाश ग्रहण कर चुके थे। चेन्नई टेस्ट में जब भारत ने जीत दर्ज कर शृंखला बराबर की तब कप्तानी रवि शास्त्री कर रहे थे। उन्होंने हिरवानी का बहुत अच्छा उपयोग किया जो कि उनकी क्रिकेट समझ का परिचायक था। एक लेग स्पिनर की सफलता के लिए जरूरी है कि उसे अपने कप्तान का विश्वास प्राप्त हो तथा साथी खिलाड़ियों से पूरा सहयोग मिले।

1989 में वेंगसरकर के नेतृत्व में भारतीय टीम वेस्टइंडीज के दौरे पर गयी। वेस्टइंडीज के कप्तान रिचर्ड्स ही थे। इस शृंखला में 4 टेस्ट खेले गये। एक टेस्ट 'ड्रा' रहा तथा तीन में वेस्टइंडीज विजयी हुई और इस तरह उसने यह शृंखला 3-0 से जीत ली। इस शृंखला में वेस्टइंडीज की टीम भारतीय टीम पर हावी रही। उसके तेज गेंदबाजों के तांडव के सामने भारतीय बल्लेबाजों ने हथियार डाल दिये। शायद वह पिछली शृंखला के चेन्नई टेस्ट की पराजय का बदला लेना चाहती थी। हिरवानी

सौ फीसदी 'फिट' नहीं थे, अतः वहां कुछ खास नहीं कर पाये। वेस्टइंडीज के लिए रिचर्डसन ने 2 तथा रिचर्ड्स व हेंस ने 1-1 शतक बनाये। भारत के लिए संजय मांजेरकर, रवि शास्त्री व सिद्धू ने शतक लगाये।

1994 में कॉर्टनी वॉल्श के नेतृत्व में वेस्टइंडीज ने भारत का दौरा किया। रिचर्ड्स अवकाश प्राप्त कर चुके थे। ग्रीनिज व हेंस भी नहीं थे। अब भारत के कप्तान थे अजहरुद्दीन। इस शृंखला में 3 टेस्ट खेले गये जिनमें से एक 'ड्रा' रहा तथा 1-1 में भारत तथा वेस्टइंडीज की टीमें जीतीं। मुंबई में खेले गये पहले टेस्ट में भारतीय टीम जीती थी तो चंडीगढ़ में खेले गये तीसरे व अंतिम टेस्ट में वेस्टइंडीज की जीत हुई। भारत के लिए सिद्धू व तेंदुलकर ने नागपुर में तथा मनोज प्रभाकर ने चंडीगढ़ टेस्ट में शतक बनाया। वेस्टइंडीज के लिए जिमी एडम्स ने नागपुर तथा चंडीगढ़ टेस्ट में शतक लगाया। जिमी एडम्स का साहस व एकाग्रता तथा बड़ी पारी खेलने की जिद देखते ही बनती थी। उनके खेल में वामहस्त बल्लेबाजों जैसी सहजता व आकर्षण तो नहीं था पर उनकी संघर्ष क्षमता गजब की थी। दोनों ही टीमों में अब चोटी के खिलाड़ी नहीं थे। भारत को भी कपिल की सेवाएं प्राप्त नहीं थीं। वह सेवानिवृत्त हो चुके थे। 1996 में छठी विश्व कप स्पर्धा खेली गयी। इसकी समाप्ति के बाद 1997 में भारतीय टीम वेस्टइंडीज गयी। यह दोनों देशों के बीच खेली गयी अब तक की अंतिम व ताजा शृंखला थी। इस बार भारत के कप्तान थे सचिन तेंदुलकर व वेस्टइंडीज की कप्तानी की कॉर्टनी वॉल्श ने। 5 टेस्ट मैचों की इस शृंखला के 4 टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और 1 में वेस्टइंडीज जीत गयी। इस तरह यह ताजा शृंखला उसने 1-0 से जीत ली। ब्रिज टाउन में खेले गये शृंखला के तीसरे टेस्ट में भारत को जीत के लिए केवल 120 रन बनाने थे लेकिन उसके लिए यह छोटा सा लक्ष्य पार करना भी मुश्किल हो गया और उसकी पूरी टीम 81 रनों पर ढेर हो गयी। नवजोत सिंह सिद्धू इंग्लैंड के दौरे को बीच में छोड़ने के कारण निष्कासन की सजा भुगत कर टीम में वापस आ गये और पोर्ट ऑफ स्पेन पर खेले गये दूसरे टेस्ट में उन्होंने अपने जीवन का श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 201 रनों की पारी खेली जो कि उनका टेस्ट क्रिकेट का सर्वाधिक स्कोर है। 5 टेस्ट की 7 पारियों में 72 की औसत से 360 रन बनाने वाले मध्यक्रम के युवा बल्लेबाज राहुल द्रविड़ भारत के सफलतम बल्लेबाज साबित हुए। उधर वेस्टइंडीज के सफलतम बल्लेबाज रहे शिवनारायण चंद्रपाल जिन्होंने 5 टेस्ट की 8 पारियों में 73.84 की औसत से 443 रन बनाये जिनमें उनके जीवन का पहला टेस्ट शतक भी शरीक है। तेंदुलकर, अजहर, सिद्धू व जडेजा के होते हुए द्रविड़ का विश्वसनीय प्रदर्शन तथा लारा व हूपर के होते हुए चंद्रपाल की सफल बल्लेबाजी भविष्य के लिए शुभ संकेत थे।

भारत तथा वेस्टइंडीज के क्रिकेट खेलने के तौर-तरीके में सबसे बडा साम्य तो यह है कि दोनों ही देशों के खिलाड़ी अपनी शैली में खेलते हैं। दोनों ही देश

अभावग्रस्त रहे हैं तथा श्वेतों द्वारा शोषण के शिकार हो चुके हैं। हो सकता है कि वे सोचते हों कि क्रिकेट का मैदान ऐसा स्थान है जहां वे अपने ऊपर किये गये अन्याय व शोषण का बदला ले सकते हैं। बराबरी का अवसर उनके सामने होता है। अतः श्वेतों की टीम के खिलाफ दोनों ही टीमें खास खुन्नस से खेलती हैं। श्वेतों के खिलाफ खेलने, उनका विकेट लेने अथवा उनकी गेंद पर बाउंड्री लगाने व उन्हें हराने में दोनों ही टीमों के खिलाड़ियों को मजा आता है। उन्हें लगता है कि ऐसा करके उन्होंने अतीत में उन पर किये गये अन्याय व ज्यादती का आंशिक बदला तो ले ही लिया है। तभी तो भारत, वेस्टइंडीज, श्रीलंका व पाकिस्तान के खिलाड़ियों की खेल शैली बहुत कुछ मिलती-जुलती है। कारण यही है कि इन चारों राष्ट्रों की समस्याएं भी लगभग एक जैसी ही रही हैं। वेस्टइंडीज के महान ऑलराउंडर लैरी कांस्टनटाइन ने ठीक ही कहा था कि इंग्लैंड या आस्ट्रेलिया को पछाड़ने का यही सबसे अच्छा तरीका है कि आप अपने मूल व नैसर्गिक अंदाज में खेलें। जब भी भारत, पाकिस्तान, वेस्टइंडीज और श्रीलंका की टीमें अपने ही अंदाज में और अपनी पूरी क्षमता से खेलती हैं, दुनिया की सभी टीमें उनके समाने बौनी लगती हैं। ये चारों देश आक्रामक व आकर्षक क्रिकेट खेलते हैं।

अभी तक भारत-वेस्टइंडीज के बीच 15 टेस्ट शृंखलाएं खेली जा चुकी हैं जिनमें से 10 वेस्टइंडीज ने जीती हैं और 2 भारत ने। 2 में दोनों टीमें 1-1 से बराबर रही हैं और 1962 की शृंखला के सभी टेस्ट 'ड्रा' रहे हैं। भारत एक शृंखला भारत में जीता है व एक वेस्टइंडीज में। वेस्टइंडीज ने 5 शृंखलाएं वेस्टइंडीज में जीती हैं व 5 भारत में। दोनों के बीच 70 टेस्ट खेल जा चुके हैं जिनमें से 28 वेस्टइंडीज ने जीते हैं व 7 भारत ने तथा 35 ड्रा रहे हैं। इतिहास के मान से वेस्टइंडीज का पलड़ा भारी रहा है।

1983 में वेस्टइंडीज के खिलाफ दिल्ली टेस्ट में खेले गये दूसरे टेस्ट में शतक बनाकर सुनील गावसकर ने ब्रेडमेन के 29 टेस्ट शतक के कीर्तिमान की बराबरी की और फिर इसी शृंखला के चेन्नई टेस्ट में अपना 30वां टेस्ट शतक बनाया व इस तरह टेस्ट शतकों का नया विश्व कीर्तिमान बनाया। गावसकर ने अपने अधिकांश टेस्ट शतक वेस्टइंडीज के तेज गेंदबाजों के खिलाफ व उन्हीं के तेज विकेट पर खेल कर बनाये हैं।

भारत के खिलाफ पहला टेस्ट खेलकर वॉल्कॉट, गोमेज, वीक्स व क्रिश्चियानी ने 1948 में, पेराड्यू व सोबर्स ने 1958 में, मैकमोरिस ने 1961 में, कालीचरण व ग्रीनिज ने 1974 में शतक बनाया। यह वेस्टइंडीज के खिलाड़ियों की उपलब्धि है। भारतीय खिलाड़ियों में वेस्टइंडीज के खिलाफ पहली बार खेलते हुए अपने पहले ही टेस्ट में शतक बनाने का गौरव हेमू अधिकारी को प्राप्त है।

वेस्टइंडीज की टीम कभी विश्व विजेता मानी जाती थी। टेस्ट व एक दिवसीय

दोनों ही शैलियों के क्रिकेट में उसका दबदबा था। बरसों तक उसका एकाधिकार रहा। लॉयड के जमाने में तो उसके नीचे के क्रम के बल्लेबाजों को कई बार खेलने को दूसरी पारी मिल ही नहीं पाती थी। या तो वह एक पारी से जीत जाती थी अथवा उसके तेज गेंदबाज कभी थोड़े ढीले पड़ गये तो वह एक या दो या तीन विकेट खोकर आवश्यक रन बना लेती थी। लेकिन उसके तूफानी व लगभग एक ही स्तर के तेज गेंदबाज गार्नर, होल्डिंग, रॉबट्र्स, मार्शल, किंग व क्राफ्ट तथा लॉयड, रिचड्र्स, हेंस, ग्रीनिज व रिचर्डसन जैसे बल्लेबाजों की निवृत्ति के बाद उसे इन्हीं के स्तर के खिलाड़ी अभी नहीं मिल पाये हैं। नतीजतन टीम पहले की तुलना में अब कमजोर हो गयी है। 1997 में भारतीय टीम जिस वेस्टइंडीज टीम से हारी वह यकीनन उसकी अब तक की सर्वाधिक कमजोर टीमों में से है। इसके बावजूद तथ्य यह है कि इस ताजा शृंखला को मिलाकर 1978-79 के बाद से भारत वेस्टइंडीज से कोई टेस्ट शृंखला नहीं जीत पाया है और इस बीच में 6 टेस्ट शृंखलाएं खेली जा चुकी हैं। वेस्टइंडीज की सर्वाधिक कमजोर टीमों में से यह टीम भी भारत की अपेक्षा अधिक ताकतवर व परिणामपरक साबित हुई है। कहा जाता है कि सफलता और असफलता का चक्र तो ऊपर-नीचे होता ही रहता है तथा कोई एक टीम हमेशा शीर्ष पर बनी नहीं रह सकती। इसी में खेल की सार्थकता भी है और आकर्षण भी। मगर जब वेस्टइंडीज भारत के खिलाफ अभी तक भारत की तुलना में भारत से 4 गुना अधिक टेस्ट जीत चुकी है तो इससे उसकी श्रेष्ठता तो स्वयं ही सिद्ध होती है।

8

भारत विरुद्ध पाकिस्तान

जब विभाजन नहीं हुआ था, भारत तथा पाकिस्तान की एक ही क्रिकेट टीम थी। अब्दुल हफीज़ कारदार, फज़ल महमूद और उनसे पहले नज़र मुहम्मद व अमीर इलाही कभी भारतीय क्रिकेट जगत के लोकप्रिय खिलाड़ी थे। मगर पाकिस्तान बन जाने के बाद अनेक खिलाड़ी जो कभी भारत के लिए खेला करते थे, पाकिस्तान चले गये। इनमें कारदार व फज़ल महमूद प्रमुख थे। आपको ख्याल होगा कि 1947-48 में आस्ट्रेलिया के दौरे पर जाने वाली भारतीय टीम में एक मध्यम तेज गेंदबाज के रूप में फज़ल महमूद का चयन हुआ था। मगर चूंकि वह पाकिस्तान चले गये इस कारण वह भारतीय टीम के साथ नहीं जा पाये। अलग राष्ट्र हो जाने के बाद अंतर्राष्ट्रीय किक्रेट काउंसिल ने पाकिस्तान को भी टेस्ट दर्जा दिया। भारत तथा पाकिस्तान के बीच टेस्ट शृंखलाओं का सिलसिला 1952 से शुरू हुआ। जो कभी एक टीम में खेला करते थे वे अब एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी के रूप में आमने-सामने थे।

1952 में अब्दुल हफीज़ कारदार के नेतृत्व में पहली पाक टीम भारत के दौरे पर आयी। भारतीय टीम का नेतृत्व किया लाला अमरनाथ ने। इस शृंखला में 5 टेस्ट खेले गये। और इसी शृंखला से दोनों देशों के बीच टेस्ट शृंखलाओं की शुरुआत हुई। इस शृंखला में दोनों ही टीमों के खिलाड़ी एक दूसरे की खूबियों व खामियों से भलीभांति परिचित थे। शृंखला के 2 टेस्ट 'ड्रा' रहे, 2 में भारत जीता व 1 में पाकिस्तान। इस तरह दोनों देशों के बीच खेली गयी यह पहली टेस्ट शृंखला भारत ने 2-1 से जीत ली। दिल्ली व मुंबई टेस्ट में भारत जीता जब कि लखनऊ टेस्ट में पाकिस्तान की जीत हुई। चेन्नई व कलकत्ता टेस्ट 'ड्रा' रहे। इस शृंखला में वीनू मनकड़ ने दिल्ली में खेले गये पहले टेस्ट में 131 रन देकर 13 तथा फज़ल महमूद ने लखनऊ में खेले गये दूसरे टेस्ट में 94 रन देकर 12 विकेट लिये जो कि अभी तक दोनों देशों के बीच खेले गये किसी भी टेस्ट में दोनों ही देशों का एक टेस्ट

का श्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन है। फज़ल महमूद की घातक एवं धारदार 'लेगकटर्स' के आतंक के किस्से लोग आज तक सुनाते हैं। भारत के लिए उमरीगर व दीपक शोधन ने तथा पाकिस्तान के लिए नज़र मोहम्मद ने शतक बनाये। मुदस्सर नज़र के पिता नज़र मोहम्मद तो पारी की शुरुआत से खेले व अंत तक खेलकर नाबाद लौटे। ये पांचों टेस्ट चार दिवसीय थे।

1955 में वीनू मनकड़ की अगुआई में भारतीय टीम पाकिस्तान गयी। यह पहला अवसर था जब भारतीय टीम ने पाकिस्तान का दौरा किया। दोनों देशों के बीच यह दूसरी टेस्ट शृंखला थी। इस बार भी पाकिस्तान टीम का नेतृत्व कारदार ने ही किया। इस शृंखला के सभी 5 टेस्ट 'ड्रा' रहे। ये टेस्ट ढाका, भावलपुर, लाहौर, पेशावर व कराची में खेले गये। ये टेस्ट भी चार दिवसीय ही थे। दोनों ही टीमें सुरक्षात्मक शैली अपनाती रहीं और हार के डर से बच कर खेलीं। भारत के लिए शृंखला का एकमात्र टेस्ट शतक उमरीगर ने लगाया। पाकिस्तान की ओर से 2 शतक लगे। ये शतक अलीमुद्दीन व हनीफ मोहम्मद ने लगाये। पाकिस्तान की टीम ने भावलपुर व लाहौर टेस्ट में तीन सौ का आंकड़ा पार किया लेकिन भारतीय टीम किसी भी टेस्ट की किसी भी पारी में तीन सौ रन नहीं बना पायी। उसका सर्वाधिक स्कोर 251 रहा जो उसने लाहौर टेस्ट की दूसरी पारी में बनाया।

5 साल बाद 1960-61 में पाकिस्तान की टीम भारत यात्रा पर आयी। उसके कप्तान थे मध्यम तेज गति के गेंदवाज फज़ल महमूद और भारतीय टीम का नेतृत्व किया नॅरी कंट्रेक्टर ने। मुंबई, कानपुर, कलकत्ता, चेन्नई व दिल्ली इस तरह कुल 5 टेस्ट खेले गये और सभी 'ड्रा' रहे। ये सभी टेस्ट बड़े स्कोर वाले रहे। इस शृंखला में पहली बार सभी टेस्ट पांच दिन के रहे। वरना अभी तक दोनों के बीच खेले जाने वाले मैच चार दिन के ही होते आये थे। पाकिस्तान के लिए इस शृंखला में सईद अहमद ने 2 तथा मुश्ताक मोहम्मद, हनीफ मोहम्मद व इम्तियाज ने 1-1 शतक बनाया। भारत के लिए उमरीगर ने 3 तथा चंदू बोर्डे ने 1 शतक बनाया। चेन्नई टेस्ट की दूसरी पारी में भारत ने 539 रन बनाये जो भारत का पाक के खिलाफ सर्वाधिक स्कोर था।

1978 में भारतीय टीम पाकिस्तान गयी। यानी पिछली शृंखला खत्म होने के 18 वर्ष बाद भारत तथा पाक के बीच टेस्ट शृंखला की शुरुआत हो पायी। भारतीय टीम के कप्तान थे बिशन सिंह बेदी और पाकिस्तान की कप्तानी की मुश्ताक मोहम्मद ने। इस शृंखला में 3 टेस्ट खेले गये। एक टेस्ट तो 'ड्रा' रहा तथा 2 में पाकिस्तान की जीत हुई। इस तरह पाकिस्तान ने भारत से यह शृंखला 2-0 से जीत ली। यह पहला अवसर था जब पाकिस्तान ने भारत से टेस्ट शृंखला जीती। यह शृंखला भी बड़े स्कोर वाली रही। पाकिस्तान के लिए मध्यक्रम के बल्लेबाज जहीर अब्बास ने 194.33 की औसत से 583 रन बनाये जो कि भारत के खिलाफ किसी भी शृंखला

में पाकिस्तान के किसी भी बल्लेबाज द्वारा बनाये गये सर्वाधिक रन हैं। पाकिस्तान के लिए जहीर अब्बास ने एक दोहरा शतक व एक शतक, जावेद मियांदाद ने दो तथा आसिफ इकबाल ने 1 शतक बनाया। भारत के लिए सुनील गावसकर ने कराची में खेले गये दूसरे टेस्ट की दोनों पारियों में शतक बनाया जबकि वेंगसरकर ने फैसलाबाद टेस्ट में शतक बनाया। स्पिन गेंदबाजी ही भारत की सफलता का मुख्य स्रोत रही है। लेकिन पाकिस्तान के सभी विकेट इतने सपाट व बेजान थे कि उन पर प्रसन्ना, चंद्रशेखर व बेदी की स्पिन गेंदबाजी बेअसर रही और पाकिस्तान के बल्लेबाज इन विश्व प्रसिद्ध स्पिन गेंदबाजों को सहजता से व निर्भीक होकर खेलते रहे।

अगले ही वर्ष 1979-80 में पाकिस्तान की टीम ने भारत का दौरा किया। इस बार उसकी टीम के कप्तान थे आसिफ इकबाल और भारतीय टीम का नेतृत्व किया सुनील गावसकर व विश्वनाथ ने। 6 टेस्ट मैचों की इस शृंखला के 4 टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और 2 में भारत जीता। इस तरह भारत ने यह शृंखला 2-0 से जीत ली। भारत ने मुंबई व चेन्नई टेस्ट जीते जबकि बंगलौर, दिल्ली, कानपुर व कलकत्ता में खेले गये टेस्ट 'ड्रा' रहे। भारत के लिए गावसकर ने चेन्नई टेस्ट में व वेंगसरकर ने दिल्ली टेस्ट में शतक बनाया। पाकिस्तान के लिए मुदस्सर नज़र ने बंगलौर टेस्ट में शतक बनाया जो कि पाक की ओर से इस शृंखला में बनाया गया एकमात्र शतक था। दिल्ली टेस्ट में पाकिस्तान के तेज गेंदबाज सिकंदर बख्त ने पहली पारी में 69 रन देकर 8 विकेट लिये जो कि पाकिस्तान के किसी भी गेंदबाज द्वारा भारत के खिलाफ श्रेष्ठ प्रदर्शन है। भारत की ओर से कपिल देव ने इस शृंखला के 6 टेस्ट की 11 पारियों में 32 विकेट लिये जो कि किसी भी भारतीय गेंदबाज का पाकिस्तान के खिलाफ किसी भी शृंखला में अब तक का श्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन है। पाकिस्तान ने बंगलौर टेस्ट की पहली पारी 9 विकेट पर 431 रन बनाकर घोषित की। यह पाकिस्तान टीम का इस शृंखला का सर्वाधिक स्कोर रहा। भारत ने चेन्नई टेस्ट में पहली पारी में 430 रन बनाये जो कि उसका इस शृंखला का किसी एक पारी का सर्वाधिक स्कोर था। बंगलौर में खेले गये पहले ही टेस्ट में चार सौ रनों को पार करके भारतीय बल्लेबाजों का आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने मैच दर मैच अच्छा खेल दिखाया। इस शृंखला में इमरान खान अधिकतर गेंदबाजी कर पाने में असमर्थ रहे। इसका उनकी टीम के प्रदर्शन पर यकीनन विपरीत प्रभाव पड़ा होगा। भारत की इस शृंखला की विजय को आप उसकी पिछली शृंखला की पराजय का बदला मान सकते हैं।

1982-83 में गावसकर के नेतृत्व में भारतीय टीम पाकिस्तान गयी। पाकिस्तानी टीम की कप्तानी की इमरान खान ने। इस शृंखला में 6 टेस्ट खेले गये। 3 टेस्ट 'ड्रा' रहे और 3 पाकिस्तान ने जीते। इस तरह यह शृंखला पाकिस्तान ने 3-0 से जीत ली। पाकिस्तान ने कराची, फैसलाबाद और हैदराबाद सिंध टेस्ट जीते जबकि

लाहौर में खेले गये दोनों टेस्ट तथा कराची में खेला गया तीसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा। इस शृंखला में कप्तान इमरान खान ने अपनी तेज और 'स्विंग' गेंदबाजी द्वारा 6 मैचों की 10 पारियों में 40 विकेट लेकर नया कीर्तिमान बनाया। अभी तक दोनों ही देशों के किसी भी गेंदबाज ने किसी भी शृंखला में इतने विकेट नहीं लिये हैं। भारत के लिए मोहिंदर अमरनाथ ने 90.83 की औसत से शृंखला में 584 रन बनाये। वह भारत के सफलतम बल्लेबाज रहे। इमरान की कहर बरपाती 'इन डिपर' को मोहिंदर जिस आत्मविश्वास व तकनीक से खेले उसकी सभी ने प्रशंसा की। मोहिंदर एक 'फ्रंट फुट' प्लेयर रहे, अतः अंदर आती हुई गेंदों को वे बड़ी खूबी से खेले। इमरान के अलावा पाकिस्तान के दाहिने हाथ के लेग स्पिन-गुगली व फ्लिपर गेंद करने वाले अब्दुल कादिर की कलाई के मोड़ से की गयी स्पिन ने भी भारतीय बल्लेबाजों को परेशान किया। तब दुनिया में कहीं भी कोई स्तरीय लेग स्पिनर नहीं था। अतः किसी भी देश के खिलाड़ियों को लेग स्पिन खेलने का अभ्यास नहीं था। कादिर ने लेग स्पिन की महत्ता को पुनर्स्थापित किया। पाकिस्तान के लिए मुदस्सर नज़र व जहीर अब्बास ने 3-3 तथा इमरान खान, जावेद मियांदाद व सलीम मलिक ने 1-1 शतक बनाया। भारत के लिए मोहिंदर अमरनाथ ने 3 तथा गावसकर व रवि शास्त्री ने 1-1 शतक बनाया। गावसकर ने फैसलाबाद टेस्ट में जो 127 नाबाद रन बनाये उसकी खासियत यह थी कि इस पारी में वह पारी की शुरुआत करने के बाद अंत तक नाबाद होकर लौटे। यह वह समय था जब पाकिस्तान के इमरान खान व भारत के कपिल देव क्रिकेट जगत में विश्व के श्रेष्ठ ऑलराउंडरों के रूप में स्थापित हो चुके थे। यह पहली क्रिकेट शृंखला थी जिसे भारत में महानगरों के अलावा देश के कई अन्य नगरों के वासियों ने भी दूरदर्शन पर देखा।

इस दौरे के बाद 1983 में ही जहीर अब्बास के नेतृत्व में पाकिस्तान की टीम भारत आयी। अब भारत के कप्तान थे कपिल देव। इस शृंखला में 3 टेस्ट खेले गये और तीनों ही 'ड्रा' रहे। ये टेस्ट बंगलौर, जालंधर व नागपुर में खेले गये। पाकिस्तान की ओर से जालंधर में खेले गये दूसरे टेस्ट में वसीम राजा ने 125 रन बनाये। पाकिस्तान की ओर से इस शृंखला में बनाया गया यही एकमात्र टेस्ट शतक था। भारत के लिए बंगलौर में खेले गये पहले टेस्ट में गावसकर ने शतक तथा जालंधर में खेले गये दूसरे टेस्ट में अंशुमन गायकवाड़ ने दोहरा शतक बनाया।

अगले ही वर्ष 1984 में भारतीय टीम ने पाकिस्तान का दौरा किया। भारत के कप्तान थे गावसकर और पाकिस्तान की ओर से कप्तानी की जहीर अब्बास ने। इस शृंखला में केवल 2 टेस्ट खेले गये और दोनों ही 'ड्रा' रहे। ये दोनों ही टेस्ट बड़े स्कोर वाले रहे और जब दोनों ही टीमें बड़ा स्कोर बनायें तो फैसले की उम्मीद कम रहती है। भारत के लिए मोहिंदर अमरनाथ, संदीप पाटिल व रवि शास्त्री ने शतक बनाये तो पाकिस्तान के लिए मुदस्सर नज़र, कासिम उमर, सलीम मलिक

और जहीर अब्बास ने शतकीय पारियां खेलीं।

1982-83 से लेकर 1987 तक यदि भारत में कप्तानी का चक्र कपिल व गावसकर के इर्द-गिर्द घूमता रहा तो पाकिस्तान में यह चक्र जहीर अब्बास व इमरान खान के आसपास। 1987 में जब पाकिस्तान की टीम भारत के दौरे पर आयी तो उसके कप्तान थे इमरान खान। इस बीच अपने कंधे की तकलीफ के कारण गेंदबाजी न कर पाने वाले इमरान खान पर्याप्त विश्राम व इलाज के बाद अब 'फिट' थे। भारतीय टीम का नेतृत्व किया कपिल देव ने। 5 टेस्ट मैचों की यह श्रृंखला पाकिस्तान ने 1-0 से जीत ली। 4 टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और केवल बंगलौर टेस्ट में ही फैसला हो पाया। बंगलौर के घुमाव लेते विकेट पर पाकिस्तान के ऑफ स्पिनर तोसीफ अहमद व लेफ्ट आर्म स्पिनर इकबाल कासिम की लट्टू की तरह घूमती गेंदबाजी के खिलाफ भारतीय टीम न टिक पायी और 17 रनों के मामूली अंतर से हार गयी। चेन्नई, कलकत्ता, जयपुर और अहमदाबाद टेस्ट 'ड्रा' हो जाने के बाद बंगलौर का अंतिम व पांचवां टेस्ट निर्णायक हो गया था। पहले से ही कहा जा रहा था कि विकेट स्पिन गेंदबाजों की मदद करेगा और ऐसा हुआ भी। पाकिस्तान ने पहली पारी में 116 व दूसरी पारी में 249 रन बनाये। इसके जवाब में भारत ने पहली पारी में 145 व दूसरी में 204 रन बनाये और इस तरह पहली पारी में 29 रनों की महत्वपूर्ण बढ़त लेने के बावजूद भारत यह टेस्ट 17 रनों से हार गया। लेकिन भारत के विश्वस्तरीय उद्घाटक बल्लेबाज सुनील गावसकर ने इस टेस्ट में स्पिन गेंदबाजों को मदद दे रहे विकेट पर जो यादगार 96 रन बनाये वे क्रिकेट प्रेमियों को हमेशा याद रहेंगे। इस पारी को आजादी के बाद किसी भी भारतीय बल्लेबाज द्वारा खेली गयी महानतम पारियों में शुमार किया जायेगा। स्पिन गेंदबाजी कैसे खेली जा सकती है यह इस कला का आदर्श उदाहरण था। एक उद्घाटक बल्लेबाज किस धैर्य, एकाग्रता व तकनीक से स्पिन गेंदबाजों का किस खूबी से सामना कर सकता है यह देखना एक यादगार उपलब्धि थी। इस श्रृंखला में पाकिस्तान के लिए शोएब मोहम्मद व इमरान खान ने चेन्नई टेस्ट में व रमीज राजा ने जयपुर टेस्ट में शतक बनाया जबकि भारत के लिए अजहरुद्दीन ने कलकत्ता व जयपुर टेस्ट में तथा वेंगसरकर ने अहमदाबाद टेस्ट में शतक बनाया।

इस श्रृंखला के बाद अभी तक दोनों देशों के बीच सिर्फ एक और श्रृंखला खेली गयी है। 1989-90 में कृष्णमाचारी श्रीकांत के नेतृत्व में भारत की टीम पाकिस्तान गयी। पाकिस्तान टीम का नेतृत्व इमरान खान ने किया। अब भारतीय टीम परिवर्तन के दौर से गुजर रही थी और पुनर्निर्माण की स्थिति में थी। खिलाड़ियों व बोर्ड के बीच पारिश्रमिक एवं अनुबंध की शर्तों को लेकर उठे विवाद के बाद सर्वोच्च न्यायालय के बीच-बचाव करने पर टीम जैसे-तैसे रवाना हुई। इस श्रृंखला में 4 टेस्ट खेले गये और चारों ही 'ड्रा' रहे। लाहौर में खेले गये श्रृंखला के तीसरे टेस्ट की पहली पारी

में भारत ने 9 विकेट पर 539 रनों का बड़ा स्कोर कर पारी घोषित की जो कि एक कीर्तिमान था। यह भारत का पाकिस्तान के खिलाफ अब तक किसी एक पारी का सर्वाधिक स्कोर है। इस श्रृंखला में भारत के लिए संजय मांजरेकर ने कराची व लाहौर टेस्ट में तथा अजहरुद्दीन ने फैसलाबाद टेस्ट में शतक बनाया जबकि पाकिस्तान के लिए जावेद मियांदाद व शोएब मोहम्मद ने लाहौर टेस्ट में तथा सलीम मलिक ने कराची टेस्ट में शतक बनाया। इसी श्रृंखला में पाकिस्तानी दर्शकों ने मैदान में घुसकर भारत के कप्तान श्रीकांत के साथ बदसलूकी की व उनकी कमीज भी फाड़ डाली। यह अप्रिय घटना पीड़ादायक थी और इससे दोनों देशों के खिलाड़ियों व नागरिकों में अनावश्यक तनाव बढ़ गया जो कि टाला जा सकता था।

भारत तथा पाकिस्तान के बीच टेस्ट मैचों की शुरुआत 1952 से हुई और तब से लेकर 1989-90 में खेली गयी इस आखिरी श्रृंखला तक दोनों देशों के बीच 29 वर्षो में 10 टेस्ट श्रृंखलाएं खेली गयी हैं, जिनमें से 2 में भारत जीता है तथा 3 में पाकिस्तान। जबकि 3 श्रृंखलाएं 'ड्रा' रही हैं। जाहिर है अभी तक पलड़ा पाक का ही भारी रहा है, अब कई वर्षो से दोनों देशों के बीच कोई टेस्ट श्रृंखला नहीं खेली जा सकी है। यद्यपि कार्यक्रम तो कई बार बना व निरस्त हुआ है। इसका कारण दोनों देशों के बीच चल रही तनातनी रही है।

दोनों ही देश परंपरागत प्रतिद्वंद्वी देश रहे हैं। अतः दोनों देशों के बीच हर मुकाबला सिर्फ मुकाबला नहीं रह जाता। मैदानी मुकाबला भी सिर्फ मैदान तक सीमित नहीं रहता। उसके साथ भावात्मक लगाव, राष्ट्रीय भावना एवं प्रतिष्ठा जुड़ जाती है और खेल भी राष्ट्रीय गौरव की वस्तु बन जाता है। फिर भले ही वह क्रिकेट का मुकाबला हो अथवा हॉकी का या फिर किसी और खेल का। मैदान पर खेलने वाले तो एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते ही हैं, मैदान पर मौजूद दर्शक ही नहीं टेलीविजन पर मैच देख रहे या रेडियो पर कमेंट्री सुन रहे लोग भी अपनी-अपनी समर्थक टीमों में विभाजित हो जाते हैं। पत्रकार एवं समीक्षक भी सौ फीसदी निष्पक्ष नहीं रह पाते और ऐसा खाका खींचते हैं मानो कोई मैच खेल का मुकाबला न होकर कोई अहम राष्ट्रीय मुद्दा बन गया हो। हार-जीत इतनी ज्यादा महत्वपूर्ण लगने लगती है कि लोग बाकायदा बहस करते हैं और ऐसा वातावरण बन जाता है कि भले ही किसी टीम के समर्थकों की पसंदीदा टीम अगर जीत न पाये पर कम से कम प्रतिस्पर्धी टीम को जीतने भी न दे। खिलाड़ियों पर उच्च स्तरीय प्रतिस्पर्धा का इतना अधिक दबाव रहता है कि वे और कोई दबाव या तनाव बर्दाश्त ही नहीं कर पाते। हाल ही में टोरंटो में भारत-पाक के बीच खेले गये एक दिवसीय मैचों की श्रृंखला के दौरान पाकिस्तान के खिलाड़ी इंजमाम-उल-हक का किसी दर्शक की नारेबाजी के खिलाफ बल्ला लेकर उसके ऊपर दौड़ पड़ना इस बात का जीता-जागता प्रमाण है। भावना एवं उत्तेजना का ऐसा ही अतिरेक आप इंग्लैंड तथा आस्ट्रेलिया के बीच खेली जाने

वाली 'एशेज' शृंखला में भी देख सकते हैं। फिर भले ही शृंखला इंग्लैंड में खेली जाये या आस्ट्रेलिया में। भले ही यह खेल एवं खिलाड़ियों के बृहतर हित में न हो मगर वास्तविकता यही है कि जब भारत तथा पाकिस्तान की टीमें आपस में प्रतिस्पर्धा करती हैं तो दोनों ही देशों के अन्य मुद्दे गौण व मैच का नतीजा महत्वपूर्ण हो जाता है। क्रिकेट का मैच ऐसा अहम मुद्दा बन जाता है कि जिस पर पूरा देश एक हो जाता है। राजनीतिज्ञों को चाहिए कि वे तलाशें कि जब क्रिकेट मैच समूचे देश को एकता के धागे में बांध सकता है तो कोई ऐसा बड़ा मुद्दा क्यों न खोजा जाये जो इतने बड़े देश को एकता के धागे में बांध दे ? भारत और पाकिस्तान भले ही किसी अन्य राष्ट्र से हार जायें परंतु वे किसी भी कीमत पर एक दूसरे से हारना पसंद नहीं करते। बल्कि उन्हें खुद की हार पर इतना अफसोस नहीं होता जितनी कि दूसरे की हार पर खुशी होती है। मुकाबले भले ही शारजाह में हों या टोरंटो अथवा सिंगापुर या फिर भारत अथवा पाकिस्तान में, दोनों देशों के समर्थक अपनी-अपनी टीमों के समर्थन में झंडे लहराते नजर आते हैं। दर्शकों का मैदान में घुस आना या मैदान में खेल रहे खिलाड़ियों के खेल में व्यवधान डालना इसी अति उत्साह का परिणाम है, जिसके कारण खेल स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माध्यम नहीं रह जाता। फलस्वरूप खिलाड़ी भी अतिरिक्त तनाव में रहते हैं जिसके कारण उनकी एकाग्रता प्रभावित होती है और वे सहजता से नहीं खेल पाते। 1989-90 के पाकिस्तान दौरे में भारत के कप्तान श्रीकांत के साथ पाक दर्शकों द्वारा की गयी बदसलूकी इसी का दुष्परिणाम है। छठे विश्व कप में भारत-पाक मैच के दौरान पाक खिलाड़ियों पर दर्शक दीर्घा से बोतलें फेंका जाना तथा हारकर पाकिस्तान लौटने पर पाक खिलाड़ियों के साथ पाकिस्तानी क्रिकेट प्रेमियों द्वारा किया गया दुर्व्यवहार जोश के अतिरेक की ही अभिव्यक्ति है। हर बाउंड्री के साथ दिल की धड़कनों का तेज होना व हर विकेट के गिरने पर दिल का बैठना हमें इस तरह विभाजित कर देता है कि मानो हम खेल नहीं द्वंद्व या युद्ध देख रहे हैं। खेल के साथ राष्ट्रीय भावना एवं सियासी रंग के घुल जाने के कारण ही 1990 से भारत-पाक के बीच टेस्ट स्थगित हैं। हां सीमित ओवर के एक दिवसीय मैच जरूर खेले जाते रहे हैं और उस दौरान भी खेल केवल खेल ही नहीं रह पाया है। इस बात पर भी गौर किया जाना चाहिए कि यदि वैमनस्य व कटुता रोकी नहीं जा सकती है तो क्या इसे कम भी नहीं किया जा सकता ? कुछ लोगों का ख्याल है कि दोनों देशों के बीच और अधिक शृंखलाएं खेले जाने पर यह दुर्भावना अपने आप कम होगी। अभी क्योंकि मुकाबले कम, कभी-कभी व लंबे समय बाद होते हैं इस कारण जोश अधिक रहता है। विचारणीय प्रश्न यह है कि भद्र पुरुषों द्वारा सफेद कपड़ों एवं दिन के उजाले में लाल गेंद से खेले जाने वाले इस खेल में कैरी पैकर के रंगीन कपड़े, सफेद गेंद, काले 'साइट स्क्रीन' और कृत्रिम प्रकाश की दूधिया रोशनी के साथ व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता व धन लोलुपता के जुड़ जाने से इस खेल

का चरित्र वैसे ही बदल गया है। उसमें सियासी रंग जोड़कर हम खेल की वह मूल भावना तो नष्ट न करें, जिसके तहत बल्लेबाज के अच्छे 'स्ट्रोक' पर खुद गेंदबाज द्वारा ताली बजाकर सराहने व अच्छी गेंद पर बल्लेबाज द्वारा तारीफ में सिर हिलाकर उसके प्रति सम्मान व्यक्त करने की गौरवशाली परंपरा रही है। खेल तोड़ता नहीं जोड़ता है। खिलाड़ी भी यही कहते व यही चाहते हैं कि खेल स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माध्यम बना रहे व नियमानुसार भाईचारे की भावना के साथ खेला जाता रहे। 1983 का विश्व कप भारत ने, 1992 का विश्व कप पाकिस्तान ने और 1996 का विश्व कप श्रीलंका ने जीतकर साबित कर दिया है कि जो क्रिकेट प्रतिभा इस उपमहाद्वीप में उपलब्ध है वह किसी अन्य महाद्वीप में उपलब्ध नहीं है। अतः जरूरी है कि भारत-पाक क्रिकेट संबंध सामान्य रहें। दोनों देशों को करीब लाने का काम खेल, कला एवं संस्कृति द्वारा ही मुमकिन है।

9

भारत विरुद्ध न्यूजीलैंड

इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज और पाकिस्तान के बाद न्यूजीलैंड पांचवां क्रिकेट राष्ट्र था जिससे भारत के क्रिकेट संबंध स्थापित हुए। भारत तथा न्यूजीलैंड के बीच क्रिकेट शृंखला की शुरुआत 1955-56 से हुई। यानी पाकिस्तान से क्रिकेट संबंध जुड़ने के चार साल बाद भारत-न्यूजीलैंड के क्रिकेट संबंध कायम हुए और दोनों देशों के बीच क्रिकेट टीमों के आवागमन का सिलसिला शुरू हुआ।

1955-56 में एच. वी. केव के नेतृत्व में पहली न्यूजीलैंड टीम भारत के दौरे पर आयी। भारतीय टीम का नेतृत्व किया पॉली उमरीगर व ऑफ स्पिनर गुलाम अहमद ने। इस पहली शृंखला में 5 टेस्ट खेले गये जिनमें से 3 'ड्रा' रहे और 2 में भारत जीता। इस तरह भारत ने यह शृंखला 2-0 से जीत ली। हैदराबाद में खेला गया पहला, दिल्ली में खेला गया तीसरा व कलकत्ता में खेला गया चौथा टेस्ट 'ड्रा' रहा जबकि मुंबई व चेन्नई टेस्ट में भारतीय टीम विजयी रही। चेन्नई टेस्ट में पंकज राय व वीनू मनकड़ ने पहले विकेट की साझेदारी में 413 रन बनाकर नया विश्व कीर्तिमान बनाया। भारतीय क्रिकेट इतिहास में ही नहीं समूचे विश्व क्रिकेट में पहले विकेट के लिए यह रिकार्ड अभी तक कायम व अछूता है। इसी शृंखला में भारत के लिए 105.20 की औसत से वीनू मनकड़ ने 526 तथा न्यूजीलैंड के लिए आकर्षक शैली के बल्लेबाज बर्ट सटक्लिफ ने 87.25 की औसत से 611 रन बनाये जो कि अभी तक दोनों देशों के बीच खेली गयी टेस्ट शृंखलाओं में दोनों देशों की ओर से बल्लेबाजी का श्रेष्ठ प्रदर्शन एवं सर्वाधिक रन हैं। इसी शृंखला में भारत के सर्वकालिक महान लेग स्पिन गुगली गेंदबाज सुभाष गुप्ते ने 5 मैचों की 10 पारियों में 19.67 की औसत से 34 विकेट लिये जो कि आज तक न्यूजीलैंड के खिलाफ खेली गयी किसी भी शृंखला में किसी भी भारतीय गेंदबाज द्वारा लिये गये सर्वाधिक विकेट हैं। भारत के लिए इस शृंखला में मनकड़ ने 2 दोहरे शतक व विजय मांजरेकर,

पंकज राय ने 2-2 तथा रामचंद, उमरीगर व कृपाल सिंह ने 1-1 शतक बनाया। कृपाल सिंह ने तो अपने टेस्ट जीवन की शुरुआत ही अपने पहले टेस्ट में शतक लगा कर की। न्यूजीलैंड के लिए सटक्लिफ व जॉन रीड ने 2-2 तथा गॉय ने 1 शतक बनाया। सटक्लिफ के दिल्ली टेस्ट में बनाये गये नाबाद 230 रनों की विशेष रूप से तारीफ हुई। भारत ने चेन्नई टेस्ट की पहली पारी में 3 विकेट पर 536 रन बनाकर पारी घोषित कर दी। यह भारत का न्यूजीलैंड के खिलाफ अब तक का किसी भी एक पारी का सर्वाधिक स्कोर है।

इस पहली शृंखला के 10 साल बाद दोनों देशों के बीच दूसरी टेस्ट शृंखला खेली गयी। 1965 में जॉन रीड की अगुआई में न्यूजीलैंड की टीम भारत के दौरे पर आयी। भारत के कप्तान थे मंसूर अली खां पटौदी जो क्रिकेट जगत में टाइगर के नाम से मशहूर हैं। 4 टेस्ट मैचों की इस शृंखला के 3 टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और 1 में भारत जीता। इस तरह भारत ने यह शृंखला 1-0 से जीत ली। चेन्नई, कलकत्ता व मुंबई में खेले गये पहले तीन टेस्ट 'ड्रा' रहे। दिल्ली में खेले गये शृंखला के चौथे और अंतिम टेस्ट में भारत ने न्यूजीलैंड को 7 विकेट से हरा दिया। भारत के ऑफ स्पिनर वेंकटराघवन ने दिल्ली टेस्ट में 72 रन देकर 8 विकेट लिये। यह वेंकटराघवन का श्रेष्ठ टेस्ट प्रदर्शन तो है ही, न्यूजीलैंड के खिलाफ किसी भी भारतीय गेंदबाज का अब तक का एक पारी का श्रेष्ठ प्रदर्शन भी है और सर्वाधिक विकेट भी। वेंकटराघवन की घातक गेंदबाजी ने भारत की इस जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इस शृंखला में भारत के लिए टाइगर पटौदी व दिलीप सरदेसाई ने 2-2 तथा चंदू बोर्डे व विजय मांजरेकर ने 1-1 शतक लगाया। न्यूजीलैंड के लिए रन बनाने वाले प्रमुख बल्लेबाज रहे डाउलिंग, सटक्लिफ और ब्रूस टेलर जिन्होंने 1-1 शतक लगाया।

भारतीय टीम 1968 में पहली बार न्यूजीलैंड के दौरे पर गयी। इस भारतीय टीम के कप्तान थे टाइगर पटौदी। न्यूजीलैंड की टीम की कप्तानी की बी.डब्ल्यू. सिनलेयर व डाउलिंग ने। 4 टेस्ट मैचों की इस शृंखला में भारत 3-1 से विजयी रहा। भारत ने ड्यूनेडिन में खेला गया पहला, विलिंगटन में खेला गया तीसरा व ऑकलैंड में खेला गया चौथा टेस्ट जीता जबकि न्यूजीलैंड के क्राइस्टचर्च में खेले गये दूसरे टेस्ट में जीत दर्ज की। इस शृंखला की खात बात यह थी कि क्राइस्टचर्च में खेले गये दूसरे टेस्ट की पहली पारी में न्यूजीलैंड ने 502 रन बनाये जो कि उसका भारत के खिलाफ अब तक खेली गयी किसी भी शृंखला की किसी भी एक पारी का सर्वाधिक स्कोर है। इस शृंखला में भारत की ओर से एकमात्र शतक अजीत वाडेकर ने बनाया। उन्होंने विलिंगटन टेस्ट में 143 रन बनाये। न्यूजीलैंड की ओर से डाउलिंग ने इस शृंखला में 2 शतक लगाये–पहला ड्यूनेडिन में खेले गये पहले टेस्ट में और दूसरा क्राइस्टचर्च में खेले गये दूसरे टेस्ट में।

अगले ही वर्ष 1969 में न्यूजीलैंड की टीम भारत की यात्रा पर आयी। उसके

कप्तान थे डाउलिंग। भारतीय टीम के कप्तान इस बार भी टाइगर पटौदी ही थे। 3 टेस्ट मैचों की इस शृंखला का मुंबई में खेला गया पहला टेस्ट मैच भारत ने जीता, नागपुर में खेला गया दूसरा टेस्ट न्यूजीलैंड ने और हैदराबाद में खेल गया तीसरा व अंतिम टेस्ट 'ड्रा' रहा। इस तरह यह शृंखला 1-1 से बराबर रही। न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू शृंखला में पहली बार भारत को किसी टेस्ट में पराजित होना पड़ा। यह शृंखला कम स्कोर वाली रही। नागपुर में भारत द्वारा पहली पारी में बनाये गये 257 के स्कोर को छोड़कर दोनों टीमों में से कोई भी टीम किसी भी पारी में ढाई सौ रन नहीं बना पायी। तभी तो दोनों टीमों का कोई बल्लेबाज शृंखला की किसी भी पारी में शतक नहीं बना पाया। यह एक ऐसी शृंखला रही जिसमें कोई शतक नहीं लगा यानी गेंदबाज बल्लेबाजों पर हावी रहे।

इस दौरे के 7 साल बाद 1976 में बिशन सिंह बेदी व सुनील गावसकर के संयुक्त नेतृत्व में भारतीय टीम ने न्यूजीलैंड का दौरा किया। इस शृंखला में न्यूजीलैंड के कप्तान थे टर्नर। 3 टेस्ट मैचों की इस शृंखला का एक टेस्ट 'ड्रा' रहा तथा 1-1 में भारत तथा न्यूजीलैंड की टीमें जीतीं। इस तरह यह शृंखला भी 1969 की शृंखला की तरह 1-1 से बराबर रही। ऑकलैंड में खेले गये शृंखला के पहले टेस्ट में भारत ने न्यूजीलैंड को 8 विकेट से हरा दिया। क्राइस्टचर्च में खेला गया दूसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा और विलिंगटन में खेले गये तीसरे व अंतिम टेस्ट में न्यूजीलैंड ने भारत को एक पारी व 33 रनों से हराकर शृंखला बराबर कर ली। इस शृंखला के तीसरे टेस्ट में रिचर्ड हेडली ने 58 रन देकर 11 विकेट लिये जो कि भारत के खिलाफ न्यूजीलैंड के किसी भी गेंदबाज द्वारा किसी एक टेस्ट में लिए गये सबसे ज्यादा विकेट हैं। इसी टेस्ट में एक पारी में 23 रन देकर हेडली ने 7 विकेट लिये जो कि न्यूजीलैंड के किसी भी गेंदबाज द्वारा एक पारी में भारत के खिलाफ लिये गये सर्वाधिक विकेट भी हैं और गेंदबाजी का श्रेष्ठ प्रदर्शन भी। भारत के ऑफ स्पिनर प्रसन्ना ने ऑकलैंड में खेले गये पहले टेस्ट में 76 रन देकर 8 विकेट लिये जो कि किसी भी भारतीय गेंदबाज द्वारा न्यूजीलैंड के खिलाफ न्यूजीलैंड में खेले गये किसी एक टेस्ट की एक पारी में लिये गये सर्वाधिक विकेट हैं। इस शृंखला में भारत के लिए गावसकर ने 2 व सुरिंदर अमरनाथ ने 1 शतक बनाया। न्यूजीलैंड के लिए इस शृंखला में जोन्स व टर्नर ने 1-1 शतक बनाया।

1976 में ही न्यूजीलैंड की टीम ने भारत का दौरा किया। उसके कप्तान थे टर्नर और भारतीय टीम का नेतृत्व किया बिशन सिंह बेदी ने। इस शृंखला में भी 3 टेस्ट खेले गये। पहला मुंबई में, दूसरा कानपुर में और तीसरा चेन्नई में। कानपुर में खेला गया टेस्ट तो 'ड्रा' रहा और भारत ने मुंबई व चेन्नई टेस्ट जीतकर यह शृंखला 2-0 के अंतर से जीत ली। भारत के लिए गावसकर व विश्वनाथ ने तथा न्यूजीलैंड के लिए पार्कर व टर्नर ने शतक बनाये।

1981 में भारत की टीम न्यूजीलैंड की यात्रा पर गयी। इस श्रृंखला में भारत के कप्तान थे गावसकर और न्यूजीलैंड की कप्तानी की हॉवर्थ ने। यह श्रृंखला भी 3 टेस्ट की ही थी। विलिंगटन में खेले गये पहले टेस्ट में न्यूजीलैंड ने भारत को 62 रनों से हरा दिया और क्राइस्टचर्च में खेला गया दूसरा व ऑकलैंड में खेला गया तीसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा। इस तरह न्यूजीलैंड ने यह श्रृंखला 1-0 से जीत ली। इस श्रृंखला में भारत का कोई भी बल्लेबाज शतक नहीं लगा पाया, मगर न्यूजीलैंड के लिए हॉवर्थ, रीड व राइट—इन तीन बल्लेबाजों ने 1-1 शतक लगाया। विलिंगटन में खेले गये पहले टेस्ट की दूसरी पारी में न्यूजीलैंड की टीम सिर्फ 100 रन बनाकर आउट हो गयी जो कि न्यूजीलैंड का भारत के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट की एक पारी का न्यूनतम स्कोर है।

दोनों देशों के बीच अगली श्रृंखला 7 साल बाद ही यानी 1988 में खेली गयी। इस बार जॉन राइट के नेतृत्व में न्यूजीलैंड की टीम भारत आयी। भारतीय टीम का नेतृत्व किया दिलीप वेंगसरकर ने। यह श्रृंखला भी 3 टेस्ट मैचों की थी। दोनों देशों के बीच यह पांचवीं टेस्ट श्रृंखला थी, जिसमें सिर्फ 3 टेस्ट खेले गये। इस श्रृंखला के 2 टेस्ट भारत ने जीते और 1 न्यूजीलैंड ने। इस तरह भारत इस श्रृंखला में 2-1 से विजयी हुआ। भारत ने बंगलौर में खेले गये पहले टेस्ट में न्यूजीलैंड को 172 रनों से हराया। मुंबई में खेले गये दूसरे टेस्ट में न्यूजीलैंड ने भारत को 116 रनों से हराकर बंगलौर की पराजय का बदला ले लिया। मुंबई टेस्ट में न्यूजीलैंड के ऑफ स्पिनर ब्रेसवेल ने दूसरी पारी में ऐसा कहर ढाया कि भारतीय बल्लेबाजों का विकेट पर खड़ा रहना मुश्किल हो गया व पूरी पारी 145 पर ढह गयी। चेन्नई में खेले गये श्रृंखला के तीसरे, अंतिम व निर्णायक टेस्ट में भारत ने न्यूजीलैंड को 216 रनों से पराजित कर श्रृंखला जीत ली। इस पूरी श्रृंखला में मोहिंदर अमरनाथ की जगह टीम में लिए गये नवजोत सिंह सिद्धू को लेकर काफी विवाद उठा। मगर बंगलौर टेस्ट में 116 रन बनाकर उन्होंने अपने चयन की सार्थकता सिद्ध की। दोनों टीमों के वह अकेले ऐसे बल्लेबाज थे जिन्होंने इस श्रृंखला का एकमात्र शतक बनाने का सम्मान प्राप्त किया।

1990 में अजहरुद्दीन के नेतृत्व में भारतीय टीम न्यूजीलैंड की यात्रा पर गयी। न्यूजीलैंड की कप्तानी इस बार भी जॉन राइट ने ही की। यह श्रृंखला भी 3 टेस्ट की ही थी। पहला टेस्ट क्राइस्टचर्च में खेला गया जो न्यूजीलैंड ने 10 विकेट से जीत लिया। नेपियर में खेला गया दूसरा टेस्ट तथा ऑकलैंड में खेला गया तीसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा। इस तरह 2 टेस्ट 'ड्रा' रहे और एक न्यूजीलैंड ने जीता। न्यूजीलैंड ने यह श्रृंखला 1-0 से जीत ली। इस श्रृंखला में भारत की ओर से एकमात्र शतक अजहरुद्दीन ने बनाया जबकि न्यूजीलैंड की ओर से 5 शतक लगे। 2 जॉन राइट ने बनाये और 1-1 मार्टिन क्रो, जोन्स और स्मिथ ने।

चार साल बाद 1994 में भारतीय टीम ने न्यूजीलैंड जाकर एकमात्र टेस्ट खेला जो 'ड्रा' रहा। भारत के कप्तान थे अजहरुद्दीन तथा न्यूजीलैंड का नेतृत्व किया रदरफोर्ड ने। 1995 में न्यूजीलैंड की टीम भारत के दौरे पर आयी। 3 टेस्ट मैचों की इस शृंखला के 2 टेस्ट 'ड्रा' रहे और एक में भारत जीता। इस तरह भारत ने यह शृंखला 1-0 से जीत ली। बंगलौर में खेले गये पहले टेस्ट में भारतीय टीम 8 विकेट से जीती और चेन्नई में खेला गया दूसरा व कटक में खेला गया तीसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा।

भारत तथा न्यूजीलैंड के बीच 1965 व 1968 में खेली गयी शृंखलाओं में तो 4-4 टेस्ट खेले गये मगर अन्य शृंखलाएं 3-3 टेस्ट वाली ही रहीं। टेस्ट बिरादरी में न्यूजीलैंड को अपेक्षाकृत कमजोर टीम ही माना जाता है। उसे एक दिवसीय मैच तो काफी मिले हैं और एक दिवसीय क्रिकेट में वह महत्वपूर्ण उलटफेर भी करती रही है। मगर चूंकि उसे टेस्ट खेलने का मौका कम मिला है, इस कारण एक टेस्ट टीम के रूप में वह पर्याप्त अनुभव एवं ख्याति प्राप्त नहीं कर पायी है। एक दिवसीय क्रिकेट का तो चरित्र ही कुछ ऐसा है कि उसमें कभी भी कुछ भी हो सकता है। लेकिन क्रिकेट चूंकि मानसिक स्थिरता, एकाग्रता, तकनीक और धैर्य का खेल है, अतः किसी टीम अथवा खिलाडी की वास्तविक क्षमता की परीक्षा टेस्ट क्रिकेट में ही होती है। टेस्ट क्रिकेट में न्यूजीलैंड को आस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज, दक्षिण अफ्रीका, पाकिस्तान व इंग्लैंड तथा भारत के बाद ही गिना जाता है। इसका यह मतलब कतई नहीं कि वहां प्रतिभावान क्रिकेट खिलाड़ियों की कमी है। निजी क्षमता एवं उपलब्धि के मान से टर्नर, मार्टिन क्रो व जॉन राइट विश्वस्तरीय खिलाड़ी थे और महान ऑलराउंडर सर रिचर्ड हेडली को अपने समकालीन चार श्रेष्ठ ऑलराउंडरों में शुमार किया जाता था तथा क्रिकेट जगत में चार सौ टेस्ट विकेट पार करने वाले वह पहले गेंदबाज थे और कपिल से पहले 431 टेस्ट विकेट लेकर हेडली ही विश्व में सर्वाधिक टेस्ट विकेट लेने वाले गेंदबाज थे। लेकिन प्रतिभावान खिलाड़ियों के होते हुए भी न्यूजीलैंड एक ताकतवर टेस्ट टीम के रूप में नहीं उभर पायी।

अभी तक भारत व न्यूजीलैंड के बीच 42 वर्षों के इतिहास में कुल 11 टेस्ट शृंखलाएं खेली गयी हैं। इनमें से 6 भारत में खेली गयीं और 5 न्यूजीलैंड में। इन 11 टेस्ट शृंखलाओं में से 6 में भारत जीता है और दो में न्यूजीलैंड। 2 शृंखलाएं 1-1 से बराबर रही हैं तथा एक 'ड्रा' रही है। जाहिर है परिणाम के लिहाज से भारत का पलड़ा भारी रहा है।

10

भारत विरुद्ध श्रीलंका

न्यूज़ीलैंड के बाद श्रीलंका अगला देश था जिससे भारत के क्रिकेट रिश्ते कायम हुए। यद्यपि श्रीलंका को टेस्ट दर्जा काफी इंतजार के बाद 1982 में ही मिला मगर उसने इंग्लैंड के खिलाफ खेलकर अपने पहले ही टेस्ट में जो धमाकेदार शुरुआत की उसके बाद उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज वह सीमित ओवर की तो चैंपियन टीम है ही और 1996 का विश्व कप तथा 1997 का एशिया कप विजेता होने का सम्मान भी उसे प्राप्त है। टेस्ट दर्जा मिलने से पहले भी श्रीलंका में अच्छे स्तर का क्रिकेट होता रहा था तथा उसके खिलाड़ी इंग्लैंड में व्यावसायिक खिलाड़ियों के रूप में काउंटी क्रिकेट खेलते रहे थे व लोकप्रिय भी थे। 1979 के विश्व कप में जब श्रीलंका ने भारत को हरा दिया तभी यह महसूस किया गया था कि वह टेस्ट दर्जा प्राप्त करने लायक टीम है। फिर इसके बाद एक दिवसीय क्रिकेट में उसने अपने प्रदर्शन में लगातार सुधार करना जारी रखा। 1983 के विश्व कप में उसने न्यूजीलैंड को हराया और 1992 में दक्षिण अफ्रीका को, और 1996 के विल्स विश्व कप की तो वह विजेता रही ही।

इंग्लैंड के खिलाफ अपने शुरुआती टेस्ट में प्रभावी प्रदर्शन करके तारीफ पाने के बाद 1982 में ही श्रीलंका की टीम अपने पहले अधिकृत दौरे पर भारत आयी। दोनों देशों के बीच खेली गयी इस शुरुआती टेस्ट शृंखला में केवल एक ही टेस्ट खेला गया और वह 'ड्रा' हो गया। यह टेस्ट चेन्नई में खेला गया था। श्रीलंका ने पहली पारी में 346 व दूसरी पारी में 394 रन बनाये। भारत ने अपनी पहली पारी 6 विकेट पर 566 के स्कोर पर घोषित कर दी और दूसरी पारी में शेष बचे समय में 7 विकेट पर 135 रन बनाये तथा मैच 'ड्रा' हो गया। भारत के लिए गावसकर व संदीप पाटिल ने शतक बनाये जबकि श्रीलंका के लिए दिलीप मेंडिस ने इस टेस्ट की दोनों पारियों में शतक बनाने का सम्मान प्राप्त किया। इस टेस्ट में भारत के

कप्तान थे सुनील गावसकर तथा श्रीलंका की कप्तानी की वर्णपूरा ने। यद्यपि इस टेस्ट में भारत को पहली पारी में बड़ी बढ़त मिली और उसने जीत के लिए दबाव भी बनाया मगर श्रीलंका का टेस्ट 'ड्रा' करवा पाने में सफल होना तारीफ के काबिल था।

इस पहली टेस्ट शृंखला के 3 साल बाद भारतीय टीम 1985 में अपने पहले अधिकृत दौरे पर श्रीलंका गयी। अनधिकृत रूप से तो महाराज कुमार विजयनगरम व होल्कर की टीमें श्रीलंका जाती रही थीं। मगर श्रीलंका के टेस्ट दर्जा प्राप्त कर लेने के बाद भारत का यह पहला दौरा था। इस भारतीय टीम के कप्तान थे कपिल देव और श्रीलंका की टीम की कप्तानी की दिलीप मेंडिस ने। इस शृंखला में 3 टेस्ट खेले गये। 2 टेस्ट तो 'ड्रा' रहे और 1 में श्रीलंका ने भारत को हराकर अपनी पहली टेस्ट विजय भी दर्ज की और 1-0 से शृंखला भी जीत ली। इस शृंखला के 2 टेस्ट कोलंबो में खेले गये और एक केंडी में। कोलंबो में खेला गया पहला टेस्ट तथा केंडी में खेला गया शृंखला का तीसरा टेस्ट 'ड्रा' रहा। मगर कोलंबो में जो दूसरा टेस्ट खेला गया उसमें श्रीलंका ने भारत को 149 रनों से हरा दिया। श्रीलंका के तेज गेंदबाज रूमेश रत्नायके की तूफानी व उछाल लेती गेंदों ने इस जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने इस मैच में 125 रन देकर 9 विकेट लिये। यह श्रीलंका का भारत के खिलाफ गेंदबाजी का श्रेष्ठ प्रदर्शन तो है ही, किसी भी श्रीलंकाई गेंदबाज द्वारा भारत के खिलाफ एक मैच में लिए गये सर्वाधिक विकेट भी हैं। रत्नायके की गेंदबाजी किस कदर घातक व तेज थी इसका एक उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा। एक बार उनके खिलाफ खेलते हुए वेस्टइंडीज के आक्रामक बल्लेबाज क्लाइव लॉयड के हेलमेट पर गेंद यकायक इस तेजी से लगी कि वह हक्के-बक्के रह गये और गेंद सीमा रेखा के पार हो गयी। वह महज गेंद की रफ्तार व उसके उछाल से ही विचलित हो गये जबकि वेस्टइंडीज में तो एक से बढ़कर एक तेज गेंदबाज हुए हैं और खुद लॉयड ने अपने नेतृत्व काल में हमेशा तेज गेंदबाजी को प्रोत्साहित किया। वही लॉयड तेज गेंदबाजी खेलने के भलीभांति अभ्यस्त होने के बावजूद रत्नायके के सामने लड़खड़ा गये। इसी शृंखला में कोलंबो में खेले गये दूसरे टेस्ट की दूसरी पारी में जब भारतीय टीम 198 पर आउट हो गयी तो यह भारत का श्रीलंका के खिलाफ किसी टेस्ट की एक पारी का न्यूनतम स्कोर था। इस शृंखला में भारत के लिए एकमात्र टेस्ट शतक मोहिंदर अमरनाथ ने बनाया। श्रीलंका के लिए शतक बनाने वाले बल्लेबाज रहे अमल 'डी सिल्वा, मुद्गल, रॉय डायस और रणतुंगा। इस जीत के बाद श्रीलंकाई टीम का मनोबल व आत्मविश्वास बढ़ा। इस बीच वेस्टइंडीज के महान ऑलराउंडर गैरी सोबर्स ने श्रीलंका के युवा खिलाड़ियों को जो गहन प्रशिक्षण दिया था उसके सुखद परिणाम आने शुरू हो गये थे।

1986-87 में दिलीप मेंडिस के नेतृत्व में श्रीलंका की टीम भारत के दौरे

पर आयी। भारतीय टीम की कप्तानी इस बार भी कपिल देव ने ही की। इस शृंखला में 3 टेस्ट खेले गये जिनमें से 2 भारत ने जीते और एक 'ड्रा' रहा। इस तरह भारत ने श्रीलंका से यह शृंखला 2-0 से जीत ली। श्रीलंका के खिलाफ भारत की यह पहली टेस्ट विजय तो थी ही, साथ ही यह पहला अवसर था जब भारत ने श्रीलंका से टेस्ट शृंखला जीती थी। इस बीच दोनों देशों के बीच दो टेस्ट शृंखलाएं खेली जा चुकी थीं—एक भारत में और एक श्रीलंका में। यह तीसरी टेस्ट शृंखला थी। इस घरेलू शृंखला में कानपुर में खेला गया पहला टेस्ट तो 'ड्रा' रहा लेकिन नागपुर में खेला गया दूसरा व कटक में खेला गया तीसरा टेस्ट भारत ने जीतकर शृंखला पर अधिकार कर लिया। दोनों ही टेस्टों में श्रीलंका की टीम को पारी की हार का सामना करना पड़ा। कानपुर टेस्ट में भारत ने 7 विकेट पर 676 रन बनाकर अपनी पहली पारी घोषित कर दी। यह भारत का श्रीलंका के खिलाफ किसी भी एक पारी का सर्वाधिक स्कोर है। इसी टेस्ट में श्रीलंका ने भी पहली पारी में 420 रन बनाये थे जो कि 1997 की ताजा टेस्ट शृंखला के पहले तक उसका भारत के खिलाफ किसी एक पारी का सर्वाधिक स्कोर था। इस शृंखला में भारत की ओर से वेंगसरकर ने 2 तथा अजहरुद्दीन, मोहिंदर अमरनाथ व कपिल देव ने एक-एक शतक बनाया। श्रीलंका की ओर से इस शृंखला में कोई शतक नहीं लगा। यह पहला अवसर था जब भारतीय टीम ने श्रीलंका के खिलाफ संतोषप्रद प्रदर्शन किया था। भले ही यह घरेलू शृंखला थी और घरेलू विकेट व दर्शकों के सामने खेली गयी थी। मगर जीत का अंतर श्रीलंका के विरुद्ध भारतीय टीम की श्रेष्ठता दर्शाने के लिए पर्याप्त है।

1990-91 में सिर्फ एक टेस्ट खेलने के लिए श्रीलंका की टीम रणतुंगा के नेतृत्व में भारत आयी। भारतीय टीम का नेतृत्व किया अजहरुद्दीन ने। चंडीगढ़ में खेले गये इस एकमात्र टेस्ट में भारत ने श्रीलंका को एक पारी व 8 रनों से हराकर यह शृंखला जीत ली। कम स्कोर वाले इस टेस्ट में भारत ने श्रीलंका को पहली पारी में सिर्फ 82 रनों पर उखाड़ फेंका जो कि श्रीलंका का भारत के खिलाफ किसी एक पारी का न्यूनतम स्कोर है। श्रीलंका की टीम किसी भी पारी में दो सौ रन नहीं बना पायी। भारत ने अपनी पहली पारी में 288 रन बनाये। इस टेस्ट में दोनों ही टीमों की ओर से कोई शतक नहीं बना।

तीन साल बाद अजहरुद्दीन की अगुआई में 1993 में भारतीय टीम श्रीलंका गयी। इस बार भी श्रीलंका के कप्तान रणतुंगा ही थे। 3 टेस्ट मैचों की इस शृंखला के 2 टेस्ट तो 'ड्रा' हुए और एक में भारतीय टीम जीती। इस तरह भारत ने यह शृंखला 1-0 से जीत ली। केंडी में खेला गया पहला टेस्ट बारिश से बुरी तरह प्रभावित रहा। इस टेस्ट में जितनी भी देर का खेल संभव हो पाया उसमें श्रीलंका ने 3 विकेट पर 24 रन बनाये और टेस्ट 'ड्रा' हो गया। कोलंबो में खेले गये दूसरे टेस्ट में भारत ने मेजबान श्रीलंका को 235 रनों से हरा दिया। कोलंबो में ही शृंखला का तीसरा

व अंतिम टेस्ट भी खेला गया जो पहले टेस्ट की ही तरह 'ड्रा' रहा। इस शृंखला में भारत के लिए विनोद कांबली ने 2 तथा सिद्धू व तेंदुलकर ने 1-1 शतक बनाया। श्रीलंका के लिए अरविंद डी'सिल्वा व रोशन महानामा ने 1-1 शतक बनाया। ये दोनों ही शतक कोलंबो में खेले गये तीसरे टेस्ट में बने। तब से अब तक भारत ने विदेश जाकर कोई टेस्ट शृंखला नहीं जीती है। 1994 में रणतुंगा के नेतृत्व में श्रीलंका की टीम ने भारत का दौरा किया। भारतीय टीम के कप्तान अजहरुद्दीन ही थे। इस शृंखला में भी 3 ही टेस्ट खेले गये। तीनों टेस्ट में भारत ने श्रीलंका को पराजित कर यह शृंखला 3-0 से जीत ली। भारत का श्रीलंका के खिलाफ अब तक का यह श्रेष्ठ प्रदर्शन है। लखनऊ, बंगलौर और अहमदाबाद में खेले गये तीनों टेस्ट मैचों में भारत ने श्रीलंका को करारी शिकस्त दी। भारत ने ये तीनों टेस्ट एक पारी के अंतर से जीते। लखनऊ में अनिल कुंबले ने 128 रन देकर 11 तथा अहमदाबाद टेस्ट में लेफ्टआर्म स्पिनर वेंकटपति राजू ने 125 रन देकर 11 विकेट लिये। श्रीलंका के खिलाफ भारत का यह अब तक का श्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन है। भारत की ओर से अजहरुद्दीन ने 2 तथा सिद्धू व तेंदुलकर ने 1-1 शतक लगाया। श्रीलंका की ओर से इस शृंखला में एक भी शतक दर्ज नहीं हुआ। बंगलौर टेस्ट में अपने पांचवें ओवर की तीसरी गेंद पर अनुरासिरी का विकेट लेकर कपिल ने हेडली के 431 टेस्ट विकेट की बराबरी की। इसके लिए उन्होंने 2,71,505 गेंदें कीं। और अहमदाबाद में खेली गयी शृंखला के अगले ही टेस्ट में वह हेडली का रिकार्ड तोड़ कर दुनिया के सबसे ज्यादा टेस्ट विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गये।

अगस्त, 1997 में ताजा शृंखला के लिए सचिन तेंदुलकर के नेतृत्व में भारतीय टीम श्रीलंका के दौरे पर गयी। अभी भी श्रीलंका के कप्तान अर्जुन रणतुंगा ही थे। 1990 से रणतुंगा के नेतृत्व में ही श्रीलंकाई टीम भारत से प्रतिस्पर्धा करती रही है। रणतुंगा की तुलना में सचिन निश्चित ही कम अनुभवी कप्तान थे मगर उनमें हर वक्त कुछ नया सीखने की अद्‌भुत क्षमता है तथा टीम को एकजुट रख पाने व उसे अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करने की योग्यता भी। इस शृंखला में 2 टेस्ट खेले गये तथा दोनों ही 'ड्रा' रहे। कोलंबो के प्रेमदासा स्टेडियम में खेला गया शृंखला का पहला टेस्ट यद्यपि 'ड्रा' हो गया, लेकिन श्रीलंका के लिहाज से यह टेस्ट अनेक कीर्तिमान स्थापित करने वाला रहा। भारत ने पहले खेलते हुए अपनी पहली पारी 8 विकेट पर 537 के स्कोर पर घोषित कर दी। भारत के लिए तेंदुलकर ने 143, अजहरुद्दीन ने 126 तथा सिद्धू ने 111 रन बनाये। इसके जवाब में श्रीलंका ने ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए भारत के मंसूबों पर पानी फेर दिया और अपनी पहली पारी में 6 विकेट पर 952 रनों का रिकार्ड स्कोर खड़ा किया व खेल समाप्ति के 15 मिनट पहले अपनी पारी घोषित कर दी। यह सिर्फ श्रीलंका का ही अब तक का सर्वाधिक स्कोर नहीं, अब तक के टेस्ट इतिहास का सर्वाधिक स्कोर भी है।

श्रीलंका के इस विशाल स्कोर ने 49 वर्ष पूर्व ओवल पर इंग्लैंड द्वारा आस्ट्रेलिया के खिलाफ बनाये गये पिछले 903 रनों के सर्वाधिक टेस्ट स्कोर के कीर्तिमान को खंडित कर नया कीर्तिमान बनाया। यह तो हुई टीम की उपलब्धि। जयसूर्या ने महानामा के साथ दूसरे विकेट की साझेदारी में 576 रन बनाये जो कि टेस्ट इतिहास की किसी भी विकेट की सबसे बड़ी भागीदारी है। यह एक नया कीर्तिमान था। इस टेस्ट के दूसरे व तीसरे दिन 12 घंटे के खेल में एक भी विकेट नहीं गिरा, यह भी एक कीर्तिमान था। जयसूर्या 340, महानामा 225 तथा डी' सिल्वा 126 रन बनाकर इस हिमालयी स्कोर के शिल्पकार रहे। 5 दिनों में 1489 रन बने और 14 विकेट गिरे। इस तरह टेस्ट में दोनों ही टीमों की पहली ही पारी पूरी नहीं हुई और न पूरे विकेट ही गिर पाये। जयसूर्या को श्रीलंका के लिए टेस्ट क्रिकेट की एक पारी में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज बनने का गौरव प्राप्त हुआ। यह भी उसके व स्वयं जयसूर्या के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी और निजी रनों का नया कीर्तिमान था। सवाल किया जा सकता है कि क्या ऐसे नीरस व बेजान विकेट पर टेस्ट क्रिकेट खेलकर पहले से ही संकट में घिरे हुए परंपरागत शैली के खेल को एक दिवसीय क्रिकेट की तुलना में अलोकप्रिय नहीं बनाया जा रहा है ? क्रिकेट केवल उपलब्धियों के लिए ही तो नहीं है। उतार-चढ़ाव, रोमांच व कलात्मकता से सजा संवरा यह खेल वास्तव में एक जीवन शैली है, भला लोग यह क्यों भूल जाते हैं ?

दूसरा टेस्ट भी कोलंबो में ही सिंहली क्लब के मैदान पर खेला गया, और यह टेस्ट भी 'ड्रा' रहा। श्रीलंका ने पहली पारी में 332 रन बनाये। जिनमें डी'सिल्वा के 145 रन थे जो कि उनका श्रृंखला का दूसरा टेस्ट शतक था। भारत ने अपनी पारी में 379 रन बनाकर 47 रनों की बढ़त ले ली। भारत के लिए गांगुली ने 147 तथा तेंदुलकर ने 139 रन बनाये। तेंदुलकर ने भी इस श्रृंखला में अपना दूसरा शतक बनाया। श्रीलंका ने अपनी दूसरी पारी 7 विकेट पर 415 रन बनाकर घोषित कर दी। भारत के सामने 103 ओवर के खेल में मैच जीतने के लिए 373 रन बनाने का लक्ष्य था। लेकिन भारत 5 विकेट पर 281 रन ही बना पाया और मैच 'ड्रा' हो गया। श्रीलंका की दूसरी पारी में जयसूर्या ने 199 रन बनाये। यह उनका पहले टेस्ट के 340 रनों के बाद इस श्रृंखला का दूसरा शतक था। डी'सिल्वा ने दूसरी पारी में 120 रन बनाकर टेस्ट की दोनों पारियों में शतक बनाने का गौरव प्राप्त किया और इस श्रृंखला का अपना तीसरा शतक बनाया। भारत की दूसरी पारी में अजहरुद्दीन ने नाबाद 108 रन बनाये। यह अजहरुद्दीन का भी श्रृंखला का दूसरा टेस्ट शतक था। इस तरह यह श्रृंखला 'ड्रा' रही।

भारत तथा श्रीलंका के बीच अभी तक 15 वर्षों में कुल 7 टेस्ट श्रृंखलाएं खेली गयी हैं। इनमें से 4 भारत में आयोजित हुई हैं और 3 श्रीलंका में। 7श्रृंखलाओं में से 4 भारत ने जीती हैं तथा एक श्रीलंका ने, जबकि 2 श्रृंखलाएं 'ड्रा' रही हैं।

इस तरह टेस्ट क्रिकेट में भारत का पलड़ा भारी रहा है।

भले ही श्रीलंका को टेस्ट क्रिकेट खेलने का कम अनुभव हो और भले ही वह एक दिवसीय क्रिकेट की फिलहाल चैंपियन हो, वास्तविकता यही है कि वहां कभी उच्च स्तरीय एवं प्रतिभावान खिलाड़ियों की कमी नहीं रही। अतीत में रॉय डायस, दिलीप मेंडिस, रूमेश रत्नायके व डी'मेलो तथा वर्तमान में जयसूर्या, अरविंद डी'सिल्वा, रणतुंगा, महानामा व मुरलीधरन विश्व के सर्वाधिक प्रतिभावान व लोकप्रिय खिलाड़ियों में से हैं। अभी तक अपनी आतिशी बल्लेबाजी के लिए विख्यात जयसूर्या केवल एक दिवसीय क्रिकेट के सितारा खिलाड़ी समझे जाते थे, पर धीरे-धीरे उन्होंने स्वयं को टेस्ट क्रिकेट के भी सितारा खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया। क्रिकेट जानकारों की मान्यता है कि यदि उन्हें अपने खेल की रंगत मिल जाये तो डी'सिल्वा व रणतुंगा से बेहतर आकर्षक एवं दर्शनीय जोड़ी समूचे क्रिकेट जगत में नहीं है। भारत के 65 वर्ष के टेस्ट इतिहास की तुलना में श्रीलंका की 15 वर्षों की यह उपलब्धि किसी तरह कम नहीं है। कभी श्रीलंका को छुपा रुस्तम कहा जाता था क्योंकि उसकी टीम में कोई भी उलटफेर करने का माद्दा था। आज वह एक स्थापित एवं लोकप्रिय टीम है।

11

भारत विरुद्ध दक्षिण अफ्रीका

जब दक्षिण अफ्रीका को उसकी रंगभेद नीति के कारण अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से निष्कासित किया गया और उसे 21 साल लंबे समय तक क्रिकेट बिरादरी से बाहर रहने की सजा भुगतनी पड़ी, तब वह क्रिकेट जगत की सबसे ताकतवर टीम थी। उसने टेस्ट क्रिकेट में इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया व वेस्टइंडीज जैसी ताकतवर टीमों के छक्के छुड़ा दिये थे और उसका अच्छा खासा दबदबा था। मगर वहां अश्वेतों के बहुमत के बावजूद उनके साथ भेदभाव बरतने व अन्य क्षेत्रों की ही तरह खेलों में भी श्वेत लोगों द्वारा अश्वेतों के साथ सौतेला बर्ताव किये जाने के कारण पूरे विश्व में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ वातावरण बनता गया। इसके बाद घटी एक घटना ने तो जैसे आग में घी डालने का काम किया। हुआ यूं कि सत्तर के उत्तरार्ध में जब इंग्लैंड की टीम दक्षिण अफ्रीका के दौरे के लिए चुनी गयी तो उस मूल टीम में डॉलीवेरा का नाम नहीं था। डॉलीवेरा अश्वेत मूल के खिलाड़ी थे, मगर इंग्लैंड में रहने के कारण इंग्लैंड की टीम में लिए गये। इसकी प्रतिक्रियास्वरूप दक्षिण अफ्रीका ने इंग्लैंड द्वारा ऐन वक्त पर डॉलीवेरा को टीम में लिए जाने पर सख्त एतराज किया व उन्हें टीम में न लाने की सलाह दी। दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट अधिकारियों को लगा कि इंग्लैंड की टीम जान बूझकर उसकी रंगभेद नीति के प्रति अपना विरोध जताने के लिए डॉलीवेरा को टीम में लाना चाहती है। इंग्लैंड का रुख था कि अपनी टीम चुनने का उसे एकाधिकार प्राप्त है और वह बाहरी हस्तक्षेप किसी कीमत पर पसंद नहीं करेगा। विरोधस्वरूप खुद दक्षिण अफ्रीका ने ही इंग्लैंड का यह दौरा ऐन वक्त पर रद्द कर दिया। इसके बाद अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट महासंघ ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सख्त रुख अपनाया व उसके क्रिकेट बिरादरी से बाहर कर दिया। यह निष्कासन 21 साल तक जारी रहा। इस बीच दक्षिण अफ्रीका के कई अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेलने से वंचित रहे, जिनमें ग्रीम पोलॉक, बैरी रिचर्ड्स व क्लाइव

राइस प्रमुख थे। वरना आज इन खिलाड़ियों की उपलब्धियों की चर्चा बच्चे-बच्चे की जुबान पर होतीं। इस बीच 1975, 1979, 1983 व 1987 की विश्व कप स्पर्धाएं भी हुईं और ये सभी दक्षिण अफ्रीका के बिना खेली गयीं। टेस्ट व एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय, दोनों ही शैलियों के क्रिकेट खेलने पर दक्षिण अफ्रीका पर पाबंदी लगी रही। मजबूरन दक्षिण अफ्रीकी मूल के कुछ खिलाड़ी इंग्लैंड आकर वहां से खेलने की पात्रता प्राप्त करने के बाद इंग्लैंड की ओर से खेलने लगे। टॉनी ग्रेग, एलन लैम्ब व ग्रीम हिक इनमें प्रमुख थे। वेसल्स आस्ट्रेलिया की ओर से खेले। टॉनी ग्रेग ने तो इंग्लैंड की कप्तानी भी की और फिर वह आस्ट्रेलिया में बस गये तथा अब कमेंट्री करते हैं।

इस बीच धन के लालच में जब कैरी पैकर ने विभिन्न देशों के खिलाड़ियों को अपनी सुपर टेस्ट शृंखला के लिए आकर्षित किया तो पैकर का मूल उद्देश्य आस्ट्रेलिया के क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड को ध्वस्त करके अपने टेलीविजन चैनल नंबर 9 का वर्चस्व स्थापित करना था। पैकर की ही देखा-देखी दक्षिण अफ्रीका ने भी अपनी समृद्धि का भरपूर इस्तेमाल करते हुए विभिन्न देशों के खिलाड़ियों को ललचाना शुरू किया। वह अपने उद्देश्य में सफल हुआ। इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज व श्रीलंका से तो विद्रोही टीमें भी दक्षिण अफ्रीकी दौरे पर गयीं। दक्षिण अफ्रीका जाने वाले खिलाड़ी भी प्रतिबंधित होते रहे। अंततः एक दुखद स्वप्न की तरह 1992 में सारे तनाव व विवाद का अंत हुआ और 1992 के विश्व कप के कुछ समय पहले दक्षिण अफ्रीका की क्रिकेट बिरादरी में वापसी हो गयी। यह नीति दक्षिण अफ्रीका की खेल नीति में वांछित सुधार की परिचायक भी थी और खिलाड़ियों को बेहतर खेल अवसर प्रदान करने वाली भी।

टेस्ट क्रिकेट में अपने पुनः प्रवेश के बाद तथा निष्कासन समाप्त होने के तुरंत बाद 1992 में दक्षिण अफ्रीका की टीम भारत के सद्भावना दौरे पर आयी। इस यात्रा का उद्देश्य भारत द्वारा उसकी वापसी के लिए कृतज्ञता व्यक्त करना था। इस सद्भावना दौरे पर आयी दक्षिण अफ्रीका टीम के कप्तान थे कैप्सर वेसल्स। टीम के साथ वहां के क्रिकेट प्रमुख डा. अली बाकर विशेष रूप से आये थे। सद्भावना यात्रा के तुरंत बाद नवंबर 1992 में भारतीय टीम अपने पहले दक्षिण अफ्रीका दौरे पर उसके खिलाफ अपनी पहली टेस्ट शृंखला खेलने के लिए रवाना हुई। इसके पहले दोनों देशों के बीच अभी तक कोई टेस्ट शृंखला ही नहीं खेली गयी थी। भारतीय टीम की इस यात्रा से ही दोनों देशों के बीच क्रिकेट टीमों के आदान प्रदान का सिलसिला शुरू हुआ। 1992-93 के इस दक्षिण अफ्रीकी दौरे पर गयी भारतीय टीम के कप्तान थे अजहरुद्दीन। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान थे कैप्सर वेसल्स। इस शृंखला में 4 टेस्ट खेले गये जिनमें से 3 'ड्रा' रहे और एक दक्षिण अफ्रीका टीम ने जीता। इस तरह भारत-दक्षिण अफ्रीका के बीच खेली गयी यह पहली टेस्ट शृंखला दक्षिण

अफ्रीका ने 1-0 से जीत ली। डरबन में खेला गया पहला, जोहन्सबर्ग में खेला गया दूसरा और कैपटाउन में खेला गया चौथा टेस्ट तो 'ड्रा' रहा। परंतु पोर्ट एलिजाबेथ में खेले गये शृंखला के तीसरे टेस्ट में दक्षिण अफ्रीका ने भारत को 9 विकेट से हरा दिया। डरबन टेस्ट में खेलकर भारत के प्रवीण आमरे ने अपनी टेस्ट यात्रा शुरू की और अपने पहले ही टेस्ट में शतक बनाने का सम्मान प्राप्त किया। वरना आमरे अभी तक दो वर्षों से भारतीय टीम में तो थे और एक दिवसीय मैचों में भी खेल चुके थे परंतु उन्हें अभी तक टेस्ट मैचों में खेलने का अवसर नहीं दिया गया था। इस शृंखला में आमरे के अलावा तेंदुलकर ने जोहन्सबर्ग में खेले गये दूसरे व कपिल देव ने पोर्ट एलिजाबेथ में खेले गये तीसरे टेस्ट में भारत की ओर से शतक बनाया। दक्षिण अफ्रीका की ओर से दो बल्लेबाजों ने शतक बनाये—वेसल्स ने डरबन टेस्ट में और हंसी क्रोनिए ने पोर्ट एलिजाबेथ टेस्ट में। भारत की ओर से कपिल देव ने 4 टेस्ट मैचों में 40.40 की औसत से 202 तथा तेंदुलकर ने 33.66 की औसत से रन बनाये। दक्षिण अफ्रीका की ओर से वेसल्स ने 43.14 की औसत से 295 रन बनाये। गेंदबाजी में भारत के लिए अनिल कुंबले ने शृंखला में 465 रन देकर 18 तथा दक्षिण अफ्रीका के लिए एलन डोनॉल्ड ने 394 रन देकर 20 विकेट लिये जो कि इस शृंखला की गेंदबाजी का श्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। इस शृंखला को लेकर दोनों देशों में इतना अधिक उत्साह था कि बड़ी संख्या में भारत से पत्रकार व पर्यवेक्षक इसे देखने दक्षिण अफ्रीका गये थे।

1996-97 में हंसी क्रोनिए के नेतृत्व में भारत यात्रा पर आयी दक्षिण अफ्रीका टीम और सचिन तेंदुलकर के नेतृत्व में भारतीय टीम के बीच 3 टेस्ट मैचों की शृंखला अहमदाबाद, कलकत्ता और कानपुर में खेली गयी। इस शृंखला में भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 2-1 से पराजित कर शृंखला जीत ली। अहमदाबाद व कानपुर टेस्ट तो भारत ने जीते जबकि कलकत्ता टेस्ट में दक्षिण अफ्रीका टीम जीती। अहमदाबाद में दोनों ही टीमों को मैच जीतने का समान अवसर प्राप्त था। दक्षिण अफ्रीका को मैच जीतने के लिए 170 रनों का छोटा लक्ष्य मिला था। किंतु उसकी टीम सिर्फ 105 रनों पर ढेर हो गयी। उसके 6 बल्लेबाज तो खाता भी नहीं खोल पाये व बिना कोई रन बनाये वापस लौटे। भारत के 223 रनों के स्कोर के जवाब में दक्षिण अफ्रीका ने 244 रन बनाकर यद्यपि पहली पारी में बढ़त ले ली थी। मगर फिर भी वह यह टेस्ट 64 रनों से हार गयी। भारत के लिए श्रीनाथ ने अब तक के अपने टेस्ट जीवन का श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए दूसरी पारी में 6 विकेट लिये। इस पारी में उनकी गेंदबाजी का विश्लेषण रहा 11-5-21-6। कलकत्ता में खेले गये शृंखला के दूसरे टेस्ट में दक्षिण अफ्रीका की उद्घाटक जोड़ी ने आसान विकेट का भरपूर फायदा उठाते हुए हडसन व क्रिस्टन ने भारतीय गेंदबाजों की जमकर धुनाई की। दक्षिण अफ्रीका ने पहली पारी में 428 रन बनाये और इसके जवाब में भारत अजहरुद्दीन के 109 व कुंबले

के 88 रनों की मदद से जैसे-तैसे 328 रन बना पाया। दक्षिण अफ्रीकी टीम दूसरी पारी में भी जमकर खेली और उसने 3 विकेट पर 367 रन बनाकर पारी घोषित कर दी तथा भारत को दूसरी पारी में 137 रनों पर समेट दिया। इस तरह पहले टेस्ट की हार का बदला लेते हुए दक्षिण अफ्रीका ने कलकत्ता टेस्ट में भारत को 329 रनों से हरा दिया और शृंखला 1-1 से बराबर कर ली। इस टेस्ट में गैरी क्रिस्टन ने दोनों पारियों में शतक बनाया। क्लूसनर ने 64 रनों पर 8 विकेट लेकर सनसनी फैलायी व मैच जिताने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कानपुर में खेले गये तीसरे व निर्णायक टेस्ट में भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 281 रनों से हराकर यह घरेलू शृंखला 2-1 से जीत ली। दक्षिण अफ्रीका को कानपुर टेस्ट में आखिरी पारी खेलते हुए मैच जीतने के लिए 461 रन बनाने थे जो कि एक बड़ा व कठिन लक्ष्य था। लेकिन उसकी पूरी टीम 180 के स्कोर पर आउट हो गयी। मगर कानपुर टेस्ट में ही जिस तरह दक्षिण अफ्रीकी लेफ्ट आर्म स्पिनर व ओवर की अधिकांश गेंदों पर 'चाइना मैन' करके वाले पॉल एडम्स ने 3 ओवर में राहुल द्रविड़, अजहरुद्दीन व सुनील जोशी को आउट कर पैवेलियन में भेज दिया उसे देखकर भारतीय खेमे में सनसनी व आंशिक घबराहट तो जरूर फैली, मगर वह क्षणिक ही रही। इस शृंखला में 3 मैच की 6 पारियों में 77.60 की औसत से 388 रन बनाकर अजहरुद्दीन भारतीय बल्लेबाजों में शीर्ष पर रहे। दक्षिण अफ्रीका के डेरिल कलिनन 3 टेस्ट की 6 पारियों में 54.00 की औसत से 270 रन बनाकर सर्वोच्च स्थान पर रहे। गेंदबाजी में भारत की ओर से श्रीनाथ ने 17 व कुंबले ने 13 तथा दक्षिण अफ्रीका की ओर से डोनाल्ड ने 10 व पॉल एडम्स ने 14 विकेट लिये। 1996 के विश्व कप से ही पॉल एडम्स अपनी गेंदबाजी के एक्शन के कारण चर्चित थे मगर बड़ी सफलता उन्हें इसी शृंखला में मिली।

यह घरेलू टेस्ट शृंखला जीतने के बाद भारत ने टाइटन कप की सीमित ओवर की त्रिकोणीय शृंखला के फाइनल में भी दक्षिण अफ्रीका को परास्त किया और तत्पश्चात 3 टेस्ट मैचों की शृंखला खेलने के लिए दक्षिण अफ्रीका के लिए प्रस्थान किया। इस दौरे के बाद उसे वेस्टइंडीज जाना था। भारतीय टीम के कप्तान थे सचिन तेंदुलकर व दक्षिण अफ्रीका टीम की कप्तानी की हंसी क्रोनिए ने जो तेजी से एक सफल ऑलराउंडर के रूप में उभरते जा रहे थे। मगर इस शृंखला के डबरन में खेले गये पहले तथा कैपटाउन में खेले गये दूसरे टेस्ट में भारत को हराकर दक्षिण अफ्रीका ने शृंखला में 2-0 की निर्णायक बढ़त ले ली। तेज व उछाल वाले विकेट पर दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाज भारतीय बल्लेबाजों पर बुरी तरह हावी रहे। डरबन में खेले गये पहले टेस्ट में तो भारतीय टीम दक्षिण अफ्रीका के पहली पारी के 235 के छोटे स्कोर के सामने ही इतनी बुरी तरह लड़खड़ा गयी कि वह सिर्फ 100 रनों में ढेर हो गयी। दूसरी पारी में दक्षिण अफ्रीका ने 259 रन बनाये। लेकिन भारत की दूसरी पारी उसकी पहली पारी से भी गयी गुजरी रही और पूरी टीम 66 रन बनाकर चलती

बनी। नतीजतन भारत यह टेस्ट 328 रनों से हार गया। इतने रन तो इस टेस्ट में किसी भी टीम ने किसी भी पारी में नहीं बनाये थे। भारत के लिए वेंकटेश प्रसाद ने यद्यपि इस टेस्ट में अपने जीवन का श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 153 रन देकर 10 विकेट लिए मगर उनकी सारी मेहनत पर टीम के बल्लेबाजों ने पारी फेर दिया। फालोऑन के लिए 200 रनों के अंतर का प्रावधान है वरना भारत यह टेस्ट एक पारी से हार जाता क्योंकि उसके दोनों पारियों में कुल 166 रन ही बने जो कि दक्षिण अफ्रीका के पहली पारी के 235 रनों से 69 रन कम थे। अभी तक दक्षिण अफ्रीका आयी किसी भी टीम ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दोनों पारियों में इतने कम रन नहीं बनाये थे।

कैपटाउन में खेले गये दूसरे टेस्ट में दक्षिण अफ्रीका ने 7 विकेट पर 529 रनों के स्कोर पर पहली पारी घोषित कर दी। इसके जवाब में भारतीय पारी शुरुआत में तो लड़खड़ाई और सिर्फ 58 रनों पर उसके 5 विकेट गिर गये लेकिन बाद में अजहरुद्दीन व तेंदुलकर के शतकों के कारण भारत पहली पारी में 359 का सम्मानजनक स्कोर खड़ा कर पाया। दक्षिण अफ्रीका ने अपनी दूसरी पारी 6 विकेट पर 256 के स्कोर पर घोषित करके भारत पर दबाव बढ़ाया और उसे मैच जीतने के लिए 427 का बड़ा लक्ष्य दिया। यह चुनौती कठिन एवं संघर्षपूर्ण थी। दबाव में भारतीय पारी 144 पर ही सिमट गयी। श्रीनाथ ने बल्लेबाजी नहीं की और भारत यह टेस्ट भी 282 के बड़े अंतर से हार गया। जोहन्सबर्ग में खेले गये शृंखला के तीसरे व अंतिम टेस्ट में इस शृंखला में पहली बार दोनों टीमों के बीच बराबरी का मुकाबला व कड़ा संघर्ष हुआ। सामान्य तौर पर 3 टेस्ट मैचों की छोटी शृंखला में 2-0 से पिछड़ने वाली टीम वैसे ही मनोवैज्ञानिक रूप से टूट जाती है व उसके सामने अपनी स्थिति सुधारने का अवसर ही नहीं रहता। लेकिन भारतीय टीम ने ऐसी विपरीत परिस्थिति में भी साहस व जीवट का परिचय दिया। इस टेस्ट में भारत ने पहले खेलते हुए अपनी पहली पारी 9 विकेट पर 410 रन बनाकर घोषित की जिनमें राहुल द्रविड़ के 148 व सौरभ गांगुली के 73 रन उल्लेखनीय थे। इसके जवाब में दक्षिण अफ्रीकी टीम अपनी पहली पारी में 321 रन बनाकर आउट हो गयी और भारत को शृंखला में पहली बार 89 रनों की बढ़त मिली। भारत के लिए श्रीनाथ ने 5 विकेट लिये। भारतीय टीम ने अपनी दूसरी पारी 8 विकेट पर 266 के स्कोर पर घोषित कर दी तथा पहली बार दक्षिण अफ्रीकी टीम को दबाव में डाला। इस बार भी द्रविड़ व गांगुली उसके सफलतम बल्लेबाज रहे। अब दक्षिण अफ्रीका के सामने मैच जीतने के लिए 356 रनों की चुनौती थी। लक्ष्य असंभव तो नहीं पर चुनौतीपूर्ण व संघर्षपूर्ण अवश्य था। भारत ने मात्र 95 रनों पर दक्षिण अफ्रीका के 7 प्रमुख बल्लेबाजों को आउट करके मैच पर अपनी पकड़ मजबूत भी कर ली थी। परंतु वर्षा तथा कलिनन व क्लूसनर के बीच आठवें विकेट की 127 रनों की महत्वपूर्ण एवं बहुमूल्य भागीदारी

के कारण सारा दृश्य ही बदल गया। मैच भारत की गिरफ्त से निकल गया व 'ड्रा' हो गया। इस तरह दक्षिण अफ्रीका यह शृंखला 2-0 के अंतर से जीत गया। इस शृंखला में भारत के लिए द्रविड़ व तेंदुलकर ने क्रमशः 277 व 241 रन बनाये, वहीं दक्षिण अफ्रीका के लिए ब्रायन मैकमिलन ने 296 तथा कलिनन ने 291 रन बनाये। भारत के लिए 3 मैचों में श्रीनाथ ने 18 व प्रसाद ने 17 विकेट लिये जबकि डोनॉल्ड ने शृंखला में 20 विकेट लेकर सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज होने का सम्मान पाया। भारत के धीमे व बेजान विकेट पर भारत से पराजित होने के बाद हंसी क्रोनिए ने कहा ही था कि दक्षिण अफ्रीका में भारत को विपरीत अनुभव होगा तथा उसे वहां तेज व उछाल वाले विकेट पर तेज गेंदबाजी का सामना करना पड़ेगा। ऐसा ही हुआ। पिछली सफलता के बावजूद भारतीय टीम दक्षिण अफ्रीका में वैसी ही नौसिखिया साबित हुई, जिस तरह भारत के घुमावदार विकेट पर विदेशी टीमें होती हैं।

अभी तक भारत तथा दक्षिण अफ्रीका के बीच सिर्फ 3 टेस्ट शृंखलाएं ही खेली गयी हैं और सभी शृंखलाएं 3-3 टेस्ट वाली हुई हैं। इनमें से 2 में दक्षिण अफ्रीका की जीत हुई है और एक में भारत की। जहां तक टेस्ट मैचों का सवाल है अभी तक दोनों देशों के बीच कुल 10 टेस्ट खेले गये हैं जिनमें से 4 दक्षिण अफ्रीका ने जीते हैं व 2 भारत ने तथा 4 'ड्रा' रहे हैं।

प्रतिबंध हटने के बाद दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ियों को क्रिकेट जगत के विभिन्न देशों के खिलाफ खेलने व अपने अनुभव को बढ़ाने का अवसर मिलने लगा है वरना ये खिलाड़ी वनफूल की तरह गुमनामी में ही मुरझा जाते। आज हडसन, क्रिस्टन, कलिनन व क्रोनिए जैसे बल्लेबाज, मैकमिलन जैसे ऑलराउंडर तथा डोनॉल्ड, शेन पोलॉक, क्लूसनर तथा पॉल एडम्स जैसे गेंदबाज अन्य देशों के खिलाड़ियों के खिलाफ व अन्य देशों के खिलाड़ी उनके खिलाफ खेल पा रहे हैं और हमें इनके प्रदर्शन के तुलनात्मक विश्लेषण करने का अवसर मिला है। 1992 के पहले अवकाश प्राप्त करने वाले भारतीय खिलाड़ियों को तो दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेलने का अवसर ही नहीं मिल पाया। गावसकर इस मामले में दुर्भाग्यशाली रहे। वह सभी क्रिकेट देशों के खिलाफ खेले और उन्होंने सभी क्रिकेट देशों की यात्रा की। मगर वह बतौर खिलाड़ी, दक्षिण अफ्रीका नहीं जा पाये और दक्षिण अफ्रीकी दर्शक उन्हें अपने देश के खिलाफ खेलते हुए नहीं देख पाये। वह वहां जाकर कमेंट्री जरूर कर रहे हैं। हम भाग्यवान हैं कि भले ही हम दक्षिण अफ्रीका के ग्रीम पोलॉक व बैरी रिचर्ड्स जैसी क्रिकेट किंवदंतियों को खेलते हुए न देख पाये हों, वर्तमान खिलाड़ियों को तो देख ही रहे हैं। दक्षिण अफ्रीकी टीम आज विश्व की सर्वाधिक संतुलित टीमों में से एक है। खासकर उसका क्षेत्ररक्षण विश्व की श्रेष्ठ टीमों के क्षेत्ररक्षण से बीस ही है। मिरगी जैसे असाध्य रोग से ग्रस्त जोंटी रोड्स ने केवल अपने चुस्त क्षेत्ररक्षण के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति व अपार लोकप्रियता अर्जित की है।

12

भारत विरुद्ध जिम्बाब्वे

जिम्बाब्वे क्रिकेट बिरादरी में सबसे बाद में शरीक की गयी टीम है। आप इसे टेस्ट की पात्रता प्राप्त टीमों में बच्चा टीम कह सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल ने इसे हाल ही में टेस्ट दर्जा प्रदान किया है, अतः जिम्बाब्वे का अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट अनुभव सबसे कम है। जॉन ट्राइकॉस जैसे सटीक ऑफ स्पिनर को जिम्बाब्वे का होने के बावजूद पश्चिम अफ्रीकी टीम में खेलना पड़ा था क्योंकि तब जिम्बाब्वे में खेलने के अवसर ही नहीं मिलते थे। भारतीय क्रिकेट प्रेमियों को भी जिम्बाब्वे की क्षमता व उसके क्रिकेट अस्तित्व का अहसास 1983 के प्रूडेंशियल विश्व कप में ही हुआ। उसने पहले तो आस्ट्रेलिया जैसी ताकतवर टीम को 13 रनों से हरा दिया और फिर भारतीय टीम को भी कांटे की टक्कर दी। वह तो कपिल देव की अक्रामक 175 रनों की यादगार पारी थी जिसकी बदौलत भारत उस विश्व कप मुकाबले में उसे पछाड़ सका। तब उसे आयी.सी.सी ट्राफी विजेता होने के कारण विश्व कप में खेलने की पात्रता मिली थी। तभी से साल दर साल वहां क्रिकेट का प्रचार-प्रसार बढ़ा और क्रिकेट वहां लोकप्रिय होता गया। 1992 के विश्व कप में जिम्बाब्वे ने इंग्लैंड को 9 रनों से हरा कर सभी को चौंका दिया था। इंग्लैंड में तो किसी भी देश व खिलाड़ी की चर्चा ही तभी होती है जब वह इंग्लैंड के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन करे। जिम्बाब्वे के खेल स्तर में आये निखार व सुधार के मद्देनजर अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल ने उसे टेस्ट दर्जा प्रदान किया। अतः टेस्ट खेलने की पात्रता पाने वाला जिम्बाब्वे क्रिकेट बिरादरी में सबसे नया देश है।

अभी तक जिम्बाब्वे की टीम व खिलाड़ी एक दिवसीय मुकाबलों में अपने चौंकाने वाले प्रदर्शन से सभी को हतप्रभ करते रहे थे। 1987 के रिलायंस विश्व कप में ट्रायकॉस की बेहतरीन एवं दिशा व नियंत्रण युक्त गेंदबाजी ने सभी को आकर्षित किया और उनकी गेंदबाजी का यह कमाल ट्रायकॉस की बढ़ती उम्र के बावजूद 1992

के विश्व कप में भी जारी रहा। 1987 में ही हॉटन द्वारा हैदराबाद में न्यूजीलैंड के खिलाफ बनाये गये 141 रन भला कौन भूल सकता है ? 1996 के विल्स विश्व कप में भी फ्लॉवर बंधुओं व कैम्पबेल की बल्लेबाजी तथा हीथ स्ट्रीक की तेज व पॉल स्ट्रेंग की असरदार लेग-स्पिन गुगली तथा उपयोगी बल्लेबाजी चर्चा का विषय बनी रही। अतः जिम्बाब्वे में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। कमी रही है तो अनुभव की। और अुनभव बिना खेले कैसे मिलेगा ? टेस्ट क्रिकेट की महत्ता तो टेस्ट खेलकर ही जानी जा सकती है।

दक्षिण अफ्रीका के बाद जिम्बाब्वे ही वह क्रिकेट राष्ट्र है जिसके साथ भारत के क्रिकेट संबंध कायम हुए हैं और जिसके खिलाफ भारत टेस्ट क्रिकेट खेला। 1992-93 में जिम्बाब्वे की टीम भारत आयी और भारत व जिम्बाब्वे के बीच तब एकमात्र टेस्ट दिल्ली में खेला गया। उस टेस्ट में भारत ने अनुभवहीन जिम्बाब्वे की टीम को एक पारी व 13 रनों से हरा दिया। तब जिम्बाब्वे की टीम के कप्तान थे हॉटन और भारतीय टीम की कप्तानी की थी अजहरुद्दीन ने। 1992-93 में ही भारतीय टीम जिम्बाब्वे की अपनी पहली यात्रा पर गयी। इस बार भी जिम्बाब्वे टीम की कप्तानी हॉटन ने ही की और भारतीय टीम की अजहरुद्दीन ने। इस दौरे में भी केवल एक टेस्ट खेला गया। यह एकमात्र टेस्ट हरारे में खेला गया और 'ड्रा' रहा। जिम्बाब्वे ने अपनी पहली पारी में 456 रन बनाये व दूसरी पारी में 4 विकेट पर 146 रन। भारतीय टीम ने अपनी पहली पारी में 307 रन बनाये। इस तरह जिम्बाब्वे जैसी नयी व अनुभवहीन टीम भारत के खिलाफ अपने दूसरे ही टेस्ट में व अपने देश में खेले गये पहले ही टेस्ट में पहली पारी में बढ़त लेने में कामयाब रही। यकीनन यह उसकी नैतिक विजय थी कि भारत जैसी अनुभवी एवं अनेक प्रतिभावान खिलाड़ियों से लैस टीम के खिलाफ अपने देश में पहली बार खेलते हुए भारत से बेहतर प्रदर्शन कर दिखाया।

इस दौरे में भारत के लिए एकमात्र टेस्ट शतक बनाया संजय मांजरेकर ने। उन्होंने 104 रन बनाये। जिम्बाब्वे की ओर से भी एक ही शतक लगा। कप्तान हॉटन ने 121 रन बनाकर अपनी क्षमता व साहस का परिचय दिया। भारत की ओर से मनोज प्रभाकर ने 88 रन देकर 4 तथा जिम्बाब्वे की ओर से जॉन ट्राइकॉस ने अपनी पैनी ऑफ स्पिन के जरिये 86 रन देकर 5 विकेट लिये। जिम्बाब्वे द्वारा हरारे टेस्ट में भारत के खिलाफ बनाये गये 456 रन उसका भारत ही नहीं किसी भी टेस्ट मैच का सर्वाधिक स्कोर है। इसी प्रकार भारत द्वारा हरारे टेस्ट में ही बनाये गये 307 रन उनका जिम्बाब्वे के खिलाफ सर्वाधिक स्कोर है।

अभी तक भारत व जिम्बाब्वे के बीच सिर्फ दो शृंखलाएं ही खेली गयी हैं और दोनों ही शृंखलाओं में 1-1 टेस्ट ही खेला गया। एक शृंखला भारत में हुई तथा एक जिम्बाब्वे में। भारत में खेली गयी शृंखला का एकमात्र टेस्ट भारत ने जीतकर

शृंखला पर अपना अधिकार कर लिया जो कि जिम्बाब्वे में खेली गयी शृंखला के बाद तक कायम रहा क्योंकि जिम्बाब्वे में खेला गया एक मात्र टेस्ट 'ड्रा' हो गया। पिछली शृंखला का विजेता होने के कारण अभी भी शृंखला पर भारत ही का अधिकार है। परंतु इतनी अल्प अवधि में जिम्बाब्वे की टीम ने जो तरक्की की है उसे देखकर उम्मीद बंधी है कि शीघ्र ही जिम्बाब्वे भी प्रमुख क्रिकेट देश बन जायेगा। अब उसे मौके भी मिल रहे हैं और उसकी टीम मौकों का फायदा भी उठा रही है। पाकिस्तान जाकर वहां खेले गये मैचों में तो जिम्बाब्वे का प्रदर्शन उतना अच्छा नहीं रहा मगर हाल ही में न्यूजीलैंड के खिलाफ उसकी टीम ने उम्दा प्रदर्शन किया है। भारत के बाद पाकिस्तान, श्रीलंका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड व दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ जिम्बाब्वे ने साल भर में 8 टेस्ट ही खेले हैं और इतनी कम अवधि में अपने प्रदर्शन से सभी को प्रभावित किया है। फ्लॉवर बंधु, कैम्पबेल, व्हिटाल, पॉल स्ट्रेंग, ब्रायन स्टेंज व स्ट्रीक आज परिचित नाम बन चुके हैं। अतः भारत जिम्बाब्वे के बीच टेस्ट संबंधों की शुरुआत भविष्य के लिए शुभ संकेत है। अधिक टेस्ट क्रिकेट खेलने पर उसके खिलाड़ियों को धैर्य, एकाग्रता, मानसिक संतुलन, तकनीक, कलात्मकता और मजबूत इरादे का महत्व अपने आप समझ में आ जायेगा। जिम्बाब्वे के खिलाड़ियों की खेल शैली इतनी सकारात्मक व परिणामपरक है कि वे जहां कहीं भी जाकर खेलेंगे लोकप्रिय होंगे। भविष्य में भारत को जिम्बाब्वे से कड़ी प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

13

एक दिवसीय क्रिकेट व भारत की विश्व कप विजय

दरअसल सीमित ओवर के एक दिवसीय क्रिकेट की शुरुआत वास्तव में किस वर्ष से व कब से हुई यह कह पाना मुमकिन नहीं है। फिर भी 1963 में जिलेट कप, 1969 में जॉन प्लेयर लीग और 1972 में बेंसन एंड हेजेस कप की शुरुआत सीमित ओवर के एक दिवसीय क्रिकेट मैचों का प्रारंभ माना जाना चाहिए। टेस्ट क्रिकेट में दर्शकों की घटती दिलचस्पी एवं आयोजकों के बढ़ते घाटे के मद्देनजर तथा टेस्ट क्रिकेट को जिंदा रखने के उद्देश्य से एक दिवसीय क्रिकेट की शुरुआत की गयी। इरादा यही था कि एक दिवसीय क्रिकेट से होने वाली आय से टेस्ट मैचों में होने वाले घाटे को यदि पूरा नहीं तो कम तो किया ही जाना चाहिये ताकि टेस्ट क्रिकेट को जारी रखा जा सके। आज यह आलम है कि एक दिवसीय क्रिकेट की बढ़ती संख्या एवं लोकप्रियता तथा उसकी चकाचौंध में टेस्ट क्रिकेट पृष्ठभूमि में चला गया है और दम तोड़ता सा प्रतीत होता है। यहां तक कि क्रिकेट की समझ रखने वाले देशों एवं नगरों में टेस्ट मैचों की तुलना में एक दिवसीय क्रिकेट देखने के लिए ऐसी भीड़ इकट्ठी होती है कि जितने लोग स्टेडियम में बैठे होते हैं, करीब उतने ही प्रवेश न कर पाने के कारण बाहर जद्दोजहद करते नजर आते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक दिवसीय क्रिकेट की विधिवत शुरुआत 1971 में हुई जब आस्ट्रेलिया व इंग्लैंड के बीच प्रयोग के तौर पर पहला एक दिवसीय क्रिकेट मैच खेला गया।

क्रिकेट के इस नये प्रारूप की सफलता से प्रेरित होकर अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल ने एक दिवसीय क्रिकेट की विश्व स्पर्धा आयोजित करने का फैसला किया। सभी टेस्ट दर्जा देश और आई.सी.सी विजेता टीमों को खेलने की पात्रता प्रदान की गयी। अलग किस्म के नियम बनाये गये जिसमें क्षेत्ररक्षण, हर टीम की बल्लेबाजी के निर्धारित ओवर, हर गेंदबाज के ओवर फेंकने की अधिकतम सीमा, पहले 15 ओवर तक खास किस्म के क्षेत्ररक्षण की जमावट तथा ऑफ व लेग स्टंप के बाहर

निर्धारित दूरी से अधिक दूर गेंद जाने पर वाईड बॉल का प्रावधान और निर्धारित समय सीमा में पूरे ओवर न फेंक पाने वाली टीम को उतने ही ओवर बल्लेबाजी करने देने का प्रावधान जितने ओवर उसने गेंदबाजी की हो जैसे नियम प्रमुख थे। हर चार साल में एक बार खेले जाने वाले विश्व कप की शुरुआत 1975 में हुई। भारत ने इंग्लैंड में खेले गये इस पहले विश्व कप में भाग तो लिया लेकिन उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। कारण यही था कि भारतीय खिलाड़ियों को सीमित ओवर का क्रिकेट खेलने का अनुभव ही नहीं था क्योंकि उन्होंने इस शैली में खेलने का अभ्यास नहीं किया था। भारत में सीमित ओवर के क्रिकेट के लिए देवधर ट्राफी स्पर्धा 1973-74 में ही शुरू हुई थी और यह स्पर्धा भी चूंकि क्षेत्रीय आधार पर विभिन्न टीमों को पांच क्षेत्रों में बांटकर खेली जाती थी, अतः बहुत कम खिलाड़ियों को सीमित ओवर का क्रिकेट खेलने का अवसर मिल पाता था और मात्र 2 वर्ष की अवधि में नये प्रारूप व नियमों के अंतर्गत अपनी खेल शैली में आवश्यक परिवर्तन कर पाना मुश्किल ही था। चार साल बाद 1979 में इंग्लैंड में ही दूसरा विश्व कप खेला गया। यह विश्व कप भारत के लिए पिछले विश्व कप से भी ज्यादा अपशगुनी रहा। इस बार भारत वेस्टइंडीज व श्रीलंका दोनों से हारकर स्पर्धा से बाहर हो गया। ये दोनों विश्व कप वेस्टइंडीज ने जीते। 1983 का प्रूडेंशियल विश्व कप भी इंग्लैंड में ही खेला गया। और यह तीसरा विश्व कप भारत के लिए शुभ रहा। भारत ने अपने पहले ही मैच में विगत दो विश्व कप की विजेता वेस्टइंडीज जैसी ताकतवर टीम को शिकस्त दी। अगले ही मैच में वह जिम्बाब्वे से जीता। मगर फिर आस्ट्रेलिया व वेस्टइंडीज से वह लगातार दो मैच हार गया। इसके बाद भारत ने नाटकीय रोमांच के बाद जिम्बाब्वे को हराया और सेमीफाइनल में इंग्लैंड को पराजित कर फाइनल में प्रवेश किया। फाइनल में भारत ने लॉर्ड्स के ऐतिहासिक मैदान पर वेस्टइंडीज को 43 रनों से हराकर विश्व कप विजेता बनने का गौरव प्राप्त किया। भारत को यह सफलता कपिल देव के नेतृत्व में मिली। तब भारतीय टीम में मोहिंदर अमरनाथ, रोजर बिन्नी, मदनलाल और कपिल देव, ये चार ऐसे ऑलराउंडर थे जो 'मीम' गेंदबाजी भी कर लेते थे और अच्छी बल्लेबाजी भी। भारत को इसका लाभ मिला। भारत एक दिवसीय क्रिकेट का बेताज बादशाह बन गया। यह भारतीय क्रिकेट के लिए गौरव का चरम क्षण था। ऐसी ऐतिहासिक सफलता भारत को दुबारा नहीं मिली। परंतु 1987 में भारत तथा पाकिस्तान द्वारा मिलकर किये गये रिलायंस विश्व कप के आयोजन में भारत का प्रदर्शन 1975 व 1979 के उसके विश्व कप के प्रदर्शनों से बेहतर रहा। 1987 के पहले सभी विश्व कप स्पर्धाएं इंग्लैंड में ही आयोजित की गयी थीं। इंग्लैंड में चूंकि शाम के बाद भी देर तक रोशनी रहती है, अतः तीनों विश्व कप स्पर्धाओं के मैच 60-60 ओवर के हुए थे। लेकिन भारत-पाकिस्तान द्वारा आयोजित रिलायंस विश्व कप के सभी मैच 50-50 ओवर के थे क्योंकि एक दिन

में 100 से अधिक ओवर तक खेल पाना इस दोनों ही देशों में असंभव था। तब तक बिजली की रोशनी में खेले जाने वाले दिन-रात के मैचों का चलन शुरू नहीं हुआ था। हालांकि कैरी पैकर ने रात में खेलने, रंगीन कपड़े व सफेद गेंद की शुरुआत कर दी थी परंतु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अभी यह सब मान्य नहीं किया जा सका था। इंग्लैंड के बाहर पहली बार खेले गये इस विश्व कप में भारत आस्ट्रेलिया से एक रोचक एवं रोमांचक मुकाबले में सिर्फ 1 रन से हार गया। पर इसके बाद उसने स्पर्धा से 5 मैच लगातार जीते और सेमीफाइनल दौर में प्रवेश किया। मगर मुंबई में खेले गये सेमीफाइनल मैच में वह इंग्लैंड से हार गया। गूच ने 'स्वीप शॉट' के बल पर ही यह सेमीफाइनल मुकाबला भारत से जीत लिया। उन्होंने यादगार 115 रन बनाये।

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की साझेदारी में आयोजित हुए 1992 के विश्व कप में भी भारत ने अपनी असफलता की ही कहानी दुहरायी। अब तक रंगीन कपड़े, सफेद गेंद, काले 'साइट स्क्रीन' व रंगीन 'लेग गार्ड्स' चलन में आ चुके थे। चूंकि दिन-रात के मैच खेले जाने लगे थे, अतः इस विश्व कप के भी कुछ मुकाबले दिन-रात वाले हुए। अब विश्व कप में भाग लेने वाले देशों की संख्या भी बढ़ गयी थी। इस विश्व कप में भारत 8 मैच खेला, दो जीता, 5 हारा और उसका 1 मैच रद्द हुआ। वह 5 अंक प्राप्त करके 7वें स्थान पर रहा। फाइनल पाकिस्तान और इंग्लैंड के बीच खेला गया। इमरान की कप्तानी में पाकिस्तान इंग्लैंड को हराकर विश्व कप विजेता बना।

1996 का विल्स कप तीन देशों—भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका ने मिलकर आयोजित किया। इस बार भारत का प्रदर्शन उसके 1992 के विश्व कप के प्रदर्शन से बेहतर व 1987 के विश्व कप प्रदर्शन जैसा ही रहा। भारत ने कीनिया, वेस्टइंडीज, जिम्बाब्वे और पाकिस्तान से अपने मैच जीते मगर आस्ट्रेलिया व श्रीलंका के खिलाफ उसे पराजय झेलनी पड़ी। बहरहाल वह सेमीफाइनल में पहुंचा। मगर कलकत्ता में श्रीलंका के खिलाफ खेले गये सेमीफाइनल मैच में जब स्थानीय दर्शकों ने भारतीय टीम को लड़खड़ाते हुए देखा तो व्यवधान पैदा कर मैच ही रोक दिया। जिन शर्मनाक परिस्थितियों में मैच रोका गया व फिर श्रीलंका को विजयी घोषित किया गया वह आजाद भारत में किसी भी मैच के दौरान हुई सबसे घटिया घटना थी। अंततः लाहौर में आस्ट्रेलिया को हराकर श्रीलंका ही विश्व कप विजेता बना। इस विश्व कप के आयोजन का सबसे बड़ा लाभ यही हुआ कि कलकत्ता के ईडन गार्डन के अलावा भारत के अन्य प्रमुख क्रिकेट केंद्र मुंबई व मोहाली, ग्वालियर तथा बंगलौर जैसे अपेक्षाकृत नये व छोटे क्रिकेट केंद्र भी दिन-रात के मैचों के लिए जरूरी 'फ्लड लाइट' एवं मैदान तैयार करने एवं मैच के लिए उपयोगी आधुनिक उपकरणों जैसे रोलर, घास काटने की मशीन, पानी सुखाने की मशीन, अच्छे स्तर के 'कवर' एवं इलेक्ट्रॉनिक

स्कोर बोर्ड जैसी सुविधाओं से संपन्न हो गये।

यदि आप 1975 के विश्व कप के बाद भारत द्वारा खेले गये सभी एक दिवसीय मैचों का ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहें तो आपके लिए आंकड़ों के अलावा और कुछ भी दे पाना संभव नहीं होगा। इतनी अधिक सांख्यिकी देनी होगी कि सिर्फ स्पर्धा का नाम और मैच का उल्लेख कर देने भर में अनेक पृष्ठ भर जायेंगे। आजकल इतनी अधिक तादाद में एक दिवसीय मैच खेले जाने लगे हैं कि आज की सारी जानकारी कल पुरानी पड़ जाती है। जितने टेस्ट मैच खेले जाते हैं उनसे चार या पांच गुना अधिक एक दिवसीय मैच खेले जाने लगे हैं। भारत ने ही पिछले एक साल में जहां 12 टेस्ट मैच खेले हैं वहां 60 एक दिवसीय मैच खेले हैं और हर खिलाड़ी ने करीब 50 से 60 लाख रु. बतौर पारिश्रमिक के कमाये हैं। इस सत्र में ही भारत 39 एक दिवसीय मेच खेला है। कमोबेश यही स्थिति अन्य देशों की भी है। यदि आप न्यूनतम संख्या भी गिनें तो हर शृंखला में 3 टेस्ट व 5 या 6 एक दिवसीय मैच खेला जाना आम बात है। जब हर नये आंकड़े चौबीस घंटों में पुराने पड़ जाते हों तो सभी मैचों का उल्लेख करने से कहीं ज्यादा लाभकारी होगा प्रमुख स्पर्धाओं व उनमें मिली सफलता अथवा असफलता की विस्तृत विवेचना और विश्लेषण करना। एक दिवसीय मैचों की संख्या में दिन-प्रतिदिन होती जा रही बेशुमार वृद्धि की एक झलक पाने के लिए टोरंटो में संपन्न हुई सहारा कप की समाप्ति तक भारत के एक दिवसीय मैचों की संख्या व उसके प्रदर्शन का ही उदाहरण देना पर्याप्त होगा। विगत् 22 वर्षों में भारत ने टोरंटो कप तक कुल 333 एक दिवसीय मैच खेले हैं जिनमें से 146 जीते हैं, 171 हारे हैं और 5 में कोई परिणाम नहीं निकल पाया है—यानी वे अधूरे रहे हैं। यह संख्या 65 वर्षों में खेले गये 318 टेस्ट मैचों से कितनी अधिक है, यह आप आसानी से जान सकते हैं।

एक दिवसीय मैचों की इस बाढ़ का सबसे बड़ा कारण इन मैचों की लोकप्रियता है। प्रायोजक कतार लगाये रहते हैं कि उन्हें प्रायोजन का मौका मिले। इस तरह एक दिवसीय क्रिकेट सोने का अंडा देने वाली मुर्गी है। अपने रोमांच, नाटकीय उतार-चढ़ाव व परिणामपरकता के कारण सभी एक दिवसीय क्रिकेट पसंद करने लगे हैं।

अतः हम 1983 की विश्व विजय के बाद के उन्हीं एक दिवसीय मैचों की चर्चा करेंगे जो महत्वपूर्ण थे और जिनमें भारत का प्रदर्शन लाजवाब रहा। इन स्पर्धाओं में पहली थी 1984-85 में आस्ट्रेलिया में खेली गयी वेंसन एंड हेजेस स्पर्धा जिसमें फाइनल मुकाबले में भारत ने पाकिस्तान को 8 विकेट से हराया और वह स्पर्धा विजेता रहा। दूसरी थी शारजाह में चार देशों के बीच खेली गयी रोथमेंस ट्राफी जिसके अंतिम मुकाबले में भारत ने आस्ट्रेलिया को 3 विकेट से हराया। अन्य महत्वपूर्ण स्पर्धा थी 1988 का शारजाह कप जो भारत ने न्यूजीलैंड को हराकर जीता। फिर

1988-89 में बंग्लादेश में खेले गये एशिया कप में भारत स्पर्धा विजेता बना। यद्यपि एशिया कप में भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका व बंग्लादेश ये चार राष्ट्र ही खेलते रहे हैं लेकिन भारत, पाकिस्तान व श्रीलंका के कारण मुकाबले कड़े व प्रतिस्पर्धात्मक हो जाते हैं। भारतीय टीम की अन्य उल्लेखनीय सफलताओं में 1990-91 में भारत में ही खेली गयी एशिया कप स्पर्धा, भारत में ही 1993 में खेला गया हीरो कप, 1994 में श्रीलंका में खेला गया सिंगर कप, फिर वेस्टइंडीज, न्यूजीलैंड और भारत के बीच खेली गयी विल्स कप त्रिकोणीय स्पर्धा और 1995 में शारजाह में खेली गयी एशिया कप स्पर्धा, बंग्लादेश का इंडिपेंडेंस कप व शारजाह का ताजा कोका कोला कप, इन सभी मुकाबले में भारत ने अपनी जीत दर्ज की। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि 1986 में जब पाकिस्तान एशिया कप विजेता बना तब उस स्पर्धा में भारत ने हिस्सा ही नहीं लिया था। ताजा एशिया कप मुकाबले में 26 जुलाई, 1997 को श्रीलंका भारत को 8 विकेट से हराकर स्पर्धा विजेता बना।

वेस्टइंडीज के खिलाफ खेली गयी 4 एक दिवसीय मैचों की शृंखला में 3-1 से पराजित होने के बाद तक यानी अप्रैल 1997 तक भारत 316 एक दिवसीय मैच खेल चुका था, जिनमें से वह 140 में जीता, 163 में हारा, 3 'टाई' हुए और 10 में कोई नतीजा नहीं निकल पाया था। भारत की ताजा सफलताओं में आप 1994-95 में विल्स कप एक दिवसीय मुकाबलों में वेस्टइंडीज के खिलाफ विजय व अक्तूबर 96 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टाइटन कप में व सितंबर 1997 में टोरंटो में पाकिस्तान के खिलाफ 4-1 की विजय और शारजाह में आस्ट्रेलिया के खिलाफ कोका कोला कप विजय को शरीक कर सकते हैं। इसी तरह ताजा पराजयों में दक्षिण अफ्रीका में भारत, दक्षिण अफ्रीका व जिम्बाब्वे के बीच स्टेंडर्ड बैंक त्रिकोणीय स्पर्धा के फाइनल में उसे दक्षिण अफ्रीका ने बेहतर रन औसत के आधार पर पराजित किया और तत्पश्चात वेस्टइंडीज में वेस्टइंडीज ने उसे 3-1 से शृंखला में पराजित किया। पिछले क्रिकेट वर्ष में भारत ने भारत में ही खेले गये 23 एक दिवसीय मुकाबले में से 8 जीते, 13 हारे व 1 'टाई' हुआ। आजादी की स्वर्णजयंती के उपलक्ष्य में बेमौसम करवाये गये इंडिपेंडेंस कप में दयनीय प्रदर्शन भी भारत के खराब प्रदर्शनों में शुमार है।

एक दिवसीय क्रिकेट की इस अप्रत्याशित सफलता का सबसे बड़ा कारण यह है कि इसमें एक ही दिन में नाटकीय रोमांच, उतार-चढ़ाव, अप्रत्याशित परिणाम सामने आते हैं। मैच में हार-जीत होती है और यह टेस्ट मैच की तरह पांच दिन तक खेला जाने के बाद 'ड्रा' नहीं होता। मैच 'टाई' तभी होता है जब दोनों टीमों का स्कोर बराबर हो जाये और ऐसी स्थिति आमतौर पर रोमांचक रहने वाले एक दिवसीय मैचों में से भी अधिक उत्तेजक व आंदोलित करने वाली होती है। पर विचार इस बात पर किया जाना चाहिए कि अधिकतर इन मैचों को प्रायोजित वे ही कंपनियां

कर रही हैं जो या तो सिगरेट बनाती हैं या फिर शराब और ये दोनों ही चीजें स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। सेहत बनाने वाली खेल गतिविधियों को तंदरुस्ती बिगाड़ने वाली वस्तुओं का उत्पादन करने वाली कंपनियों संचालित करें, भला इससे बड़ी विडंबना और त्रासदी और क्या होगी ? आज बेशुमार दौलत इन्हीं कंपनियों के पास है; अतः उनके सामने सभी असहाय हैं।

क्रिकेट की मार्केटिंग करके खिलाड़ियों व खेल के लिए अधिक धन इकट्ठा करने के प्रयास में एक दिवसीय क्रिकेट ऐसे देशों में भी खेला जा रहा है जो वास्तव में क्रिकेट राष्ट्र हैं ही नहीं तथा जहां न तो क्रिकेट का वांछित वातावरण है और न ही मुफीद परिस्थितियां। शारजाह से लेकर सिंगापुर तथा टोरंटो में एक दिवसीय क्रिकेट की प्रतिस्पर्धात्मक गतिविधियां पैसे के बल पर ही चलाई जा रही हैं। यदि क्रिकेट का आकर्षण बनाये रखना है तो इस 'अति क्रिकेट' के बुखार से निजात पाना जरूरी है। जो क्रिकेट के असली दीवाने हैं उन्हें तो यह एक दिवसीय क्रिकेट पंसद ही नहीं आता और सभी कुछ एक तयशुदा 'फार्मूले' के तहत घटित होता प्रतीत होता है। हां जनता जर्नादन में यह बेहद लोकप्रिय है। आप शहरों से लेकर देहातों तक में लगभग हर उम्र के लोगों को अपनी-अपनी सुविधा व तरीकों से साधारण बल्ला व रबड़ या प्लास्टिक की गेंद से दिन में या रात के उजाले में क्रिकेट का शौक पूरा करते हुए देख सकते हैं।

कहा जाता है कि एक दिवसीय क्रिकेट सकारात्मक होता है और चूंकि वह कम समय में खत्म हो जाता है इसलिए टेस्ट क्रिकेट की तुलना में अधिक लोगों द्वारा सराहा जाता है। जरा सोचिये तो कि जो क्रिकेट बल्लेबाजी को गेंदबाजी की अपेक्षा अधिक तरजीह देता हो तथा जिसके मूल में ही बल्लेबाज को आउट करना नहीं बल्कि उसे रन बनाने देने से रोकने जैसा नकारात्मक भाव हो वह शुद्ध रूप से या सही अर्थों में सकारात्मक कैसे माना जा सकता है ? अधिक से अधिक गेंदों में कम से कम रन देने वाला गेंदबाज एक दिवसीय क्रिकेट का सफलतम गेंदबाज होता है। इसी कारण आमतौर पर 'सीमर्स' थोड़ी 'शार्ट ऑफ लेंथ' गेंद फेंककर रन बचाने में कामयाब हो जाते हैं और 'स्पिन' गेंदबाजों को निरुत्साहित किया जाता है। जाहिर है एक दिवसीय क्रिकेट में गेंदबाजी व बल्लेबाजी के बीच उचित संतुलन बनाये रखने का कोई प्रयास नहीं होता जो कि क्रिकेट की मूल भावना है। गेंद और बल्ले के बीच बराबरी का द्वंद्व ही एक खेल को इतने वर्षो से जीवित रखे हुए है। अब सहसा सारा ध्यान बल्लेबाजी की ओर केंद्रित कर दिया गया है। बल्लेबाज जैसे-तैसे कम से कम गेंदों में अधिक से अधिक रन बनाने की कोशिश में रहता है भले ही फिर वे रन कैसे भी क्यों न बनें। चाहे बाल 'लेट कट', 'फाइन लेग' की ओर जाये या 'हुक' या 'पुल' 'पॉइंट' की ओर, बस जैसे भी हो रन बनना चाहिए। इस मनोवृत्ति के कारण खेल की तकनीक दूषित हो रही है। खिलाड़ी भी मानते हैं कि एक दिवसीय

मैचों की संख्या कम की जानी चाहिए ताकि खेल तकनीक प्रभावित न हो। टेस्ट व एक दिवसीय मैचों की संख्या के बीच उचित तालमेल बिठाया जाना जरूरी है। वरना खेल से कलात्मकता समाप्त हो जायेगी। 'लेग स्पिन-गुगली' की दुर्दशा हम देख ही रहे हैं। भले ही शेन वार्न या मुश्ताक सफल लेग स्पिनर हों और स्तरीय गेंदबाज होने से टेस्ट व एक दिवसीय दोनों ही शैलियों के क्रिकेट में कारगर समझे जाते हों, आम राय यही है कि एक दिवसीय क्रिकेट में 'स्पिनर'—खासकर 'लेग स्पिनर्स' महंगे साबित होते हैं। अतः जब ये गेंदबाज एक दिवसीय क्रिकेट में खेलते हैं तो 'फ्लाईट' करने की बजाय कसी हुई गेंदबाजी करके रन रोकने की कोशिश करते हैं। यह कलात्मकता का पतन ही तो है। रही रोमांच की बात तो यदि दोनों टीमों के कप्तान और खिलाड़ी सकारात्मक पहल रखें तथा यदि उनका रुख स्वस्थ हो तो क्या टेस्ट क्रिकेट भी इतना ही रोचक, रोमांचक एवं उत्तेजक नहीं हो सकता ? 1960-61 में फ्रेंक वॉरेल की वेस्टइंडीज टीम तथा रिची बेनो की आस्ट्रेलियाई टीम के बीच हुआ 'टाई टेस्ट' और भारत तथा आस्ट्रेलिया के बीच 1986 में चेन्नई में 'टाई' हुआ टेस्ट क्या कम उत्तेजक, आकर्षक एवं दिलचस्प रहे थे ?

खिलाड़ी और अधिकारी भी मानते हैं कि टेस्ट क्रिकेट ही असली क्रिकेट है पर फिर भी वे लगातार दोनों ही शैलियों का क्रिकेट खेलते रहने के लिए अभिशप्त हैं। यदि उन्हें आधुनिक युग में रहना व व्यावसायिक नजरिया रखना है तो दोनों ही तरह का क्रिकेट खेलने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। उन्हें अपनी खेल शैली व तकनीक में जरूरत के अनुसार परिवर्तन भी करते रहना होगा। यही युगबोध है।

परंपरागत शैली का क्रिकेट यानी टेस्ट क्रिकेट यदि शास्त्रीय संगीत है तो एक दिवसीय क्रिकेट यानी फटाफट क्रिकेट सुगम संगीत। दोनों की ही अपनी विशेषताएं हैं। लेकिन जिसे भीमसेन जोशी या पंडित जसराज का गायन अथवा बिसमिल्लाह खान की शहनाई में सुकून मिलता है वह फिल्मी गीतों को कैसे सराह सकता है ? जी हां, यह पसंद का मामला है। एक दिवसीय क्रिकेट में कभी भी कुछ भी हो सकता है। कोई भी टीम कभी भी किसी भी टीम को हरा सकती है व किसी भी टीम से हार सकती है। इस शैली के खेल में इतनी अधिक अनिश्चितता रहती है कि अपने श्रेष्ठ फार्म में थोड़ी ही देर हो जाये तो आतिशी बल्लेबाजी या हैरतअंगेज गेंदबाजी द्वारा कोई भी टीम खेल का रुख पलट सकती है। इसकी तुलना में टेस्ट क्रिकेट में खिलाड़ी को योजना बनाकर खेलने व अपनी कला का पूरा उपयोग करने का अवसर मिलता है। तभी तो श्रेष्ठता का पैमाना टेस्ट क्रिकेट को ही माना गया है।

14

भारत की राष्ट्रीय स्पर्धाएं

पारसियों ने भारत में क्रिकेट खेलने की शुरुआत की। 1892 में पारसियों और यूरापियंस के बीच साल में दो बार खेले जाने वाले प्रेसीडेंसी मैच से भारत में क्रिकेट का प्रारंभ हुआ। 1907 से 1911 तक तीसरी टीम के जुड़ जाने से यह स्पर्धा त्रिकोणीय हो गयी। यह तीसरी टीम हिंदुओं की थी। फिर 1912 से लेकर 1936 तक मुसलमानों की टीम के भी शरीक कर लिए जाने से यह स्पर्धा चतुष्कोणीय हो गयी। जब 1937 में 'रेस्ट' नाम से पांचवीं टीम भी इस स्पर्धा में शिरकत करने लगी तो यह स्पर्धा पंचकोणीय हो गयी। 1945 में गांधी जी द्वारा इस स्पर्धा को सांप्रदायिक करार दिये जाने व इसके खिलाफ सत्याग्रह करने के कारण यह स्पर्धा ही समाप्त कर दी गयी। लेकिन जब तक ये स्पर्धाएं खेली जाती रहीं तब तक ये भारत की प्रमुख क्रिकेट स्पर्धाएं रहीं तथा दर्शकों में बेहद लोकप्रिय बनी रहीं। मुंबई में लोग एक साल पहले से अगले वर्ष की स्पर्धा का बेसब्री से इंतजार करते थे।

देश में क्रिकेट की नींव जहां इन स्पर्धाओं ने डाली वहीं उसके प्रचार-प्रसार व उसे आम लोगों में लोकप्रिय बनाने का काम वर्तमान में खेली जा रही विभिन्न राष्ट्रीय स्पर्धाओं ने किया है। रणजी ट्राफी, दिलीप ट्राफी, देवधर ट्राफी व ईरानी ट्राफी आज भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड द्वारा संचालित प्रमुख राष्ट्रीय स्पर्धाएं हैं और मान्यता यही है कि विभिन्न अवसरों पर राष्ट्रीय टीम का चुनाव करते वक्त खिलाड़ियों के इन स्पर्धाओं में प्रदर्शन पर भी ध्यान दिया जाता है।

इंग्लैंड में रहे, पढ़े और इंग्लैंड की ही ओर से टेस्ट क्रिकेट खेले रणजीत सिंह जी की स्मृति में क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने 1934-35 से देश में रणजी ट्राफी क्रिकेट स्पर्धा की शुरुआत की। इसके पहले समूचे देश में खेली जाने वाली अधिकृत प्रथम श्रेणी क्रिकेट स्पर्धा थी ही नहीं। त्रिकोणीय, चतुष्कोणीय एवं पंचकोणीय स्पर्धाओं की पहुंच चंद लोगों तक ही थी। इतना जरूर था कि इन स्पर्धाओं में खेलने वाले

खिलाड़ियों को उच्चस्तरीय क्रिकेट खेलने का मौका व अभ्यास मिल जाता था। आजादी के पहले देश में राजशाही का आलम था। वडोदरा, (तब बड़ौदा) पटियाला, होल्कर, मैसूर व महाराज कुमार विजयनगरम अपनी-अपनी रियासतों में ताकतवर क्रिकेट टीम बनाने के लिए होड़ किया करते थे। इस कारण विभिन्न रियासतों में अनेक प्रतिभावान और अच्छे खिलाड़ियों को अच्छी तनख्वाह पर नौकरियां दी गयी। इन खिलाड़ियों का काम रियासत के लिए खेलना और टीम को रणजी ट्राफी में जीत दिलाने की कोशिश करना ही था। इंदौर व वडोदरा में इसीलिए कई मशहूर खिलाड़ी इकट्ठे हो गये।

1934-35 से लेकर 1946-47 तक रणजी ट्राफी में मुंबई, महाराष्ट्र, वडोदरा, होल्कर व बंगाल की टीमों का दबदबा रहा। शुरुआती वर्ष में तो मुंबई ने ही रणजी ट्राफी फाइनल जीता था। आजादी के पहले तक मुंबई की टीम 4 बार रणजी ट्राफी चैंपियन बनी जबकि महाराष्ट्र व वडोदरा 2-2 बार तथा बंगाल होल्कर, हैदराबाद, नवानगर तथा वेस्टर्न इंडिया की टीमें 1-1 बार रणजी विजेता बनीं। प्रो. देवधर, वजीर अली, सी. के. नायडू व विजय मर्चेंट आजाद भारत के पहले रणजी स्पर्धाओं में छाये रहते थे। 1947 में जब भारत आजाद हुआ तो भी वडोदरा व होल्कर की रियासतें क्रिकेट को बढ़ावा देती रहीं और खिलाड़ियों को संरक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान करती रहीं।

1947 से लेकर 1954-55 तक रणजी ट्राफी चैंपियनशिप होल्कर, मुंबई व वडोदरा की टीमों के बीच बारी-बारी से बंटती रही। अपवादस्वरूप एक साल बंगाल व एक साल चेन्नई की टीमें रणजी विजेता जरूर बनीं। वरना इस दौरान हर बार फाइनल मुकाबला इन्हीं तीनों टीमों के बीच हुआ। होल्कर की टीम कुल 6 बार रणजी ट्राफी फाइनल खेली और 4 बार रणजी विजेता बनी और आजादी के बाद तो उसने 3 बार फाइनल मुकाबला जीता। होल्कर, वडोदरा व मुंबई की टीमें रणजी ट्राफी की पारंपरिक प्रतिद्वंद्वी टीमें रहीं और इन टीमों के बीच के मैच काफी कशमकश और जोश-खरोश से भरपूर होते थे। इन टीमों में अनेक ऐसे ख्यातिप्राप्त खिलाड़ी थे जो या तो पहले ही भारत के लिए खेल चुके थे या फिर बाद में खेले। होल्कर टीम में जहां कर्नल सी.के. नायडू, मुश्ताक अली, सी. एस. नायडू, सी.टी.सर्वटे, हीरालाल गायकवाड़, जे.एन. भाया, एम.एम.जगदाले व धनवड़े जैसे लोकप्रिय खिलाड़ी थे तो वडोदरा को विजय हजारे, किशनचंद, हेमू अधिकारी, अमीर इलाही, गुल मोहम्मद व डी.के. गायकवाड़ जैसे खिलाड़ियों की सेवाएं प्राप्त रहीं। मुंबई टीम में भी एक से बढ़कर एक खिलाड़ी थे, जिनमें विजय मर्चेंट, पॉली उमरीगर, के.सी. इब्राहीम, विजय मांजरेकर, माधव मंत्री, सोहनी, एम.एल. आप्टे, नाडकर्णी व हार्डीकर प्रमुख थे। आप कल्पना कर सकते हैं कि इन टीमों की प्रतिस्पर्धा कितनी दिलचस्प व रोचक होती होगी। सच मानिये तब रणजी ट्राफी मैचों को लेकर जो उत्साह व उत्सवी माहौल

होता था वैसा आज टेस्ट मैच तो क्या एक दिवसीय मैचों में भी नजर नहीं आता। जिन लोगों ने तब का क्रिकेट देखा है और जो आज का क्रिकेट भी देख रहे हैं, वे इस कथन की सत्यता स्वीकार करेंगे। और तब टीमों को लेकर जो अपनापन दिखाई देता था वह आज नदारद है। इसी तरह आज बड़े-बड़े प्रायोजक तो हैं जो बड़ी धनराधि खर्च कर रहे हैं लेकिन यशवंत राव होल्कर जैसे प्रायोजक कहां हैं ? वे धन तो देते ही थे, अपनी टीम का मैच पूरे समय तक बैठकर देखते थे और वह भी खिलाड़ियों की तरह सफेद कपड़े, टेनिस के जूते व 'ब्लेजर' पहनकर ताकि उन्हें भी लगे कि वह भी टीम का हिस्सा हैं और उन्होंने कभी टीम में शरीक होने का लालच या ख्याल भी नहीं किया। वरना कुछ मैच खेल पाना उनके लिए भला क्या मुश्किल था ? होल्कर टीम जहां भी जाती थी अपने आक्रामक खेल के कारण हर जगह लोकप्रिय होती थी। इंदौर जैसी छोटी जगह पर रहकर व सीमित साधनों में खेलकर उसने जो सफलता अर्जित की वह बेमिसाल थी। आजादी के कुछ ही वर्षों बाद रियासतों का विलीनीकरण हो गया। उधर यशवंत राव होल्कर सख्त बीमार रहे व फिर उनका देहावसान हो गया। टीम का खर्च कौन उठाता ? खिलाड़ियों की नौकरी की भी समस्या थी। अतः मध्य भारत व फिर मध्य प्रदेश बनते-बनते होल्कर टीम बिखर गयी। वडोदरा व हैदाराबाद की टीमें बनी रहीं और आज भी इन्हीं नामों से रणजी ट्राफी में खेलती हैं। महाराष्ट्र से तीन-तीन टीमें रणजी ट्राफी में खेलती हैं—मुंबई, महाराष्ट्र व विदर्भ और गुजरात से गुजरात व वडोदरा की टीमें तो खेलती ही हैं, सौराष्ट्र की टीम भी रणजी ट्राफी में खेलती है।

1955-56 से 1976-77 तक लगातार बीस वर्षों तक रणजी ट्राफी पर मुंबई का एकाधिकार रहा। अपवादस्वरूप 1957-58 में वडोदरा तथा फिर 1973-74 में कर्नाटक की टीमें जरूर ट्राफी विजेता रहीं। वरना मुंबई का ही वर्चस्व बना रहा। उस स्थिति में जब टेस्ट एवं एक दिवसीय मैचों में मुंबई के प्रमुख खिलाड़ी भारत के लिए खेलने में व्यस्त रहते थे, मुंबई तब भी रणजी ट्राफी की चैंपियन टीम बनी रही। इस बीच राजस्थान भी एक ताकतवर टीम के रूप में उभरी। 1959-60 से 1972-73 के बीच वह 8 बार फाइनल में पहुंची। मगर सलीम दुर्रानी, विजय मांजरेकर, वीनू मनकड़, सुभाष गुप्ते, सुदंरम रामचंद जैसे व्यावसायिक व हनुमंत सिंह, सूर्यवीर सिंह, राजसिंह व लक्ष्मण सिंह एवं पार्थसारथी शर्मा जैसे स्थानीय व प्रतिभावान खिलाड़ियों के होते हुए भी वह कभी रणजी ट्राफी नहीं जीत पायी।

ऐसा भी समय आया जब मुंबई का एकाधिकार खत्म होता गया। अन्य राज्यों के खेल स्तर में भी तेजी से सुधार होता गया और क्रिकेट के सुदूर पूर्व देश भर में फैल जाने से टीमों की हिस्सदारी भी बढ़ने लगी। खासकर दिल्ली, पंजाब व हरियाणा जैसे उत्तरी राज्यों के खेल स्तर में तेजी से सुधार आया। कलकत्ता भारत का सबसे बड़ा शहर है और वहां खेल सुविधाएं भी पर्याप्त हैं। मगर रणजी ट्राफी के 62 वर्षों

के इतिहास में 1934-35 से लेकर 1996-97 तक बंगाल की टीम सिर्फ 2 बार रणजी विजेता हो पायी है। अतः बंगाल का इस प्रमुख राष्ट्रीय स्पर्धा में वांछित स्तर का प्रदर्शन न कर पाना सचमुच आश्चर्यजनक है। बंगाल ने यहां तक किया है कि वह पिछले कुछ वर्षों से दिल्ली, हरियाणा, मुंबई, विदर्भ में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों को बुलाकर अपनी ओर से रणजी ट्राफी में खिलाता रहा है। ऐसी प्रवृत्तियों से खुद बंगाल के खिलाड़ियों का ही नुकसान होता है क्योंकि वे खेलने के अवसरों से वंचित होते हैं व बाहर के खिलाड़ी उनका रास्ता रोके रहते हैं। एक चक्र की तरह मुंबई की सफलता का 'ग्राफ' फिर ऊंचा हुआ। 1980-81, 1983-84, 1884-85 व फिर 1993-94 में मुंबई ही फिर से रणजी चैंपियन बनी और 1996-97 में दिल्ली को हराकर उसने फिर से रणजी ट्राफी जीती। इस तरह अभी तक 62 साल के रणजी इतिहास में 34 बार मुंबई रणजी ट्राफी विजेता बनी है। इससे सिद्ध होता है कि वाकई मुंबई भारत की क्रिकेट नर्सरी ही नहीं, क्रिकेट राजधानी भी है। मुंबई ने यदि सबसे अधिक बार रणजी ट्राफी जीती है तो इसका कारण वहां अन्य स्थानों की अपेक्षा क्रिकेट की बेहतर सुविधाएं व इस कारण वहां का खेल स्तर बेहतर होना है। मुंबई के बाद सबसे अधिक बार रणजी ट्राफी जीतने वाली टीम दिल्ली की है जिसने 6 बार यह स्पर्धा जीती है। मगर 34 व 6 के बीच लगभग 6 गुना अंतर है।

क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने बेहतर खेल स्तर व अधिक अवसरों के मद्देनजर रणजी ट्राफी के प्रारूप में अनेक परिवर्तन किये। पहले यह स्पर्धा 'नॉक आउट' आधार पर खेली जाती थी। एक मैच हार जाने वाली टीम को फिर अगले साल का इंतजार करना पड़ता था। अतः 'लीग कम नॉक आउट' पद्धति की शुरुआत की गयी। देश की टीमों को उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और मध्य क्षेत्रों में विभाजित करके खिलाया जाने लगा और हर क्षेत्र की दो श्रेष्ठ टीमें 'नॉक आउट' में प्रवेश करने लगीं। अब गत वर्ष से सुपर लीग शुरू की गयी है। हर क्षेत्र से 3 श्रेष्ठ टीमें लीग में अपनी स्थिति के आधार पर एक दूसरे के खिलाफ खेलती हैं। अब खिलाड़ियों को खेलने, प्रतिस्पर्धा करने व लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के पर्याप्त अवसर मिलने लगे हैं। यहां तक कि कमजोर टीम के अच्छे खिलाड़ी की ओर भी लोगों का ध्यान जाता है और उसको अनदेखा किये जाने पर आलोचना की जाती है। पहले ऐसे प्रकरण छिपे रह जाते थे। परंतु अभी भी मुंबई, चेन्नई, कलकत्ता और दिल्ली जैसे बड़े शहरों व केंद्रों का दबदबा बना ही हुआ है व ये बड़े शहर अपने-अपने खिलाड़ियों के लिए 'लॉबिंग' भी करते हैं।

रणजी ट्राफी में एक पारी का सर्वाधिक निजी स्कोर 443 नाबाद रनों का है जो कि एक कीर्तिमान है। यह स्कोर बी.बी. निंबालकर के नाम है। ये रन उन्होंने 1948-49 में महाराष्ट्र की ओर से काठियावाड़ के खिलाफ खेलते हुए बनाये थे।

विरोधी टीम मैच अधूरा छोड़कर चली गयी वरना निंबालकर के सामने ब्रेडमेन के एक पारी में 452 रनों के विश्व कीर्तिमान को तोड़ने का सुनहरा अवसर था। रणजी ट्राफी में सबसे ज्यादा 7274 रन अशोक मल्होत्रा के नाम पर दर्ज हैं। मगर दिल्ली के अजय शर्मा अब उनसे आगे बढ़ गये हैं और सबसे ज्यादा 640 विकेट राजेंद्र गोयल के नाम पर हैं। दिलचस्प पहलू यह है कि विश्व में दस हजार टेस्ट रन बनाने वाले पहले बल्लेबाज सुनील गावसकर तथा विश्व में सर्वाधिक टेस्ट विकेट लेने का कीर्तिमान स्थापित करने वाले कपिल देव रणजी ट्राफी में सर्वाधिक रन बनाने वाले व सर्वाधिक विकेट लेने वाले खिलाड़ी नहीं हैं। कारण यही है कि ये दोनों महान खिलाड़ी अधिकतर भारत के लिए खेलने में व्यस्त रहे, अतः उनके पास अपनी रणजी ट्राफी टीम के लिए खेलने के लिए समय ही नहीं रहा। भारत में ही नहीं अन्य देशों में भी आपको ऐसे खिलाड़ी मिल जायेंगे जो राष्ट्रीय स्तर पर खेलने की बजाय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक खेले। अतः उनकी अंतर्राष्ट्रीय उपलब्धियां उनकी राष्ट्रीय उपलब्धियों से अधिक हैं। कई बार राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी मौका मिलने पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उतने सफल नहीं रहे हैं। कारण यही है कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के तनाव, दबाव व मानसिकता में जमीन आसमान का फर्क है, अतः सभी खिलाड़ी इन दबावों को नहीं झेल पाते। आज इतना अंतर जरूर आया है कि मध्य प्रदेश, उड़ीसा, हैदराबाद, बिहार व चंडीगढ़ के खिलाड़ियों के अच्छे प्रदर्शन पर भी लोगों की नजर पड़ने लगी है व इन स्थानों के खिलाड़ी रणजी में अच्छा प्रदर्शन करके टेस्ट टीम के दरवाजे खटखटाने लगे हैं। यह क्रिकेट की प्रगति का ही परिचायक है तथा क्रिकेट के बृहत्तर हित में है।

रणजी ट्राफी की शुरुआत तो आजादी के 13 साल पहले ही हो गयी थी। रणजी ट्राफी के शुरू होने के 27 साल बाद 1961-62 में भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने दिलीप सिंह के नाम पर दिलीप ट्राफी स्पर्धा की शुरुआत की। दिलीप सिंह, रणजीत सिंह जी के भतीजे थे और रणजी की ही तरह ससेक्स के लिए काउंटी क्रिकेट व इंग्लैंड के लिए टेस्ट क्रिकेट खेले। इंग्लैंड के लिए आस्ट्रेलिया के खिलाफ लगाये गये उनके शतक को लोग आज भी याद करते हैं। वह भारतीय चयन समिति के प्रमुख भी रहे व आस्ट्रेलिया में भारत के हाई कमिश्नर भी। आजादी के 14 साल बाद इस स्पर्धा का प्रारंभ हुआ। यह स्पर्धा क्षेत्रीय आधार पर खेली जाती है। हर क्षेत्र की टीमों के श्रेष्ठ खिलाड़ियों को उनके रणजी ट्राफी के प्रदर्शन के आधार पर टीम में लिया जाता है। इस तरह श्रेष्ठ खिलाड़ियों से गठित देश की 5 टीमें इसमें हिस्सा लेती हैं। यह रणजी ट्राफी से थोड़े ऊंचे स्तर की स्पर्धा है क्योंकि इसमें खेलने वाला खिलाड़ी समूचे क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जबकि रणजी में खेलने वाला खिलाड़ी अपने प्रदेश की नुमाइंदगी करता है। रणजी ट्राफी में अभी तक मुंबई का वर्चस्व रहा है और चूंकि मुंबई पश्चिम क्षेत्र में है, अतः दिलीप ट्राफी में भी अभी

तक पश्चिमी क्षेत्र का ही वर्चस्व बना रहा है।

1961-62 से लेकर 64-65 तक चार साल तो पश्चिम क्षेत्र ही दिलीप ट्राफी जीतता रहा। 63-64 में एक वर्ष पश्चिम व दक्षिण क्षेत्र को दिलीप ट्राफी का संयुक्त विजेता घोषित किया गया। वरना अधिकांश बार दिलीप ट्राफी पर या तो पश्चिम क्षेत्र का कब्जा रहा या फिर दक्षिण अथवा उत्तर क्षेत्र का। 1994 तक यह ट्राफी पश्चिम क्षेत्र ने 12 बार, उत्तर क्षेत्र ने 11 बार, दक्षिण क्षेत्र ने 9 बार तथा सभी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक कमजोर माने जाने वाले मध्य क्षेत्र ने 1 बार जीती। 1963-64 में पश्चिम-दक्षिण क्षेत्र और 1988-89 में उत्तर क्षेत्र-पश्चिम क्षेत्र संयुक्त विजेता रहे। दिलीप ट्राफी में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं अंशुमन गायकवाड़। उन्होंने दिलीप ट्राफी में 2005 रन बनाये। सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं चंद्रशेखर, जिन्होंने इस स्पर्धा में 99 विकेट लिये। ऐसी मान्यता है कि दिलीप ट्राफी का अच्छा प्रदर्शन टेस्ट टीम में आने की पहली पायदान है। इस स्पर्धा में सफल होने वाले खिलाड़ी हर दृष्टि से टेस्ट टीम में स्थान पाने की पात्रता रखते हैं और दिलीप ट्राफी में अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद यदि वे टेस्ट टीम में नहीं आ पाते हैं तो शायद इसका एकमात्र कारण यही है कि वे जिस स्थान के योग्य हैं, वह फिलहाल रिक्त नहीं है व उस पर उनसे वरिष्ठ व बेहतर खिलाड़ी मौजूद हैं। कभी-कभी क्षेत्रीय संतुलन भी आड़े आता है। इतने बड़े देश में जब क्रिकेट का समुचित फैलाव हो गया हो तो कुछ मामलों में इस या उस ओर झुकाव हो जाना मुमकिन है। मध्य क्षेत्र के अमय खुरसिया का ही मामला लीजिए जो न सिर्फ रणजी, बल्कि दिलीप ट्राफी में भी अच्छा प्रदर्शन करते रहे हैं बल्कि गूच की इंग्लैंड टीम के खिलाफ बोर्ड अध्यक्ष एकादश के लिए आक्रामक व आकर्षक शतक लगाने के बावजूद अभी तक भारतीय टीम में स्थाई जगह नहीं बना पाये हैं जबकि उन्हें आज से 5 साल पहले ही मौका दिया जाना चाहिए था। यह एक ताजा उदाहरण है। ऐसे कई नाम लिये जा सकते हैं जो उपेक्षा के शिकार हुए। अब खिलाड़ियों को खेलने के अधिक अवसर दिये जाने के लिहाज से दिलीप ट्राफी को भी लीग आधार पर खिलाये जाने का प्रावधान किया गया है।

रणजी व दिलीप ट्राफी के अलावा ईरानी ट्राफी भारत की अन्य महत्वपूर्ण क्रिकेट स्पर्धा है जो रणजी ट्राफी की विजेता और शेष भारत एकादश के बीच हर वर्ष खेली जाती है। दिलीप ट्राफी की ही तरह इस स्पर्धा की शुरुआत भी आजादी के बाद ही हुई। खिलाड़ियों को खेलने के उत्तरोत्तर बेहतर अवसर देने की दिशा में किये गये प्रयासों का ही यह प्रतिफल है कि इन स्पर्धाओं की योजनाबद्ध तरीके से शुरुआत की गयी। जिस तरह दिलीप ट्राफी, रणजी ट्राफी से थोड़ी ऊंची पायदान की स्पर्धा है उसी तरह ईरानी ट्राफी, दिलीप ट्राफी से भी ऊंची पायदान की स्पर्धा है। इसमें रणजी ट्राफी जीतने वाली टीम एक ओर होती है और देश की अन्य टीमों के चुनिंदा

खिलाड़ी दूसरी ओर। जेड.आर. ईरानी कभी भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष हुआ करते थे। पहले वह बोर्ड के कोषाध्यक्ष बने और फिर 1966 से 1969 तक बोर्ड के अध्यक्ष रहे। इस विख्यात क्रिकेट प्रशासक के सम्मान में बोर्ड ने 1959-60 में ईरानी ट्राफी स्पर्धा की शुरुआत की। इस स्पर्धा का पहला मैच मार्च 1960 में खेला गया। 1961 व 62 में अपरिहार्य कारणों से यह स्पर्धा आयोजित ही नहीं की जा सकी। स्पर्धा का प्रारंभ करते वक्त इरादा तो यही था कि यह स्पर्धा क्रिकेट मौसम के अंत में खेली जाये जब रणजी व दिलीप ट्राफी स्पर्धाएं समाप्त हो जायें। लेकिन 1965-66 से यह स्पर्धा क्रिकेट मौसम की शुरुआत में खेली जाने लगी है। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट कार्यक्रमों के मद्देनजर मजबूरन यह परिवर्तन करना पड़ा है। इस स्पर्धा का लाभ यह है कि भारतीय टीम में प्रवेश के लिए इच्छुक खिलाड़ियों को इस स्पर्धा के माध्यम से अपना दावा मजबूत करने का एक और अवसर मिल जाता है। इस तरह इस स्पर्धा का अहम महत्व है।

1959-60 से लेकर 1993-94 तक 35 वर्ष की अवधि में 3 बार ऐसा अवसर आया जब यह स्पर्धा आयोजित नहीं की जा सकी। रणजी एवं दिलीप ट्राफी की तरह इस स्पर्धा में भी मुंबई का ही वर्चस्व रहा है। मुंबई रणजी विजेता के रूप में 29 बार शेष भारत के खिलाफ खेली और 15 बार ट्रॉफी विजेता बनी। ईरानी ट्राफी में सबसे अधिक रन बनाने का श्रेय गुंडप्पा विश्वनाथ को प्राप्त है। उन्होंने 9 मैचों की 15 पारियों में 77.00 की औसत से 1001 रन बनाये जो ईरानी ट्राफी के सर्वाधिक रन भी हैं व श्रेष्ठ औसत भी।

भारतीय क्रिकेट के पुरोधा पुरुष प्रो. डी.बी. देवधर के सम्मान में क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड ने 1973 से देवधर ट्राफी की शुरुआत की। यह सीमित ओवर की क्रिकेट स्पर्धा है तथा भारतीय खिलाड़ियों को एक दिवसीय क्रिकेट का अभ्यास एवं अनुभव दिलवाने के उद्देश्य से शुरू की गयी है। यह भी क्षेत्रीय आधार पर खेली जाती है और देश की टीमें 5 क्षेत्रों में बंटकर इसमें प्रतिस्पर्धा करती हैं। अब इसे भी 'लीग' आधार पर खिलाया जाने लगा है ताकि खिलाड़ियों को फटाफट क्रिकेट खेलने का अधिक मौका मिले। इस स्पर्धा में कभी उत्तर क्षेत्र का बोलबाला रहा तो कभी पश्चिम क्षेत्र का और कभी दक्षिण क्षेत्र का। 1973-74 से 92-93 तक करीब 20 वर्ष की अवधि में पश्चिम क्षेत्र ने 7 बार, उत्तर क्षेत्र ने 5 बार, दक्षिण क्षेत्र ने 6 बार तथा मध्य एवं पूर्वी क्षेत्र ने 1-1 बार देवधर ट्राफी जीती है। एक दिवसीय क्रिकेट होता ही बल्लेबाजी प्रधान है जिसमें कम से कम गेंदें खेलकर जैसे-तैसे अधिक से अधिक रन बटारने की कोशिश की जाती है। औसत के हिसाब से 66.40 की औसत रखते हुए पार्थसारथी शर्मा एवं कुल बनाये गये रनों के हिसाब से 589 रन बनाकर बृजेश पटेल देवधर ट्राफी में शीर्ष पर हैं।

इन सभी स्पर्धाओं ने क्रिकेट के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम

गावसकर, विश्वनाथ, हजारे, वेंगसरकर, अजहर जैसे बल्लेबाजों के योगदान का ध्यान रखते वक्त निंबालकर, आइबेरा व अशोक मनकड़ जैसे बल्लेबाजों को न भूलें। इसी तरह कपिल देव, मनकड़, बेदी, चंद्रशेखर व प्रसन्ना जैसे गेंदबाजों का स्मरण करते वक्त सी.एस. नायडू, सर्वटे, हीरालाल गायकवाड़, शिवालकर, राजेंद्र गोयल व कुमार जैसे गेंदबाजों का भी स्मरण करें।

विश्वविद्यालय स्तर पर रोहिंग्टन बारिया ट्राफी तथा क्षेत्रीय आधार पर खेली जाने वाली विजी ट्राफी, स्कूली बच्चों के लिए कूच बिहार ट्राफी जो 1945 से शुरू की गयी थी और जिसे अब 50 साल से अधिक हो गये हैं तो हैं ही। युवाओं के लिए सी.के. नायडू ट्राफी व कम उम्र के बच्चों के लिए विजय हजारे ट्राफी व वीनू मनकड़ ट्राफी हैं। अब ध्यान 18 वर्ष से कम उम्र के लड़कों पर केंद्रित किया जा रहा है क्योंकि यही वह उम्र है जब एक प्रतिभावान खिलाड़ी लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर चुका होता है। इस उम्र के बाद तो उसके अंतर्राष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी बन पाने में काफी देर हो चुकी होती है। भारत की जूनियर टीम को विदेश यात्रा पर भेजना भी शुरू कर दिया गया है। इसके परिणाम भी सामने आना शुरू हो गये हैं।

इन्हीं राष्ट्रीय स्पर्धाओं ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित उन खिलाड़ियों को प्रोत्साहन एवं प्रतिस्पर्धा का अवसर दिया है जिसके कारण वे दूसरों से आगे निकल गये हैं। यदि ये स्पर्धाएं ही न होतीं तो वे फिर किन स्पर्धाओं में व किनके खिलाफ खेलकर आगे बढ़ते ? अतः उन्हें आगे बढ़ाने में इन राष्ट्रीय स्पर्धाओं व इनमें खेलने वाले उन खिलाड़ियों का महत्वपूर्ण योगदन है जो उनके साथ बराबरी से प्रतिस्पर्धा करते रहे।

राष्ट्रीय स्पर्धाओं के बारे में दो महत्वपूर्ण बातों पर समुचित ध्यान दिया जाना आवश्यक है। एक तो है विकेट जिन पर ये स्पर्धाएं खेली जाती हैं। या तो ये विकेट ऐसे सपाट व निर्जीव होते हैं जहां गेंदबाज के लिए विकेट ले पाना मुश्किल होता है या फिर ये इतने स्तरहीन व 'अंडरप्रिपेयर्ड' होते हैं जिन पर बल्लेबाज का टिक पाना मुश्किल हो जाता है। दोनों ही स्थितियां खतरनाक हैं। बेजान विकेट पर ढेरों रन बनाने वाले बल्लेबाजों एवं स्तरहीन या 'अंडरप्रिपेयर्ड' विकेट पर विकेट लेने वाले गेंदबाजों को अपनी क्षमता के बारे में गलतफहमी हो जाती है और वे सामान्य विकेट पर वैसा ही प्रदर्शन नहीं दोहरा पाते। नये क्रिकेट केंद्रों पर भी मैचों के अनापेक्षित परिणाम इसीलिए आते हैं क्योंकि वहां के विकेट स्तरहीन होते हैं। आखिर इन्हीं विकेट पर खेलकर खिलाड़ी भारतीय टीम में स्थान पाते हैं। अतः इस ओर विशेष ध्यान दिये जाने की जरूरत है। पांच-पांच दिन चलने वाले मैचों में दोनों टीमों की पहली पारी ही पूरी न हो या दोनों टीमों की दोनों पारियां तीन दिन में ही खत्म हो जायें तो ऐसे विकेट पर खेलकर अच्छे स्तर के खिलाड़ी भला कैसे तैयार होंगे ?

अब बोर्ड ने विकेट का स्तर सुधारने के लिए एक उच्चस्तरीय कमेटी बनायी है और न्यूजीलैंड के विकेट विशेषज्ञों की मदद भी ली जा रही है जिन्होंने प्रमुख स्थानों के विकेट की मिट्टी की जांच की है। यह प्रयोग कितना कारगर व सफल होगा कह पाना मुश्किल है। पर इमसें शक नहीं कि इस दिश में प्रयास किये जाने चाहिए। कोशिश की जाये तो हमारे देश के अनुभवी व विकेट बनाने वाले भी संतुलित विकेट बना सकते हैं। शर्त यही है कि मैच पूरे समय चलाकर अधिकाधिक धन जुटाने का अर्थतंत्र उन्हें ईमानदारी से अपना काम करने दे व उनके साथ संगठन पूरा सहयोग करे। दूसरी बात है महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुकाबलों में सितारा खिलाड़ियों की बढ़ती गैरमौजूदगी की। भले ही वे राष्ट्रीय टीम के लिए खेलने में व्यस्त हों, पर ऐसी व्यवस्था तो की ही जा सकती है कि सेमीफाइनल या फाइनल मुकाबले के लिए वे उपलब्ध हो पाएं। बोर्ड राष्ट्रीय स्पर्धाओं का कार्यक्रम तय करते वक्त इस ओर ध्यान दे सकता है। वरना इन खिलाड़ियों के अंतिम मुकाबलों में अपनी टीम के लिए न खेल पाने से उन टीमों का तो अहित होता ही है, राष्ट्रीय स्पर्धाओं का महत्व भी घटता है।

पिछले कुछ वर्षों से भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने क्रिकेट का 'मार्केटिंग' करके राष्ट्रीय स्पर्धाओं के लिए भी अच्छे प्रायोजक तलाशने का सराहनीय कार्य किया है। इस कारण राष्ट्रीय स्पर्धाओं में खेलने वाले खिलाड़ियों को दिये जाने वाले मानधन में भी वृद्धि हुई है और आयोजकों का घाटा भी कम हुआ है। वरना बड़े-बड़े क्रिकेट केंद्र राष्ट्रीय स्पर्धाएं ही क्या, टेस्ट मैच तक आयोजित करवाने से कतराने लगे थे। बढ़ते खर्च व घटती आय के कारण ऐसी स्थिति बन गयी थी। एक दिवसीय मैचों को छोड़कर कोई अन्य मैच कोई केंद्र करवाना ही नहीं चाहता था। अब ऐसी स्थिति है कि भले ही राष्ट्रीय स्पर्धाएं आय का साधन न बन पायी हों, वे अब घाटे का सौदा भी नहीं रह गयी हैं। ये सभी सुधार आजादी के बाद ही हो पाये हैं। वरना आजादी के पहले टीमों को साधारण श्रेणी में यात्रा करना पड़ती थी और जैसे-तैसे सस्ते से होटलों में ठहरना पड़ता था। यहां तक कि टेस्ट खेलने जाने वाले खिलाड़ी भी अपने परिचितों के यहां ठहरते थे या फिर आयोजक केंद्र उनके ठहरने की व्यवस्था अपने पदाधिकारियों के घरों में करता था क्योंकि तब पांच सितारा होटलों के ठहरने व चार्टेड प्लेन से यात्रा करने का चलन नहीं था। इस परिवर्तन के लाने में बोर्ड अधिकारियों की सूझबूझ का तो हाथ है ही खिलाड़ियों द्वारा खेल को लोकप्रिय बनाने का भी उतना ही हाथ है। आखिर हजारों दर्शक खिलाड़ियों व उनका खेल देखने ही तो स्टेडियम में आते हैं और प्रायोजक भी उनकी लोकप्रियता को देखकर ही इतना धन खर्च करते हैं।

15

खिलाड़ियों के तौर-तरीके व खेल स्वभाव में आया बदलाव

स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले तक भारत में क्रिकेट केवल राजघरानों, राजे रजवाड़ों, नवाबों एवं रईसों तक ही सीमित रहा। सिर्फ वे ही लोग क्रिकेट खेलते व क्रिकेट में दिलचस्पी लेते थे जो अंग्रेज लाट साहबों के करीब आना चाहते थे और उन्हें खुश करना चाहते थे। इन लोगों में या तो राजा, महाराजा व नवाब थे या फिर वे लोग जो क्रिकेट की बदौलत राजघरानों व रियासतों में नौकरी पाना चाहते थे। उदाहरण के लिए, आप राजे-रजवाड़ों में पटियाला के महाराज, वडोदरा के महाराज गायकवाड़, पटौदी के नवाब, अमरसिंह, महाराज कुमार विजयनगरम, नवानगर के महाराज और इंदौर के होल्कर्स को शरीक कर सकते हैं। यशवंत राव होल्कर क्रिकेट खेलकर अंग्रेजों का सान्निध्य तो नहीं पाना चाहते थे मगर यह जरूर चाहते थे कि उनकी टीम रणजी ट्राफी विजेता हो और उसकी ख्याति देश की एक ताकतवर टीम के रूप में हो। मुश्ताक अली तो बेहिचक स्वीकार भी करते हैं कि यदि वे क्रिकेट खिलाड़ी न होते तो कहीं छोटी-मोटी नौकरी कर रहे होते। विजय मर्चेंट, उदय मर्चेंट व पालिया जैसे कुछ रईस लोग भी थे जो महज अपने दिली शौक के कारण क्रिकेट खेलते थे। इस तरह आजादी के पहले भारत में क्रिकेट राजघरानों व रियासतों में नौकरी तलाशने वालों और धनाढ्य परिवारों की चारदीवारी में ही रहा।

आजादी के पहले क्रिकेट सिर्फ मनोरंजन और खेल से मिलने वाले आनंद के लिए खेला जाता था। खिलाड़ी भी खेलने का लुत्फ उठाते थे। तब आज जैसी कड़ी प्रतिस्पर्धा और व्यवसायिक प्रतिद्वंद्विता नहीं थी। क्रिकेट सही अर्थों में भद्रपुरुषों का खेल था। गेंदबाज या तो विकेट लेने की कोशिश करता था या फिर बाउंड्री लगने पर बल्लेबाज की तारीफ में खुद भी तालियां बजाता था। सी.के. नायडू को लोग

आजाद भारत के पहले का ही नहीं भारत का अब तक का श्रेष्ठ कप्तान मानते हैं और सी.के. नायडू की क्रिकेट सोच इतनी सकारात्मक थी कि वह 3 स्लिप और 3 गली रखकर गेंदबाज से गेंदबाजी करवाते थे। 'डीप थर्ड मैन' पर वह किसी क्षेत्र रक्षक को तैनात ही नहीं करते थे क्योंकि वह मानते थे कि गेंदबाज को ऐसी घटिया गेंद ही क्यों डालनी चाहिये कि बल्लेबाज उसे 'थर्ड मैन' की दिशा में 'कट' करने की हिम्मत करे। रन बचाने का चलन तब था ही नहीं।

आजादी के बाद क्रिकेट राजमहलों के तंग गलियारे से बराबर निकलकर आम आदमी के आंगन तक आ पहुंचा। लेकिन ऐसा हो पाने में करीब चार दशक लगे। रियासतों के विलीनीकरण के पहले 1947 के आसपास से ही मध्यवर्गीय परिवार के खिलाड़ी टीम में स्थान पाने लगे थे। कर्नल नायडू, लाला अमरनाथ व विजय हजारे आजादी के पहले भी खेले व बाद में भी। ये सामान्य परिवारों के ही थे और अपनी महान उपलब्धियों एवं साहसिक मैदानी प्रदर्शन के कारण प्रसिद्ध हुए। इन सबका जन्म मध्यवर्गीय परिवारों में ही हुआ था। क्रिकेट की राज दरबारों के तंग गलियारे से बाहर निकलने की प्रक्रिया चालीस के दशक के उत्तरार्ध में ही शुरू हो गयी थी। वरना आजादी के पहले तो यह आलम था कि 1932 से 1946 तक हर विदेशी दौरे में राजघराने के लोगों को ही कप्तान बनाया जाता रहा। 1932 में पहले तो महाराजा पटियाला को कप्तान बनाया गया पर उनके इनकार करने पर राणा साहब पोरबंदर कप्तान बने। 1936 में महाराज कुमार विजयनगरम को कप्तान बनाया गया और 1946 के दौरे में सीनियर पटौदी को कप्तान नियुक्त किया गया। तब किसी सामान्य वर्ग के व्यक्ति के बारे में तो सोचा ही नहीं गया। सी.के. नायडू, लाला अमरनाथ, विजय मर्चेंट जैसे प्रतिभावान व उच्चकोटि के खिलाड़ियों के उपलब्ध होते हुए भी कप्तानी का चक्र सिर्फ राजघरानों के इर्द-गिर्द ही घूमता रहा। ऐसे लोगों को कप्तान या उप-कप्तान नियुक्त किया जाता रहा जो टीम में लिये जाने लायक भी नहीं थे। इन सभी में केवल सीनियर पटौदी ही क्रिकेट की कसौटी पर खरे उतरते थे। अन्य लोग तो टीम में स्थान पाने योग्य भी नहीं थे। घरेलू शृंखलाओं में जरूर कर्नल नायडू को कप्तान बनाया जाता रहा। पर जब भी किसी विदेशी दौरे का मौका आया, उनके बारे में कभी सोचा तक नहीं गया। लाला अमरनाथ व मर्चेंट का भी ख्याल नहीं किया गया। तब इन तीनों से बेहतर स्तर का खिलाड़ी कोई था ही नहीं। पर विदेशी दौरों के समय चयनकर्ताओं की निगाह केवल राजघरानों की ओर की गयी। इस नीति में परिवर्तन आजादी के बाद ही हुआ। 1947 में जब भारत की टीम पहली बार आस्ट्रेलिया के दौरे पर जाने वाली थी तब सीनियर पटौदी तो प्रारंभ में ही बीमारी की वजह से जा पाने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर चुके थे। अतः विजय मर्चेंट को टीम का कप्तान बनाया गया और जब उन्होंने भी घायल होने के कारण जाने में अपनी असमर्थता व्यक्त की तब टीम के उप-कप्तान लाला अमरनाथ

को टीम का कप्तान नियुक्त किया गया। बहुत मुमकिन है कि यदि पटौदी बीमार न होते और यदि वह चयन मैचों में खेले होते तो शायद उन्हें ही कप्तान बनाया जाता। पटौदी बेशक क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ी व जानकार थे। मगर चूंकि वह अपना सारा क्रिकेट इंग्लैंड में ही खेले थे, अतः उन्हें भारतीय खिलाड़ियों के बारे में जानकारी ही नहीं थी। यही कारण है कि वह 1946 के इंग्लैंड दौरे में वांछित रूप से सफल नहीं हो पाये। 1947-48 के दौरे में लाला अमरनाथ का कप्तान बनाया जाना बड़े परिवर्तन का संकेत था। यह पहला मौका था जब भारतीय टीम के विदेशी दौरे में कोई सामान्य व्यक्ति टीम की कप्तानी कर रहा था। मगर अभी भी टीम के दो खिलाड़ियों रणवीर सिंहजी और रायसिंह का चयन संदेह व आलोचना का कारण बना। बेहतर खिलाड़ी उपलब्ध थे पर फिर भी इन दो ऐसे स्तर के खिलाड़ियों को टीम में लिया गया था जो क्लब स्तर के खिलाड़ी थे। इन्हें छोड़कर शेष टीम का चुनाव गुण-दोष के आधार पर ही किया गया था और सभी खिलाड़ी सामान्य मध्यवर्गीय परिवारों के थे। सी.के. नायडू व मुश्ताक अली की तरह सी.एस. नायडू व सी.टी. सर्वटे होल्कर महाराज के निजी स्टाफ में थे और विजय हजारे को भी क्रिकेट के कारण देवास महाराज विक्रमसिंह पंवार के निजी स्टाफ में नौकरी मिली थी। हजारे के पिता एक स्कूल शिक्षक थे। बाद में हजारे देवास छोड़कर वडोदरा महाराज के निजी स्टाफ में चले गये। वीनू मनकड़, फड़कर, अधिकारी, गुल मोहम्मद, रंगाचारी व रांगणेकर भी मध्यवर्गीय परिवारों के सदस्य थे। दरअसल यह आस्ट्रेलिया जाने वाले पहली भारतीय टीम तो थी ही, आजाद भारत की भी पहली टीम थी और ऐसी पहली क्रिकेट टीम थी जिसमें सभी प्रमुख खिलाड़ी सामान्य व मध्यवर्गीय परिवारों के थे। यदि मर्चेंट जाते तो वह जरूर एकमात्र रईस व व्यवसायी परिवार के सदस्य होते। पर वह गये नहीं। अतः यह आम आदमियों की भारतीय टीम थी जो आजादी के बाद अपने-अपने पहले विदेश दौरे पर गयी।

जो क्रिकेट खिलाड़ी चालीस व पचास के दशक में क्रिकेट खेलने की खूबी के कारण राजघरानों में नौकरी पाने में कामयाब हुए वे नौकरी तो नाममात्र के लिए ही करते थे। उनका प्रमुख काम क्रिकेट खेलना था। मैच के पहले रोज अभ्यास करना, चुस्त दुरुस्त बने रहना व मैच में अच्छा प्रदर्शन करके यथासंभव अपनी टीम को जिताने का प्रयास करना। राजघराने में नौकरी मिलना उनका क्रिकेट खेलने का मुआवजा था। आप उन्हें व्यावसायिक खिलाड़ी नहीं कह सकते क्योंकि न तो तब क्रिकेट में व्यावसायिकता आ पायी थी और न ही क्रिकेट उनकी रोजी-रोटी थी। उनकी रोजी-रोटी का जरिया तो वह नौकरी थी जो उन्हें उनकी क्रिकेट खेलने की प्रतिभा के कारण राजघराने में मिली थी। वे अच्छा प्रदर्शन करने की कोशिश तो जरूर करते थे, पर खेल उनका शौक था, व्यवसाय या रोजी-रोटी नहीं। लाला अमरनाथ, विजय हजारे, सी.एस. नायडू, मुश्ताक अली, वीनू मनकड़, अधिकारी, सर्वटे, किशन

चंद, गुल मोहम्मद व अमीर इलाही ऐसे प्रतिभावान खिलाड़ियों में प्रमुख थे जिन्हें क्रिकेट के कारण राजाश्रय प्राप्त हुआ। तब तक खेल को आजीविका का जरिया बनाने तथा उसे रोजी-रोटी से जोड़ने की व्यावसायिक प्रवृत्ति की शुरुआत नहीं हुई थी।

पॉली उमरीगर, रामचंद, चंदू बोर्डे, सुभाष गुप्ते, पी. सेन, गुलाम अहमद, विजय मांजरेकर और नॅरी कंट्रेक्टर भी सामान्य व मध्यवर्गीय परिवारों के सदस्य थे जो बाद के वर्षो में भारतीय टीम में खेले। इनके उभरकर सामने आने एवं स्थापित होते-होते राजशाही समाप्ति के कगार पर थी। तब तक टीम चयन के तौर-तरीके एवं चयनकर्ताओं की मानसिकता में भी परिवर्तन आ गया था। अब माना जाने लगा था कि चयन का आधार खेल प्रतिभा होना चाहिए, पारिवारिक संपन्नता नहीं। खिलाड़ी इतने अच्छे स्तर का हो कि पहले तो एक खिलाड़ी के बतौर टीम में स्थान पाने के काबिल हो और फिर देखा जाये कि उसमें वाकई नेतृत्व के गुण हैं कि नहीं। यदि उसमें नेतृत्व करने की क्षमता हो तभी उसे टीम का कप्तान बनाया जाये। पहले सिर्फ राजघराने में पैदा होने या उससे संबंधित होने के कारण किसी को भी कप्तान बना दिया जाता था—भले ही वह एक खिलाड़ी के रूप में टीम में जगह पाने के भी काबिल न हो। अब क्रिकेट के गुण-दोषों पर ध्यान दिया जाने लगा था। इस संबंध में सीनियर पटौदी के पुत्र मंसूर अली खां पटौदी का उदाहरण गौरतलब है। यह सच है कि टाइगर पटौदी की पैदाइश नवाबी खानदान की थी। वह ऑक्सफोर्ड में पढ़े व वहीं अपना प्रारंभिक क्रिकेट खेले। लेकिन 1959-60 में जब रिची बेनो के नेतृत्व में आस्ट्रेलियाई टीम भारत के दौरे पर आयी तब टाइगर पटौदी की अच्छी ख्याति एवं छवि के बावजूद भारतीय चयन समिति ने उन्हें टीम में नहीं लिया। जब वह भारत आये तब वह अच्छे फॉर्म में नहीं थे। तब किसी ने इस बात की परवाह नहीं की कि वह शाही परिवार के हैं और इंग्लैंड में क्रिकेट खेलते रहे हैं। तब यही सोचा गया कि वह अभी कम उम्र के हैं तथा कुछ और मैचों में उनका खेल देखा जाना चाहिए। और इसी चयन समिति ने 1962 में वेस्टइंडीज जाने वाली भारतीय टीम में उन्हें न सिर्फ लिया बल्कि उन्हें टीम का उप-कप्तान भी बनाया। अर्थात जब टाइगर पटौदी भारतीय टीम में लिए गये तब वह एक अच्छे खिलाड़ी के रूप में ही लिए गये। नवाबी परिवार के होने के कारण ही उनका चुनाव नहीं हुआ। यह संयोग ही था कि अपने योग्य पिता की ही तरह वह शाही खानदान के भी थे और उच्च स्तरीय खिलाड़ी भी। इस दोहरे गुण ने सोने में सुहागा का काम किया। कंट्रेक्टर के घायल हो जाने पर टाइगर पटौदी ने टीम की कप्तानी भी की। तब वह सिर्फ 29 वर्ष के थे और उन्हें भारत का सबसे कम उम्र टेस्ट कप्तान होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पटौदी के खेल कौशल व उनकी क्रिकेट समझ पर चयनकर्ताओं ने भरोसा

किया और माना कि कम उम्र में भी वह मौका पड़ने पर भारतीय टीम का नेतृत्व करने में सक्षम हैं—और पटौदी चयनकर्ताओं के इस विश्वास पर खरे उतरे। उन्हें चयनकर्ताओं ने टीम में लिए जाने के काबिल समझा व इसके बाद इस बारे में सोचा गया कि उनमें इतनी कम उम्र में भी वक्त पड़ने पर टीम का नेतृत्व करने की योग्यता है कि नहीं। 1932-36 में तो जो टीम में लिए ही नहीं जा सकते थे ऐसे लोगों को कप्तान बनाकर टीम में ले लिया गया था। टाइगर पटौदी का मामला इससे उल्टा था। उन्हें एक प्रतिभावान खिलाड़ी होने के नाते टीम में चुना गया था। वह 29 वर्ष के होते हुए भी उप-कप्तान व कप्तानी के काबिल भी समझे गये थे व उनका नवाबी खानदान का होना महज एक संयोग था। इतिहास गवाह है कि वह एक आक्रामक एवं साहसी बल्लेबाज के रूप में मध्यक्रम पर जाकर अनेक यादगार पारियां खेले तथा 'एक्स्ट्रा कवर' के बेजोड़ क्षेत्ररक्षक के रूप में उन्होंने हमेशा प्रभावित किया व साथ ही एक कल्पनाशील कप्तान के रूप में समूचे क्रिकेट जगत में सराहे गये। विशेष बात यह है कि इंग्लैंड में ही वह एक दुर्घटना में अपनी एक आंख खो बैठे थे और इसके बावजूद वह इतना अच्छा क्रिकेट खेले जो उनकी अभूतपूर्व क्रिकेट प्रतिभा का ही प्रमाण है। टाइगर पटौदी के बाद यदि किसी राजघराने से संबंधित कोई खिलाड़ी भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट खेला तो उनमें यादगार प्रदर्शन के लिए बस एक ही नाम सामने आता है और वह है यजुर्वेन्द्र सिंह का। वह इंग्लैंड के खिलाफ 3 व आस्ट्रेलिया के खिलाफ 1—इस तरह कुल 4 टेस्ट खेले और उन्हें एक टेस्ट में 7 कैच लेकर ग्रेग चैपल के कीर्तिमान की तथा एक पारी में 5 कैच लेकर रिचर्डसन के कीर्तिमान की बराबरी के लिए याद किया जाता रहेगा।

धीरे-धीरे एक और परिवर्तन भी सामने आया। 70 के दशक के आसपास भारतीय क्रिकेट ऐसे मुकाम पर आ गया था जब पढ़े-लिखे व अच्छा अकादमिक रिकॉर्ड वाले लोग अकादमिक रिकॉर्ड व क्रिकेट प्रतिभा के मिले-जुले प्रभाव से शासन या निजी क्षेत्र में अच्छी व आकर्षक नौकरी पाने लगे थे। कुछ ऐसे भी थे जिन्हें केवल उनकी असाधारण खेल प्रतिभा के आधार पर कहीं न कहीं अच्छी नौकरी मिलने लगी थी। अजीत वाडेकर, हनुमंत सिंह, बिशन सिंह बेदी व विश्वनाथ बैंक अधिकारी बन गये। उधर प्रसन्ना, वेंकटराघवन व श्रीकांत इंजीनियर बने। एअर इंडिया, इंडियन एयरलाइंस, रेलवे, स्टेट बैंक एवं अनेक केंद्रीय व राज्य निगम अथवा सरकारें अपने-अपने खेल कोटे के तहत खिलाड़ियों को नौकरी देने लगीं। धीरे-धीरे क्रिकेट भारत के सभी भागों में फैलता गया तथा हर वर्ग व प्रांत के लोग इसमें दिलचस्पी लेने लगे। क्रिकेट को जनमानस तक तथा शहरों से लेकर गांवों तक एवं पढ़े-लिखे लोगों से लेकर अनपढ़ों तक व अमीरों से लेकर गरीबों तक पहुंचाने में हिंदी क्रिकेट कमेंट्री का बहुत बड़ा हाथ है। आज आप दफ्तर में बैठे अधिकारी से लेकर बाबू व चपरासी तक, रिक्शा चालक से लेकर चाय वाले तक, सब्जी बेचने वाले से लेकर

स्कूल व कालेज में पढ़ने वालों तक, मंत्री से लेकर संतरी तक एवं एयरकंडीशंड कमरे में बैठे धनवान व्यक्ति से लेकर गांव में हल चलाने वाले किसान तक को अपनी-अपनी हैसियत व सुविधानुसार मैच का आंखों देखा हाल सुनते या टेलीविजन पर देखते हुए पा सकते हैं। ऐसी दीवानगी किसी अन्य खेल के प्रति नजर नहीं आती। तभी तो अन्य खेल संगठन व खिलाड़ी क्रिकेट को जरूरत से ज्यादा महत्व दिये जाने की शिकायत करते पाये जाते हैं पर क्रिकेट के चाहने वाले ही जब इतने ज्यादा हों तो इस तरह का शिकवा-शिकायत बेमानी है।

आप देखेंगे कि विजय हजारे के बाद पीढ़ी-दर-पीढ़ी मध्यवर्गीय बल्कि निम्न मध्यवर्गीय परिवार के लोग क्रिकेट के प्रति आकर्षित होते गये और भारतीय टीम में स्थान पाते गये। वाडेकर, बेदी, प्रसन्ना, चंद्रशेखर, गावसकर, विश्वनाथ, मोहिंदर अमरनाथ, कपिल देव, रवि शास्त्री, वेंगसरकर, किरमानी, अजहरुद्दीन और तेंदुलकर इस कड़ी में महत्वपूर्ण नाम हैं। इन सभी ने इस सच्चाई को पुनर्स्थापित किया है कि भारत में क्रिकेट सही अर्थो में साधारण, मध्यवर्गीय और निम्न आय वर्ग के लोगों का ही खेल है। इस वर्ग के लोग ही क्रिकेट अधिक खेलते हैं। एकनाथ सोलकर, करसन घावरी और विनोद कांबली इन खिलाड़ियों से भी निचले बल्कि दलित व पिछड़े वर्ग के हैं। यह सच है कि आज कपिल, गावसकर, बेदी, विश्वनाथ, तेंदुलकर व अजहर के पास काफी पैसा है। इन सभी ने अपनी अलौकिक खेल प्रतिभा तथा लोकप्रियता द्वारा बेशुमार धन इकट्ठा कर लिया है। इनमें से कुछ तो करोड़पति हैं। सचिन तेंदुलकर ने तो विज्ञापन द्वारा धन प्राप्ति के मामले में गावसकर ही नहीं, विश्व के अन्य खिलाड़ियों को भी पीछे छोड़ दिया है। पर उनके पिता शिक्षक हैं व मां भी कामकाजी महिला हैं। खेल, विज्ञापन व मॉडलिंग के जरिये अथवा लेखन या कमेंट्री के माध्यम से आज इनमें से अधिकांश खिलाड़ी, धन, नाम व प्रचार पा रहे हैं, पर पैदाइश तो इन सभी की साधारण, मध्यम या निचले मध्यम वर्ग की ही है। पैदा तो ये साधारण परिवार में ही हुए व बाद में अमीर हो गये। यह सब तो उनकी प्रतिभा, लोकप्रियता, मेहनत व भाग्य का मिला-जुला प्रतिफल है। आज आपको वर्तमान भारतीय टीम में धनाढ्य या संपन्न परिवार का खिलाड़ी ढूंढ़ने से भी नहीं मिलेगा। उच्च स्तरीय क्रिकेट खेलने के लिए जिस कड़ी मेहनत, अनुशासन, प्रतिबद्धता व शारीरिक सक्षमता की आवश्यकता है वह संपन्न परिवार के युवकों में अपवाद स्वरूप ही देखने को मिलेगी। क्रिकेट के खिलाफ किया जाता रहा यह प्रचार गलत व भ्रामक है कि क्रिकेट केवल रईस लोगों का खेल है तथा सिर्फ संपन्न परिवार के युवक ही इसे खेलते हैं। यह सच है कि क्रिकेट उपकरण धीरे-धीरे महंगे होते जा रहे हैं; आज साधारण स्तर की गेंद सौ-सवा सौ रुपये में व साधारण स्तर का बल्ला चार या पांच सौ रुपये से कम में नहीं आता। टेस्ट स्तर के खिलाड़ी जिस 'एक्स्ट्रा' पॉवर बल्ले से खेलते हैं उसकी कीमत चार या पांच हजार रुपये है। शायद

इन महंगे खेल उपकरणों के कारण यह भ्रम फैलता है कि यह रईसों का खेल है, जो सरासर गलत है। आप यह कह सकते हैं कि यह महंगे खेल उपकरणों से खेला जाने वाला खेल है। मगर इसे धनवानों का खेल भला कैसे कहा जा सकता है जब धनवान युवक अपवाद स्वरूप भी टेस्ट टीम में खेलते नजर नहीं आते। वर्तमान भारतीय टीम का एक भी सदस्य ऐसा नहीं है जिसे संपन्न परिवार का कहा जा सकता हो। सभी की पैदाइश गरीब या साधारण परिवारों की है। कीमती उपकरणों से खेलने व खेलकर धन कमा लेने के कारण भला इस खेल को धनवानों का खेल कैसे माना जा सकता है ? ये महंगे उपकरण भी ज्यादातर तो इन्हें बनाने वाली कंपनियां खिलाड़ियों को उपहार स्वरूप या विज्ञापन के लिए दे देती हैं या फिर किसी प्रायोजक के माध्यम से ये खिलाड़ियों को प्राप्त हो जाते हैं। आप एक भी ऐसा धनाढ्य या संपन्न घर अथवा परिवार नहीं बता सकते जिसमें सुनील गावसकर, कपिल देव या सचिन तेंदुलकर जैसा प्रतिभावान खिलाड़ी पैदा हुआ हो। फिर भला क्रिकेट रईसों का खेल कैसे हो गया ?

शीर्ष पर पहुंचने के लिए उच्च स्तरीय एकाग्रता, इच्छाशक्ति, मनोबल और परिश्रम की जरूरत होती है। गावसकर, कपिल, अजहर या तेंदुलकर कोई ऐसे ही नहीं बन जाता। मन को मारना पड़ता है, खुद को शारीरिक रूप से चुस्त-दुरुस्त रखना पड़ता है, खाने-पीने में परहेज करना होता है, रोज-दर-रोज अच्छे से अच्छा प्रदर्शन करने के लिए कटिबद्ध रहना होता है तथा आत्मसंतोष अथवा आत्ममुग्धि के मोह को त्यागना होता है। अपने श्रेष्ठ खेल के दिनों में मैच के दौरान गावसकर व कपिल सदा परहेजी खाना खाते थे। लंच में गावसकर सूप लेते थे व कपिल दही। शाम को भी गावसकर एक चपाती, सब्जी व सलाद के अलावा और कुछ नहीं लेते थे। ऐसा समर्पण व त्याग संपन्न परिवार में पैदा हुए युवकों में यदा-कदा ही देखने को मिलेगा। सुख, सुविधा तथा ऐशो-आराम आदमी को शारीरिक रूप से इतना आरामतलब बना देता है कि वह खेल में चोटी पर पहुंचने लायक ही नहीं रह जाता। यह एक कड़वा सच है कि संघर्ष, मेहनत और सफल होने की जिद व तलब जितनी तंगी व अभाव में पनपती है उतनी सहजता से आसानी से उपलब्ध साधनों में नहीं पनप पाती। संघर्ष व अभाव की अग्नि में तपकर ही प्रतिभा रूपी सोना निखरकर कंचन बनता है। यदि बारीकी से अध्ययन किया जाये तो ज्ञात होगा कि हर खिलाड़ी के खेल में उसका चरित्र, स्वभाव, परिवेश, खान-पान एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि की अहम भूमिका होती है। इसी कारण किसी जगह के खिलाड़ी अधिक आक्रामक एवं प्रतिस्पर्धी को तहत-नहस .रने के उद्देश्य से खेलते हैं तो किसी जगह के खिलाड़ी अपेक्षाकृत शांत, संयमित, संतोषी एवं योजनाबद्ध तरीके से खेलने वाले होते हैं। भारत में उत्तर व पश्चिम के अधिकांश खिलाड़ियों के खेल में यह फर्क आसानी से देखा जा सकता हैं। यद्यपि अपवाद हर जगह व हर चीज के होते हैं और आजादी

के बाद इस विभाजन रेखा को मिटते हुए आसानी से देखा जा सकता है। आजादी के पहले अमरनाथ, अमरसिंह, निसार जैसे उत्तर भारत के खिलाड़ी आक्रामक स्वभाव के थे व मर्चेंट, हजारे और मांजरेकर जैसे पश्चिम भारत के खिलाड़ी शांत व संतुलित स्वभाव से खेलते थे। पर आजादी के बाद दोनों ही भागों के खिलाड़ियों के खेल में मिला-जुला असर देखा जा सकता है। पश्चिम भारत के संदीप पाटिल, सचिन तेंदुलकर व विनोद कांबली की खेल शैली में वही विस्फोटक अंदाज नजर आता है जो कभी निसार, अमरसिंह, अमरनाथ, कपिल देव, सी.के. नायडू व मुश्ताक अली के खेल की विशेषता मानी जाती थी। आजादी के बाद उत्तर भारत में ही मोहिंदर अमरनाथ, अशोक मल्होत्रा व हरी गिडवानी जैसे सुनील गावसकर की तरह तकनीकबद्ध शैली से खेलने वाले खिलाड़ी हुए। यह सब एक दूसरे को खेलते हुए देखने, प्रशिक्षण पर जोर देने व अपनी निजी पंसद के खिलाड़ी का उदाहरण सामने रखकर खेलने का ही असर था कि खिलाड़ियों की खेल शैली में ऐसा बदलाव आता गया।

विजय हजारे व मुश्ताक अली बताते हैं कि किस तरह उन्हें व उनके साथियों को साधारण दर्जे में यात्रा करनी पड़ती थी व इस या उस व्यक्ति के घर पर ठहरना पड़ता था और वह भी तब जब वे टेस्ट खेलने जाते थे। प्रति टेस्ट उन्हें सवा सौ रुपये मिलते थे और वे भी कभी-कभी रेजगारी के रूप में। आज जैसे अति आधुनिक खेल उपकरण भी तब नहीं थे। आजादी के बाद खिलाड़ियों को मिलने वाली सुविधाओं में भी इजाफा हुआ। पहले खिलाड़ी बोर्ड के रहमो-करम पर निर्भर रहते थे। आजादी के बाद खिलाड़ियों ने भी अपना महत्व जाना व उनके व बोर्ड के संबंध बराबरी के एवं सम्मानजनक बने। उनमें एकता बढ़ी और उन्हें अपने अधिकारों का एहसास भी हुआ। वे अधिक सुविधाओं एवं पारिश्रमिक की मांग करने लगे। क्रिकेट की लोकप्रियता तो दिनों दिन बढ़ ही रही थी। टेलीविजन से होने वाले मैच के सीधे प्रसारण ने उसे और लोकप्रिय बना दिया। बड़े शहरों के अलावा कस्बों तक में मैच खेले जाने लगे। मुझे याद है कि 1950-52 तक इंदौर में रणजी ट्राफी मैच असीम उत्साह व उत्सव भरे वातावरण में खेला जाता था। आज रणजी ट्राफी या दिलीप ट्राफी मैच देखने गिने-चुने दर्शक ही आते हैं क्योंकि एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच अब इंदौर में भी होने लगे हैं। अतः दर्शक उन मैचों में टूट पड़ते हैं। अब क्रिकेट पर इतनी अधिक जानकारी उपलब्ध हो जाती है कि उसे प्राप्त करके कभी न खेले हुए लोग भी खेल के तकनीकी पक्ष पर अधिकारपूर्वक अपनी राय देते हैं। वे बड़ी शान से अधिकारपूर्वक बताते मिलेंगे कि जो हुआ वह क्यों हुआ और जो नहीं हुआ वह क्यों नहीं हुआ। कारण यही है कि क्रिकेट पर बतियाना प्रतिष्ठासूचक माना जाने लगा है और इसमें कुछ हर्ज भी नहीं है। ऐसा भारत ही नहीं वेस्टइंडीज, दक्षिण अफ्रीका व पाकिस्तान एवं शारजाह में भी होता है। जहां तक भारत का सवाल है विगत 30 वर्षों से भारत का प्रदर्शन भी अच्छा रहा है व उसके खिलाड़ियों ने विश्व

कीर्तिमान स्थापित किये हैं तथा उनकी अंतर्राष्ट्रीय साख भी अच्छी है। इन बातों ने उसकी लोकप्रियता बढ़ाने में सोने पर सुहागा जैसा काम किया है। जितनी बड़ी संख्या में कलकत्ता के ईडन गार्डन में लोग क्रिकेट देखने आते हैं उतने विश्व के बहुत कम क्रिकेट केंद्रों पर देखे जाते हैं। जब भारत न खेल रहा हो तब भी एक लाख से अधिक दर्शकों का मैच देखने आना व इतने ही दर्शकों का प्रवेश की जुगाड़ में लगे रहना भारत में ही संभव है। ऐसा जोश, उत्साह व जिज्ञासा भला और कहां देखी जा सकती है ? यह इसीलिए हो पाया है क्योंकि टीम अनेक अंतर्राष्ट्रीय सफलताएं प्राप्त करती रही है। टीम जब अच्छा खेले तो अखबारों में भी रिपोर्टिंग अच्छी होती है व प्रायोजक भी आकर्षित होते हैं। एक जमाना था जब भी धर्मयुग का क्रिकेट अंक निकलता था तो उसकी बिक्री दुगनी हो जाया करती थी। खासकर 80 के दशक में ऐसा अनेक बार हुआ।

यह सच है कि यह एक विदेशी खेल है तथा इसकी शुरुआत उन्हीं देशों में हुई जहां अंग्रेजों का राज था। पर जिस तेजी से यह खेल अब अन्य देशों द्वारा खेला जाने लगा है वह उसकी बढ़ती लोकप्रियता का प्रमाण है। देश, संप्रदाय, धर्म एवं राजनीतिक विचारधाराओं को लांघकर यह खेल शारजाह, कनाडा, अमेरिका, यहां तक कि रूस व चीन में भी पहुंच गया है। खेल कब किसी की बपौती रहा है ? आज यह स्थिति है कि अंग्रेजों के इस खेल में वेस्टइंडीज, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, पाकिस्तान एवं भारत ने इंग्लैंड से ज्यादा तरक्की कर ली है। जिस खूबी से श्रीलंका, वेस्टइंडीज, भारत व पाकिस्तान जैसे अभावग्रस्त एवं विकासशील देशों के मध्यमवर्गीय परिवारों के लोगों ने इसे अपनाया है यह इस खेल की उत्तरोत्तर प्रगति दर्शाने के लिए पर्याप्त है। आज भारत ही नहीं विश्व के 95 प्रतिशत महान क्रिकेट खिलाड़ी वे ही हैं जिनका जन्म साधारण, मध्यवर्गीय या गरीब परिवारों में हुआ—फिर भले ही वे इयान बॉथम हों या विव रिचर्ड्स।

जिस देश ने भारत पर करीब दो सौ वर्षों तक शासन किया तथा देश व देशवासियों का शोषण किया उसी इंग्लैंड की टीम को क्रिकेट मैदान पर मात देने में भारतीय खिलाड़ियों को ही नहीं, दर्शकों को भी कितना संतोष मिलता होगा ! जब हमारे स्पिनर भारत के घुमावदार विकेट पर इंग्लैंड के हजारों टेस्ट रन बनाने वाले बल्लेबाजों को अपनी जादुई स्पिन कला से नचाते, परेशान करते व आउट करते हैं व उन्हें नौसिखिया साबित करते हैं और जिस खूबी से भारत के सफल बल्लेबाजों यथा विजय हजारे, सुनील गावसकर, विश्वनाथ, मोहिंदर अमरनाथ, वेंगसरकर, अजहरुद्दीन, कपिल देव व सचिन तेंदुलकर इंग्लैंड के तेज गेंदबाजों की भारत के धीमे विकेट पर ही नहीं इंग्लैंड के 'मूवमेंट' वाले विकेट पर धुनाई करते रहे हैं उसे देखकर भारतीयों के प्रतिशोध की आंच कुछ तो ठंडी होती ही है। जब भारत की टीम इंग्लैंड की टीम की तुलना में खेल के हर विभाग में बेहतर साबित होती है तो हम सभी को

वह राष्ट्रीय गौरव का क्षण प्रतीत होता है। जिसके हाथों हम बरसों कुटते-पिटते रहे उसे क्रिकेट मैदान में उसी के राष्ट्रीय खेल में पीटकर यदि हमें राहत महसूस होती है व आनंद आता है तो उसमें अनुचित क्या है ? यदि इंग्लैंड को क्रिकेट में हराकर अतीत के शोषण व अन्याय का आंशिक बदला लिया जाये तो बदले का इससे बेहतर व शालीन तरीका भला क्या होगा ?

1987-88 से लेकर 1998 तक विगत दस वर्षो में भारत ने घरेलू शृंखला या तो जीती है या फिर वह बराबर रही है। इस बीच वह किसी घरेलू शृंखला में पराजित नहीं हुआ है। पिछली घरेलू शृंखला वह 1986-87 में पाकिस्तान से हारा था। इस दौरान दस वर्षो में भारत वेस्टइंडीज, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका व न्यूजीलैंड से 2-2 तथा इंग्लैंड, जिम्बाब्वे व दक्षिण अफ्रीका से 1-1 घरेलू शृंखला खेल चुका है। यह उपलब्धि गर्व करने लायक है। मार्च-अप्रैल 1998 तक भारत कुल 318 टेस्ट खेला है जिसमें से वह 59 में जीता है, 103 में हारा है, 155 ड्रा रहे हैं व एक टाई हुआ है। खिलाड़ियों के अधिक व्यावसायिक एवं वैज्ञानिक तरीके से खेलने एवं टीम भावना बनाये रखने के कारण ही भारत को यह सफलता मिली है। इन दस वर्षो में दिलीप वेंगसरकर, रवि शास्त्री, श्रीकांत, अजहरुद्दीन व सचिन तेंदुलकर इन 5 खिलाड़ियों ने भारतीय टीम का नेतृत्व किया है और ये सभी साधारण मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुए हैं।